छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **तृतीय सत्र**

बुधवार, दिनांक 02 अक्टूबर, 2019

(आश्विन 10, शक सम्वत् 1941)

[अंक 01]

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	डॉ. चरणदास महंत
सचिव	श्री चन्द्रशेखर गंगराड़े

सभापति तालिका

1. श्री सत्यनारायण शर्मा
2. श्री धनेंद्र साहू
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह
4. श्री मनोज सिंह मण्डावी
5. श्री शिवरतन शर्मा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

सुश्री अनुसुईया उइके

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री	पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)
03.	श्री ताम्रध्वज साहू, मंत्री	लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
04.	श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री	संसदीय कार्य, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
05.	डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री	स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता
06.	श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री	परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि एवं विधायी कार्य
07.	श्री कवासी लखमा, मंत्री	वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग
08.	डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री	नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम
09.	श्री अमरजीत भगत, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति
10.	श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर (पंजीयन एवं मुद्रांक)
12.	श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग
13.	श्री उमेश पटेल, मंत्री	उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची
(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
02.	अमरजीत भगत	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
03.	अरूण वोरा	64-दुर्ग शहर
04.	अजीत जोगी	24-मरवाही (अ.ज.जा.)
05.	अनिता योगेंद्र शर्मा, श्रीमती	47-धरसींवा
06.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
07.	अंबिका सिंहदेव, श्रीमती	03-बैकुंठपुर
08.	अमितेश शुक्ल	54-राजिम
09.	अनूप नाग	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
10.	आशीष कुमार छाबड़ा	69-बेमेतरा

इ

01.	इंद्रशाह मण्डावी	78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
02.	इंदू बंजारे, श्रीमती	38-पामगढ़ (अ.जा.)

उ

01.	उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती	17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उमेश पटेल	18-खरसिया

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	कृष्णमूर्ति बांधी	32-मस्तूरी (अ.जा.)
03.	किस्मत लाल नंद	39-सरायपाली (अ.जा.)
04.	कुलदीप जुनेजा	50-रायपुर नगर उत्तर
05.	कुंवर सिंह निषाद	61-गुण्डरदेही
06.	केशव प्रसाद चन्द्रा	37-जैजेपुर

ख

01	खेलसाय सिंह	04-प्रेमनगर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ग

01.	गुरू रूद्र कुमार	67-अहिवारा (अ.जा.)
02.	गुरूदयाल सिंह बंजारे	70-नवागढ़ (अ.जा.)
03.	गुलाब कमरो	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)

च

01.	चक्रधर सिंह सिदार	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
02.	चरणदास महंत	35-सक्ती
03.	चंदन कश्यप	84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)
04.	चंद्रदेव प्रसाद राय	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
05.	चिन्तामणी महाराज	08-सामरी (अ.ज.जा.)

छ

01.	छन्नी चंदू साहू, श्रीमती	77-खुज्जी

ज

01.	जयसिंह अग्रवाल	21-कोरबा

ट

01.	टी.एस.सिंहदेव	10-अम्बिकापुर

ड

01.	डमरूधर पुजारी	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)

त

01.	ताम्रध्वज साहू	63-दुर्ग ग्रामीण

द

01.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव
02.	द्वारिकाधीश यादव	41-खल्लारी
03.	देवती कर्मा	88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.)
04.	देवेंद्र यादव	65-भिलाई नगर
05.	देवेंद्र बहादुर सिंह	40-बसना
06.	देवव्रत सिंह	73-खैरागढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ध

01.	धरमलाल कौशिक	29-बिल्हा
02.	धनेन्द्र साहू	53-अभनपुर
03.	धर्मजीत सिंह	26-लोरमी

न

01.	ननकीराम कंवर	20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02.	नारायण चंदेल	34-जांजगीर-चांपा

प

01.	प्रकाश शक्राजीत नायक	16-रायगढ़
02.	प्रमोद कुमार शर्मा	45-बलौदाबाजार
03.	पारसनाथ राजवाड़े	05- भटगांव
04.	प्रीतम राम, डा.	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
06.	पुरूषोत्तम कंवर	22-कटघोरा
07.	प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ.	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)

ब

01.	बृजमोहन अग्रवाल	51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02.	बृहस्पत सिंह	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)

भ

01.	भुनेश्वर शोभाराम बघेल	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02.	भूपेश बघेल	62-पाटन

म

01.	ममता चंद्राकर, श्रीमती	71-पण्डरिया
02.	मनोज सिंह मण्डावी	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03.	मोहन मरकाम	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	मोहित राम	23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
05.	मोहम्मद अकबर	72-कवर्धा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

य

01.	यू.डी.मिंज	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

र

01.	रजनीश कुमार सिंह	31-बेलतरा
02.	रंजना डीपेंद्र साहू, श्रीमती	58-धमतरी
03.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
04.	रामकुमार यादव	36-चंद्रपुर
05.	रामपुकार सिंह ठाकुर	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)
06.	रविन्द्र चौबे	68-साजा
07.	रश्मि आशिष सिंह, श्रीमती	28-तखतपुर
08.	रेखचंद जैन	86-जगदलपुर
09.	रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती)	25-कोटा

ल

01.	लक्ष्मी ध्रुव, डॉ.	56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	लखेश्वर बघेल	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

व

01.	विक्रम मण्डावी	89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
02.	विनय जायसवाल, डॉ.	02-मनेन्द्रगढ़
03.	विनय कुमार भगत	12-जशपुर (अ.ज.जा.)
04.	विद्यारतन भसीन	66-वैशाली नगर
05.	विकास उपाध्याय	49-रायपुर नगर पश्चिम
06.	विनोद सेवन लाल चंद्राकर	42-महासमुन्द

श

01.	शकुन्तला साहू, सुश्री	44-कसडोल
02.	शिवरतन शर्मा	46-भाटापारा
03.	शिवकुमार डहरिया, डॉ.	52-आरंग (अ.जा.)
04.	शिशुपाल सोरी	81-कांकेर (अ.ज.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

05.	शैलेश पाण्डे	30-बिलासपुर

स

01.	सत्यनारायण शर्मा	48-रायपुर ग्रामीण
02.	संतराम नेताम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)
03.	संगीता सिन्हा, श्रीमती	59-संजारी बालोद
04.	सौरभ सिंह	33-अकलतरा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

बुधवार, दिनांक 02 अक्टूबर, 2019

(आश्विन 10, शक संवत् 1941)

विधान सभा पूर्वाह्न् 11:00 बजे समवेत हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

राष्ट्रगीत

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदेमातरम्" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हो जाएं ।

(राष्ट्रगीत "वन्दे मातरम्" की धुन बजाई गई)

समय :

11:00 बजे **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा**

अध्यक्ष महोदय :- आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती को आप सबके सहयोग से छत्तीसगढ़ में एक त्यौहार के रूप में मनाया जा रहा है । उसके लिये मैं आप सबको बधाई देता हूं । (मेजों की थपथपाहट)

आज महात्मा गांधी जी की जयंती के साथ ही हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी की भी जयंती है। इस अवसर पर मैं उन्हें सादर नमन् करता हूं, प्रणाम करता हूं और श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। हमारे राज्य के विधानसभा के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि 150वीं जयंती के अवसर पर जो महात्मा गांधी जी का अवधान है, उसको याद करने के लिये विधानसभा में दो दिवसीय सत्र का आयोजन किया गया और आप सब यहां उपस्थित हैं, मैं आप सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। सभी के सहयोग से यह संपन्न हुआ है। विशेष रूप से आज के अवसर पर हमारे राज्यसभा के सदस्य आदरणीय पी.एल.पुनिया जी यहां उपस्थित हैं, मैं उनको धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं। आदरणीय रामविचार नेताम जी, आदरणीया छाया वर्मा जी, आदरणीया सरोज पाण्डेय जी, आदरणीया ज्योत्सना महंत जी,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सुनील सोनी जी, श्री संतोष पाण्डेय जी, श्री अरूण साव जी और गुहाराम अजगले जी भी यहां उपस्थित हैं, श्री मोहन मण्डावी जी भी यहां उपस्थित हैं और माननीय विजय बघेल जी भी यहां पधारे हुए हैं, मैं इन सबको विशेष रूप से धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूं । (मेजों की थपथपाहट)

मैं सबसे पहले हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उनके सहयोग के बिना यह सत्र संभव नहीं था और माननीय भूपेश जी के साथ ही हमारे प्रतिपक्ष के नेता श्री धरमलाल कौशिक जी ने, हमारे संसदीय कार्यमंत्री जी ने जो परस्पर सहमति बनाई और समन्वय स्थापित किया जो आज आप सबके सामने दिख रहा है कि हम सब लोग इनकी सहभागिता के लिये, सहयोग के लिये आदरणीय मुख्यमंत्री जी के साथ कौशिक जी का और चौबे जी का कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं । इस सत्र में आज और कल दो दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की स्मृतियों को जो आपके दिल में है, आपके हृदय में है, आपकी जानकारी में है उसको आप भी प्रदर्शित करेंगे और हम भी बापू के भजनों के गायन के साथ, व्याख्यान माला के साथ और राष्ट्रपिता जी के जीवन पर केंद्रीय नाटक और व्याख्यान के साथ यहां प्रस्तुत करेंगे । हम सब जानते हैं कि भारत हमेशा संत-महात्माओं का देश रहा है और मानवता की रक्षा के लिये यहां सब लोगों ने काम किया । जिस तरह चौदहवीं शताब्दी में पूज्य कबीर साहब ने मानवता, सामाजिक समरसता के लिये जो एक मार्ग दिखाया था उसी सामाजिक चेतना की उसी मशाल को लेकर बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी जी ने आगे अपनी लड़ाई शुरू की या कहिए आगे चलना उन्होंने प्रारंभ किया । आज हम उनकी स्मृतियों को यहां याद करते हैं । सौभाग्य से मैं पिछले सप्ताह दक्षिण अफ्रीका के अध्ययन पर था । अपनी यात्रा के दौरान मैंने दक्षिण अफ्रीका में बापूजी के साथ जुड़े हुए कई स्थानों का दर्शन किया । दर्शन इसलिए कह रहा हूं कि संघर्ष और साधना के किसी भी स्थान को प्रत्यक्ष रूप से देखना, भ्रमण नहीं कहना चाहिए, उसे दर्शन ही कहना चाहिए । जोहान्सबर्ग में राष्ट्रपिता के सत्याग्रह सदन का जब मैंने अवलोकन किया तो मुझे ऐसा लगा कि मैं मानवता के सबसे बड़े पावन तीर्थ पर खड़ा हुआ है, जिसने मुझे गौरवान्वित किया और मैंने उस गौरव का अनुभव किया । यह हमारे भारत देश के लिए गौरव की बात है कि हम उनके जन्म दिवस को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाते हैं । यू.एन.ओ. के लगभग 140 देशों ने इसकी स्वीकृति प्रदान की है इसलिए यह हम सबके लिए गौरव का अनुभव है । उसी तरीके से जहां देश-विदेश के अनेक महापुरूषों ने गांधी जी को अपना शिक्षक माना, उनमें से जिन्हें शांति के लिए नोबेल पुरस्कार दिये गये हैं, उनमें लगभग पांच ऐसे हैं जो सीधे-सीधे गांधी जी को अपना आदर्श मानते रहे हैं । मैं यहां उनके नाम का उल्लेख करना उचित समझता हूं - मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दलाई लामा जी, आंग सान सू की, नेल्सन मंडेला जी और उदेल्फो पैरेज इस्क्वेल (Adolfo Pérez Esquivel) जो कि अर्जेन्टीना से हैं । इन सभी लोगों ने अनेक अवसरों पर गांधी जी को औपचारिक रूप से अपना नेता माना, अपना मार्गदर्शक माना । मुझे यह कहने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

में संकोच नहीं हो रहा है कि अल्बर्ट आइंस्टीन जी ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियों को इस बात का विश्वास करना मुश्किल होगा कि गांधी जैसा कोई व्यक्ति इस धरती पर चला करता था । अर्थात् बापूजी का जीवन जितना सरल था, उतना ही कठिन था । किसी सरल जीवन को अपने जीवन में उतारना एक कठिन कार्य से कम नहीं होता । बाकी सब आप जानते हैं कि सत्य, अहिंसा, प्रेम जिस तरह से सत्य के बारे में उन्होंने कहा कि जैसे भगवान सर्वव्यापक हैं वैसे ही सत्य सर्वव्यापक है। हम यह नहीं कह सकते कि सत्य अमुक स्थान पर है और अमुक स्थान पर नहीं है। बापू ने कहा कि सत्य व्यक्ति को निर्भर बनाता है और उन्होंने सत्य को भारत देश में जीवंत करके दिखाया। एक बार डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने उनसे पूछा था कि आपका धर्म क्या है ? आप कैसे धर्म तक पहुंचे और इस धर्म से आपके जीवन में क्या परिणाम प्राप्त हुए ? तो गांधी जी ने बहुत अच्छा उत्तर दिया था, जो आप लोगों ने पढ़ा भी होगा। मगर मैं याद दिलाना चाहता हूं कि गांधी जी ने कहा था कि मैं पहले कहा करता था कि मैं भगवान में विश्वास करता हूं। अब कहता हूं कि मैं सत्य में विश्वास करता हूं। पहले मैं कहा करता था कि ईश्वर सत्य है और आज मैं कहता हूं कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य, अहिंसा और प्रेम का मार्ग लेकर उन्होंने जो अपनी यात्रा आरंभ की, वह हम सबके लिए आज मार्ग प्रशस्त कर रहा है। हम सब उसको नमन करते हैं। उनके सपनों के भारत के बारे में मैं कहना चाहूंगा कि बापू जी ने कहा था कि मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब भी यह महसूस करे कि यह देश उसका है और उसके निर्माण में उसकी जोरदार आवाज है। ऐसे भारत में जिसमें ऊंच-नीच वर्गों का भेद नहीं होगा। जिसमें सभी जातियां मेल-मिलाप के साथ रहेंगी। छुआछूत और नशेबाजी के लिए कोई स्थान नहीं होगा। स्त्रियों और पुरूषों के समान अधिकार होंगे। हम शेष दुनिया के साथ शांति संबंध कायम करेंगे। न शोषण करेंगे और न शोषण होने देंगे। ऐसे तमाम हित जो लाखों भोले-भाले लोगों के हितों के विरूद्ध है, ऐसा कोई भी काम हम नहीं करेंगे। उदारता के साथ आदर किया जायेगा। व्यक्तिगत तौर पर मैं स्वदेशी और विदेशी के भेद से घृणा करता हूं। यह मेरे सपनों का भारत होगा। आज उनके उस आदर्श पर, उस विचार पर चलते हुए हम सब लोग यहां पहुंचे हैं और जिस ढंग से अहिंसा के बारे में उन्होंने कहा कि अहिंसा घर, परिवार, समाज और राष्ट्र सबके लिए आवश्यक है और वे शारीरिक हिंसा को ही अहिंसा का उल्लंघन नहीं मानते थे, बल्कि मानसिक हिंसा भी उनकी नजरों में हिंसा थी। आज मैं कहना चाहता हूं कि उन्होंने स्वयं अपने आपको न बड़ा बनाने की कोशिश की और न यह कहा कि मैं अहिंसा का पहला सत्याग्रही हूं। उन्होंने स्वयं अपने पुस्तकों के माध्यम से हमें बताया है कि वे सत्याग्रह और अहिंसा के पहले आग्रही नहीं थे, बल्कि भक्त प्रहलाद और सुकरात का नाम लिया था कि वे अहिंसा के पहले आग्रही थे, जिसका मैंने यहां आप सबके सामने उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जो कर रहा हूं, जो मैं करना चाहता हूं, वह मेरा पहला कदम नहीं है। उन्होंने भगवान बुद्ध को, भगवान महावीर को अपने जीवन में

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उतारने की कोशिश की और उसे जिया। वे सत्य पर जीने वाले पहले व्यक्ति थे। आज हम लोग एक छोटी सी रोचक बात रखते हुए मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। हम सब लोग अपना घर बनाना चाहते हैं। बापू जी के लिए भी जब उनका घर या कुटिया बनाने के बारे में सोचा गया तो उन्होंने अपना घर बनाने के लिए जो शर्त रखी थी, शायद कुछ नये साथियों को मालूम नहीं होगा। इसलिए मैं बताना चाहता हूं कि उन्होंने जमुना लाल बजाज के सामने शर्त रखी कि पूरा मकान श्रमदान से बनेगा, जिसमें वे स्वयं अपनी भागीदारी निभायेंगे। मकान मिट्टी का होगा, छत खपरें का होगा, उसमें किसी प्रकार के सीमेन्ट आदि का प्रयोग नहीं होगा। उन्होंने तीसरी शर्त रखी कि घर में सूखे लकड़ी और बांस का ही उपयोग किया जायेगा। उन्होंने शर्त रखी कि खिड़की और दरवाजें ग्रामीण बढ़ई और लोहार के माध्यम से बनाये जायेंगे और पूरे मकान का जो लागत है, वह मात्र तीन सौ रूपये से ज्यादा नहीं होना चाहिए। उनकी अंतिम शर्त थी कि घर में बिजली नहीं होना चाहिए। अब ऐसे व्यक्ति के बारे में हम क्या कह सकते हैं आप स्वयं इस सत्र में अपने विचार व्यक्त करेंगे। मगर मैं यह बता दूं कि उनके पूरे मकान की लागत जो उस समय आई, बाद में बजाज जी ने उनको हिसाब दिया, वह 297 रूपये छः आने का था। इस तरह से बापू, गांधी तीन सौ रूपये के घर से हम सबको एक नया रास्ता, हम सबके लिए एक नया आदर्श बनाकर गये हैं। आप सब अपने विचारों को व्यक्त करेंगे, मैं जानता हूँ। इसलिए मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। बाद में हम लोग बात करेंगे। मैं पुनः आदरणीय मुख्यमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए, आदरणीय सभी मंत्रीग, सांसदगण के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ। मैं चाहूंगा कि दिल खोलकर आप अपनी बात रखें।

समय
11:18 बजे

<u>सभापति तालिका की घोषणा</u>

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की नियमावली के नियम 9 के उप नियम (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को सभापति तालिका के लिए नाम निर्दिष्ट करता हूँ :-

1. श्री सत्यनारायण शर्मा
2. श्री धनेन्द्र साहू
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह
4. श्री मनोज सिंह मण्डावी
5. श्री शिवरतन शर्मा

मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे अपनी बात रखें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा (क्रमश:)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूरा राष्ट्र, दूसरे शब्दों में कहूं तो पूरी दुनिया गांधी जी को नमन कर रहा है, याद कर रहा है। गांधी जी के 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूरे देश में अकेला छत्तीसगढ़ विधान सभा है, जिसने 2 दिन का विशेष सत्र आयोजित किया है। (मेजों की थपथपाहट) इसके लिए माननीय अध्यक्ष को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना। मैं इसके लिए नेता प्रतिपक्ष जी को भी धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने इस विशेष सत्र के लिए अपनी सहमति व्यक्त की। गांधी जी के साथ-साथ आज लाल बहादुर शास्त्री जी की भी जयन्ती है, उन्हें भी पूरा राष्ट्र स्मरण कर रहा है, नमन कर रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी एक व्यक्ति नहीं, एक जीवनशैली, एक विचार, एक संकल्प है, उनकी 150 वीं जयन्ती है, जिस दुनिया गांधीवाद के नाम से जानती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हम गांधी को याद करते हैं तो उस परम्परा को भी याद करते हैं, जिस परम्परा पर चलकर गांधी जी ने इस लड़ाई की शुरूआत की। गांधी जी संत थे, गांधी जी महात्मा थे, गांधी जी विचारक थे, गांधी जी अहिंसक के पुरोधा थे, गांधी जी अच्छे लेखक थे, अच्छे संगठक थे, अच्छे मार्गदर्शक थे। गांधी जी के आचार-विचार, उनका पहनावा, उनका खान-पान, उनका रहन-सहन, माननीय अध्यक्ष महोदय जो उनके विरोधी थे, वे भी इन गुणों को कहीं न कहीं अपने में आत्मसात किया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हम गांधी जी को याद कर रहे हैं तो उस पुरानी परम्परा को भी हमको याद करना चाहिए, जिसकी वजह से गांधी बना । गीता में ये ठीक कहा है कि जब-जब धर्म को हानि होती है और अधर्म का उत्थान होता है तो कोई न कोई महापुरूष, कोई न कोई संत, कोई न कोई समाज-सुधारक इस धरा पर अवतरित होते हैं, जिसे हम लोग अवतार या भगवान या ईश्वर का अंश कहते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, प्रत्येक व्यक्ति में जो ब्रह्म है, वही ब्रह्म उस महापुरूष में भी वही ब्रह्म होता है, उससे अलग नहीं । स्वर्ग में पीर पैगम्बर महात्मा के लिए कोई अलग से चाक नहीं बना है, जिसमें उसका निर्माण हो । वह इसी धारा में यहां की परिस्थितियों के अनुरूप उसका निर्माण होता है । जितने भी महापुरूष जन्म लिए, उनके जो विचार आप देखेंगे तो सब एक प्रकार के संदेश नहीं दिए हैं, कुछ न कुछ अंतर दिखाई देता है । जब पूरे देश में हिंसा फैली हुई थी, यागिक हिंसा हो रही थी, उस समय महात्मा बुद्ध इस जमीन पर आए । उन्होंने हिंसा का, त्याग का संदेश दिया, उन्होंने संयम का संदेश दिया, सन्यास का संदेश किया । उसके बाद भगवान शंकर आते हैं । उन्होंने शून्यवाद का उपदेश दिया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उन्होंने निराकार ब्रह्म का संदेश दिया और ये जब लोगों ने देखा कि वे भाव नहीं हो पा रहा है, लोग उससे जुड़ नहीं पा रहे हैं तो फिर रामानुज जैसे संत आते हैं, जो साकार ब्रह्म का आन्दोलन शुरू करते हैं । अध्यक्ष महोदय, जब इस्लाम का यहां आक्रमण होता है, उस समय फिर कबीर, गुरूनानक देव का अवतरण होता है, जो निराकार ब्रह्म की तरफ फिर से लौट आते हैं, ताकि हिन्दुओं में और इस्ताम में सामंजस्य स्थापित किया जा सके, लेकिन एक धारा तब भी चल रही थी, जिसका नेतृत्व तुलसीदास जी, सूरदास जी, मीरा जी ये साकार ब्रह्म लेकर चल रहे थे, लेकिन 19वीं सदी का जो आन्दोलन है, उसके पहले तक के जितने भी आन्दोलन हुए, उसके केन्द्र में धर्म था, तब सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलन नहीं थे, वह केवल धर्म के आन्दोलन थे, लेकिन 19वीं सदी आते-आते उसे सामाजिक और राजनीतिक कसौटी में कसा जाने लगा । उस समय तक के अंग्रेज का चुके थे, ईसाइयत का प्रभाव था और उस समय अंग्रेज हिन्दू धर्म को, इस्लाम धर्म को हीन भावना से देखना शुरू किए । उसकी आलोचना शुरू हुई । और न केवल हिन्दुस्तान में, बल्कि दुनिया में उसकी आलोचना होने लगी, तब ब्रह्म समाज की स्थापना राममोहन राय ने की । राममोहन राय धर्म सुधारक नहीं थे, बल्कि समाज सुधारक थे । हमारे अंदर जो कमजोरी थी, हमारे अंदर जो बुराइयां थीं, उसको उन्होंने डटकर मुकाबला किया और जो हमारे अंदर अच्छाईयां थीं, जो वेद में, उपनिषद में जो बातें थीं, उसको दुनिया के सामने रखा और मानवता के विश्ववाद की बात उन्होंने की और उसी समय गोविंद महादेव रानाडे महाराष्ट्र में उसी प्रकार के आन्दोलन चलाए और उत्तर में पंजाब में दयानंद सरस्वती ने इस प्रकार से आंदोलन चलाया जो भारतीय राष्ट्रीयता की बात, हिन्दू राष्ट्रीयता की बात उन्होंने कही । अध्यक्ष महोदय, उसके तत्काल बाद देखें, जब यह लड़ाई चल रही थी, कौन सा धर्म ऊंचा है, कौन सा धर्म नीचा है, हिन्दू अच्छा है, मुसलमान अच्छा है, क्रिश्चियन अच्छा है, तब रामकृष्ण परमहंस आते हैं, हिन्दुओं के सभी जितने मार्ग है, उसकी उपासना उन्होंने की । न केवल हिन्दूमार्गों का बल्कि उन्होंने इस्लाम पद्धति से भी और क्रिश्चियन पद्धति से भी उपासना करके बताया कि सभी मार्ग एक ही ईश्वर तक पहुंचता है । कोई विवाद उन्होंने नहीं किया, कोई खंडन नहीं किया, विरोध नहीं किया, लेकिन उन्होंने सिद्ध किया, विनोबा जी ने कहा कि 19 वीं सदी में विश्व को जो भारत की देन है, पहला देन रामकृष्ण परमहंस, जिन्होंने अपने जीवन में यह सिद्ध करके बताया, सारे धर्म का रास्ता एक है, एक ही ईश्वर तक पहुंचता है । दूसरा, जो संत हुये, वह महात्मा गांधी है । जिन्होंने संत और अहिंसा का मार्ग बताया और उस मार्ग पर चलकर देश को आजाद कराया । माननीय अध्यक्ष महोदय, रामकृष्ण परमहंस ने जो बातें कही, वही बात कार्यरूप में स्वामी विवेकानंद जी ने पूरे देश और हिन्दुस्तान के बाहर जाकर, दुनिया में जाकर हिन्दू धर्म के बारे में, उन्होंने अपना पक्ष रखा । लेकिन यदि धार्मिक आंदोलन की बात कर रहे हैं, धर्म सुधार की बात, चाहे दयानंद सरस्वती की बात हो, चाहे राममोहन राय की बात हो, गोविंद महादेव रानाडे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

की बात हो, चाहे रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद की बात कहें, यह धार्मिक राष्ट्रीयता की बात हुई, लेकिन राजनीतिक राष्ट्रीयता की बात यदि किसी ने कही, उसका प्रतिनिधित्व किसी ने किया तो महात्मा गांधी ने किया । महात्मा गांधी में उस प्रकार से गुण नहीं थे, जिस प्रकार से राममोहन राय या दयानंद सरस्वती में थे । न उस प्रकार से उनमें विद्वता थी । न ही विवेकानंद जैसे उनका चुंबकीय व्यक्तित्व था । लेकिन जो हमारे महापुरूषों ने, ऋषियों ने जिस सत्य का अन्वेंषण करके बताया, उसे अपने जीवन में अंगीकार करके साकार करने का काम किसी ने किया तो महात्मा गांधी ने किया । (मेंजों की थपथपाहट) गांधी का अहिंसा कमजोर लोगों के लिए नहीं है, यह ताकतवर लोगों की बात है । पशुबल के सामने महात्मा गांधी ने आत्मबल को प्रमुखता दी । पशुबल के सामने, अंग्रेजों के सामने, उन्होंने आत्मबल को खड़ा किया, तोप और बंदूकों के सामने, अहिंसा को खड़ा किया । आखिर अहिंसा ही क्यों, सवाल इस बात का है ? गांधी ने अहिंसा का मार्ग क्यों अपनाया ? अहिंसा इसलिए, लोग उस समय मानते थे, चूंकि हम अंग्रेजों से लड़ नहीं सकते थे, हमारे पास तोप नहीं है, तलवार नहीं है, बंदूक नहीं है, इसलिए अहिंसा का मार्ग अपनाया । लोगों ने उनकी हंसी भी उड़ाई, दुनिया उन पर हंसती थी, आज तक हिंसक क्रान्ति के अलावा, कोई दूसरी क्रांति हुई है ? आज तक अहिंसक क्रांति कहीं नहीं हुई है, जो गांधी जी ने शुरू की, लेकिन अध्यक्ष महोदय, अहिंसा की बात बुद्ध ने कही । अहिंसा की बात महावीर ने की, अहिंसा की बात आप वेदों और उपनिषद में भी पायेंगे। गांधी जी ने पहली बार नहीं कही है । बुद्ध ने अहिंसा की बात कही, वह अपने लिये लागू की, अपने अनुयाईयों के लिए लागू की, व्यक्ति के लिए लागू की लेकिन अहिंसा की बात अगर समष्टि के लिए किसी ने किया, प्रयोग किया तो केवल गांधी जी ने किया। ये उनकी अहिंसा थी। (मेजों की थपथपाहट) अहिंसा की ताकत केवल गांधी की दृष्टि देख सकती थी। उन्होंने कहा कि हिंसा तो पशु करते हैं। उसमें भी क्रोध है, उसमें भी द्वेष है उसमें भी घृणा है। अब जब उनको लड़ना होता है तो पशु हिंसक होते हैं। लेकिन मनुष्य के पास मस्तिष्क है, उस घृणा, द्वेष, क्रोध के आवेग को रोकने का काम मनुष्य कर सकता है और इसलिए गांधी जी ने अहिंसा का मार्ग अपनाया। जब वह पहले अहिंसा की कोई बात कहते थे तो उसका विरोध करते थे, उन्हें गुस्सा आता था, सामने वाले को हीन भावना से देखते थे लेकिन महावीर का जो अनेकांतवाद है कि दूसरे पक्ष से भी उस चीज को देखो क्योंकि पांच अंधे को यदि हाथी के पास भेज दें तो वह लोग हाथी के बारे में अलग-अलग बतायेंगे। यदि किसी ने पैर पकड़ लिया तो वह बोलेगा कि खंभा जैसा है, कोई कान पकड़ लिया तो बोलेगा कि वह सूपा जैसा है। सत्य तो वह भी है। इसलिए गांधी जी ने कहा कि अनेकांतवाद कि जो दूसरा पक्ष बोल रहा है उसके पक्ष में खड़ा होकर उस दृष्टि से देखना और तब गांधी जी अपने विरोधियों/आलोचकों के प्रति भी सहानुभूति रखते थे। अध्यक्ष महोदय, आपको दक्षिण अफ्रीका का आंदोलन याद होगा आप अभी Johannesburg का दौरा करके आये हैं जिन्होंने सजा दिलाई, बार- बार

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उनका मार्ग अवरूद्ध किए, उनको मरवाने की कोशिश हुई लेकिन उसके प्रति उन्होंने क्या व्यवहार किया? जब जेल में थे तो गांधी जी हर काम अपने हाथ से करते थे चाहे वह कपड़ा धोने की बात हो, सूत कातने की बात हो। और तो और वह जेल में चप्पल बनाने का काम भी करते थे और जब वह जेल से बाहर आये तो इस बात को उन्होंने लिखा मैंने एक चप्पल बनाई है, आपकी अनुमति हो तो मैं उसे भेंट करना चाहता हूं। ये जो कार्य है वह यह बताता है कि जो उनको सजा दिलाया उसके प्रति भी सहानुभूति का भाव। ये विचार कोई गांधी का नहीं है ये तो महावीर के समय से चला आ रहा है। अहिंसा की बात वेदों, उपनिषद, बुद्ध और महावीर से चली आ रही है। ये बात कदाचित टालस्टाय ने भी कही। दुनिया के और विद्वानों ने यह बात कही लेकिन उसे अंगीकार करके साकार रूप से जीवन में उतारने का काम गांधी ने किया इसलिए बुद्ध की अपेक्षा गांधी जी को पूरी दुनिया में अहिंसा का सबसे बड़ा दूत माना जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ने एक मार्ग सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया। हर वह काम जो आम लोग करते थे वह काम उन्होंने शुरू किया। जब विदेश से आये, अफ्रीका से लौटे और कलकत्ता यात्रा में जा रहे थे, फर्स्ट क्लास में भगवान तिलक बैठे थे, किसी ने पूछा कि अब इस देश का नेतृत्व कौन करेगा, कांग्रेस का नेतृत्व कौन करेगा, इस आंदोलन का नेतृत्व कौन करेगा तो तिलक जी ने कहा कि वह पीछे थर्ड क्लास में बैठा हुआ व्यक्ति, वह व्यक्ति नेतृत्व करेगा। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ने पूरे देश का भ्रमण किया, यहां की समस्याओं से रूबरू हुए, उन्होंने सामाजिक ताने-बाने को देखा और तब उन्होंने सबसे पहले अपना वस्त्र त्याग किया, लंगोट धारण किया। आश्रम में वह खुद संडास साफ करते थे, झाड़ू लगाते थे, खाना बनाते थे, जूता-चप्पल बनाते थे, और तो और मरे हुए मवेशी के खाल भी स्वयं उतारते थे। किसी कार्य से उन्होंने घृणा नहीं की। यह संदेश पूरे हिन्दुस्तान के लोगों को दिया। उन्होंने कामगारों की लड़ाई लड़ी, उन्होंने किसानों की लड़ाई लड़ी, हर वर्ग को लगता था, हर व्यक्ति को लगता था कि गांधी मेरे से जुड़ा हुआ है और इसलिए गांधी फिर पूरे देश के नेता बन गये। अध्यक्ष महोदय, गांधी का जो राष्ट्रवाद है, वह आज जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात करते हैं, अभी तक मैंने जितनी बात कही वह सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की बात थी। लेकिन कुछ लोग और राष्ट्रवाद की बात करते हैं, वह राष्ट्रवाद कौन सा है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी का राष्ट्रवाद, इतना शोर है राष्ट्रवाद का कि उसमें राष्ट्र को कुचला जा रहा है। नागरिक घुट रहा है, राज्य अपने कर्तव्यों से च्युत हो रहा है और संविधान अर्थहीन होता जा रहा है, यह कैसा राष्ट्रवाद है ? गांधी एक ऐसे राष्ट्रवाद की पैरवी करते हैं, जिसकी जड़ें भारतीय समाज की माटी में धंसी होगी और कालक्रम में गहरी उतरती जायेंगी। गांधी का राष्ट्रवाद जो सबको साथ में लेकर चलने का, उन्होंने नारी उत्थान का आंदोलन चलाया, नारी शिक्षा का आंदोलन चलाया, उन्होंने नयी तालीम शुरूआत की, जो रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद को जो संदेश था, "शिव भाव से जीव सेवा", दरिद्र नारायण की सेवक, जो गरीब हैं,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जो बीमार हैं, जो उपेक्षित हैं, उनमें ईश्वर के दर्शन करते हुए उसी भाव से सेवा करना और उसे अपने जीवन में उतारने का काम गांधी ने किया था। गांधी जी की योगदान को लोग भुलाना चाहते हैं, गांधी जी को उपेक्षित करना चाहते हैं, गांधी जी को बदनाम करना चाहते हैं, लेकिन गांधी जी 150 साल बाद भी आज भी प्रासंगिक हैं, उस समय भी प्रासंगिक थे, आज भी प्रासंगिक है और आगे भी प्रासंगिक रहेगा। (मेजों की थपथपाहट) गांधी का ग्राम स्वराज, आज उस रास्ते पर छत्तीसगढ़ सरकार चल रही है। (मेजों की थपथपाहट) हमने किसानों को मजबूत बनाने का काम किया, ऋण माफी ही नहीं, 2500 रूपये क्विंटल धान देकर उनको समर्थ बनाने की कोशिश हमारी है। गांधी ने गाय की सेवा की और इसलिए हमने नारा दिया- छत्तीसगढ़ की चार चिन्हारी नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी (मेजों की थपथपाहट) पूरे देश और दुनिया में इसकी चर्चा हो रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस अवसर पर कुछ नये कार्यक्रम की घोषणा मैं करना चाहता हूं, जिसमें पहला मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान, दूसरा मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लिनिक, मुख्यमंत्री शहरी श्रम स्वास्थ्य योजना, सार्वभौम पी.डी.एस. ए.पी.एल. योजना, मुख्यमंत्री वार्ड कार्यालय योजना (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं यह भी घोषणा करना चाहता हूं कि हिंसा के विरोधी थे, छत्तीसगढ़ में नक्सल हिंसा हो रही है और जिनके परिवार उसमें हताहत हुए हैं, मौतें हुई है, जो बेघर हो चुके हैं, उनके लिए छत्तीसगढ़ सरकार मकान बनाकर देगी। (मेजों की थपथपाहट) मैं इस अवसर पर यह भी घोषणा करता हूं जो वंचितजनों के, जो आदिवासियों की सेवा करते जिन्होंने जीवन व्यतित की, स्वर्गीय प्रभुदत्त खेड़ा जिन्होंने पूरा जीवन आदिवासियों की सेवा में गुजार दी। उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए, हम नमन भी करते हैं साथ ही ऐसे अधिकारी, जनप्रतिनिधि, संस्था, संस्थाओं के प्रतिनिधि जो आगामी वर्ष में बहुत अच्छा काम करेंगे। उनको भी स्वर्गीय प्रभुदत्त खेड़ा के नाम से पुरस्कार दिया जायेगा। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, दो विचारधाराएं चली आ रही हैं एक विचारधारा जिसका नेतृत्व महात्मा गांधी करते थे, उनके साथी करते थे, उनके अनुयायी करते थे। दूसरा जो नहीं चाहते थे कि देश आजाद हो, देश गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहे, जो नहीं चाहते थे कि ज्ञान का प्रकाश आमजनों, गरीबों, वंचितों तक पहुंचे। जो हिन्दुस्तान की संपदा है, वे लोग उसके हकदार बन सकें, ऐसे विचारधारा के लोग भी थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जब हम महात्मा गांधी जी को याद करते हैं तो गोड़से का भी स्मरण होता है, जिसने उनकी हत्या की। एक विचारधारा का प्रतिनिधित्व गोड़से ने किया। लोग कहते हैं कि पाकिस्तान के विभाजन के कारण से गोड़से ने उनकी हत्या की, लेकिन इतिहास बताता है कि यह उनका पहला प्रयास नहीं था, ये उनका अंतिम प्रयास था। इसके पहले भी उन्होंने जब पाकिस्तान की बात भी नहीं चली थी तब भी गोड़से ने उनकी हत्या का प्रयास किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, वह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रतिगामी ताकतें, जो हिन्दुस्तान को हमेशा गुलाम रखना चाहते थे, वह हजार सालों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहे, उस विचारधारा के लोगों का प्रतिनिधित्व गोड़से ने किया, उनकी हत्या की। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जहां महात्मा गांधी जी की जयजयकार हो रही है तो गोड़से की भर्त्सना होनी चाहिए, उसके भी मुरदेबाद के नारे लगने चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी को अपनाना है तो साफ दिल, खुले मन से अपनाने की आवश्यकता है और गांधी जी को अपनाने का मतलब उनके आदर्शों, अहिंसा के मार्ग, साफगोयी, सत्य के मार्ग को अपनाना होगा, जो हमारे संत महात्माओं ने जो रास्ता बताया। षडयंत्र और हिंसा का मार्ग जो अपनाते थे, उसकी निंदा करनी होगी और मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जो लोग केवल दिखावा के लिए गांधी जी का नाम ले रहे हैं। लेकिन गोड़से की भर्त्सना नहीं कर पा रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि वह थोड़ा साहस, हिम्मत करे और गांधी जी की जयकार के साथ, गोड़से के विरोध और मुर्दाबाद के नारे भी लगाये। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं ये प्रस्ताव करता हूँ कि आज उनकी 150 वीं जयंती पर एक कृतज्ञ राष्ट्र की तरह हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने बापू के विचारों को आत्मसात करते हुए जनसेवा का रास्ता अपनाया है। यह सदन संकल्प लेता है कि हम महात्मा गांधी द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलेंगे और समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव और समरता बनाये रखेंगे और सभी सामाजिक बुराईयों से साथ मिलकर लड़ेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कल आपने कक्ष में बात कही थी। जिस प्रकार से मध्यप्रदेश में गांधी भवन बना है। उसी प्रकार से छत्तीसगढ़ में भी गांधी भवन, नई राजधानी में बनेगा। (मेजों की थपथपाहट) और जो उनकी कंडेल यात्रा है, रायपुर, दुर्ग की जो यात्रा है, उसे चिरस्थायी बनाने के लिए सरकार काम करेगी, आपने जो समय दिया, उसके लिए...।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि आपने प्रस्ताव पढ़ा है यदि उसको सदन का प्रस्ताव माना जाता है तो गांधी जी के साथ-साथ आप लालबहादुर शास्त्री जी के प्रति भी कृतज्ञता का उल्लेख कर दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली लाईन ही वही थी।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं। आपने जो प्रस्ताव पढ़ा है, उसमें शामिल ...।

श्री बृहस्पत सिंह :- अभी चल रहा है। आप बोल तो लेने दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सत्र गांधी जी के नाम से बुलाया गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं ये नहीं कह रहा हूँ। यदि आपने प्रस्ताव पढ़ा, यदि वह सदन का प्रस्ताव है तो उसको स्वीकार करते हुए, आज लालबहादुर शास्त्री जी की जयंती है, उसका भी उल्लेख कर दीजिए, ये आग्रह है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने उनका स्मरण किया। उनके योगदान और आदान को भी कभी नहीं भुलाया जा सकता। पहली लाईन ही वही थी।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये लेट आये, इसलिए इनको मालूम नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए हृदय से धन्यवाद्। (मेजों की थपथपाहट)

सदन को सूचना

सत्र की कार्यवाही का दूरदर्शन केन्द्र रायपुर से सीधा प्रसारण

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है की गांधी जी की 150 वीं जयंती पर आयोजित विशेष सत्र की कार्यवाही का दूरदर्शन केन्द्र रायपुर से पूर्वाह्न 11:00 बजे से 1:30 बजे तक सीधा प्रसारण किया जा रहा है ताकि प्रदेश की जनता भी सदन कार्यवाही से अवगत हो सके। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर हाउस के अंदर हम सब लोग उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व, उनके जीवन के आदर्श पर चर्चा करने के लिए उपस्थित हुए हैं, इसके लिए पूरे सदन के सदस्य उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपनी बात रखेंगे और अध्यक्ष महोदय, आपने यह जो अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। मैं माननीय मुख्यमंत्री को भी धन्यवाद देता हूं कि सब लोग बैठकर यह तय किये कि हमारे देश के ऐसे प्रेरणा पुरूष जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को किसी सीमाओं के अंदर नहीं बांधा जा सकता है, पूरे हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय स्तर पर हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी तय किया कि हम बापू की 150वीं जयंती मनायेंगे और उसी क्रम में इस विधानसभा में हम सब लोगों ने बैठकर तय किया। मैं इस अवसर पर हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी को भी स्मरण करता हूं। मैं उनको नमन करता हूं जिन्होंने इस देश के किसानों, सेना के जवानों लिए "जय जवान-जय किसान" का उद्घोष किया। यदि प्रदेश को आर्थिक रूप से समृद्धशाली बनाना है तो किसानों के प्रति हमारा क्या कर्तव्य, दायित्व, अधिकार है, इस बात को उन्होंने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में रखने का प्रयास किया, उनको आगे बढ़ाने का प्रयास किया। दूसरी तरफ जब जय जवान की बात आती है तो निश्चित रूप से जिनके पीछे महात्मा गांधी जी की सोच इस देश को आजाद कराना थी और आजादी मिलने के बाद में हमारे देश की सीमाएं कैसे सुरक्षित रहें और यदि देश की सीमाओं को सुरक्षित रखना है तो हमारे जवानों का मनोबल बढ़ना चाहिए। उनके ऊपर प्रश्नचिन्ह नहीं लगना चाहिए। उनके

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ऊपर हमको भरोसा करना चाहिए। यह लालबहादुर शास्त्री जी की जो सोच थी और यह सोच के कारण ही उन्होंने "जय जवान-जय किसान" का उद्घोष किया है। आज मैं उनको भी इस अवसर पर नमन करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान अनादिकाल से है। संत, महात्माओं और विविधताओं से भरा हुआ यह देश और हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश है। यदि आप इन पूरी विविधताओं पर विचार करेंगे जो जिस प्रकार की पहले सोच रही है कि सबसे अच्छी व्यवस्था क्या हो सकती है ? तो किन्हीं ने कहा कि अच्छी व्यवस्था यह हो सकती है कि एक आदमी राजा होना चाहिए। यदि एक आदमी राजा रहे, सब उसकी बात मानें तो शायद सब प्रजा संतुष्ट हो और उनकी देखरेख की चिंता करे। इसलिए हमारे पुराणों, इतिहासों में सबसे पहली राजतंत्र की व्यवस्था आई है। इस राजतंत्र में ऐसे बहुत से राजा हुए जिन्होंने बहुत अच्छा काम किया। लेकिन ऐसे भी जो राजा आये जो प्रजा की चिंता न करके केवल अपने प्रभाव, विस्तार, अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए जिस प्रकार से अन्याय करते बना, वह किया। यह देखने में आया कि यदि एक आदमी राजा रहेगा तो शायद उसको रोकने वाला कोई नहीं होगा तो वह निरंकुश हो जायेगा। यह निरंकुश होगा, इसलिए फिर समय में तब्दीली आई। लोगों ने कहा कि किसी के पास बहुत सारी प्रापर्टी है, किसी के पास में खाने के लिए अनाज नहीं है, आखिर इसकी व्यवस्था कैसे करें? यह बात आई कि पूंजीवादी व्यवस्था लागू होनी चाहिए। फिर पूंजीवादी व्यवस्था की बात आई तो पूंजी व्यवस्था में सबको समुचित अधिकार मिल सके। लोगों के साथ अन्याय न हो, उनका शोषण न हो और यह काफी समय तक प्रचलन में रहा। लेकिन प्रचलन में रहने के बाद हमने देखा कि धीरे-धीरे एक वर्ग हावी हुआ और हावी होने के बाद लोगों के मन में यह बात आयी कि यह तो जिनके पास में है, जिनके अधिकार में है वह कुछ लोगों तक सीमित हो गयी है और सीमित होने के बाद लोगों का जो एक अधिकार है, जो अधिकार उन्हें मिलना चाहिए उस अधिकार से वे कहीं न कहीं वंचित होते चले गए और जब वे अधिकारों से वंचित होते चले गए तब सर्वहारा वर्ग की बात आयी कि जो सर्वहारा वर्ग है उसके बारे में सामूहिक रूप से बैठकर निर्णय करे । सर्वहारा की चिंता होनी चाहिए, सर्वहारा के लिये सोच होनी चाहिए और सर्वहारा के माध्यम से जो पूरी मानव जाति है, मानव समुदाय है उनके कल्याण की बात आनी चाहिए । इस प्रकार से क्रमश: यह परिवर्तन धीरे-धीरे प्रारंभ हुआ और नीचे तक उतरते चला गया लेकिन जहां अच्छाई है वहां खराबी भी है और खराबी के बाद उसमें धीरे-धीरे बुराईयां भी पनपती गयीं और बुराईयां पनपने के बाद फिर जो बात आ रही थी कि आखिर इसका निराकरण कैसे हुआ तो निश्चित रूप से ये सारी बातें जो अनुभव में आयीं कि हमारे ऋषियों ने, हमारे मनीषियों ने जिन बातों का अनुभव किया है, उनका जो संदेश रहा है उसके अनुसार अंतिम निष्कर्ष यही रहा कि प्रजातंत्र व्यवस्था, लोकतंत्र व्यवस्था लागू होनी चाहिए लेकिन इस लोकतंत्र के लिये भारत में अनेकों साल गुलामी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के बाद में उस समय की हमारी जो तस्वीर क्या रही है कि गुलामी के बाद जिस भारत का निर्माण हुआ वह विकास का हुआ लेकिन जब हम भारत की बात बोलते हैं तो पहले से हम परम्पराओं में इस बात को देख रहे हैं कि हमारे भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है ।

इतिहास के पीछे इसका निर्माण मनुष्यों के द्वारा नहीं किया गया कि भारत को कोई बनाया गया बल्कि जिस प्रकार से इस भारत की रचना हुई खण्डों में बंटी, टुकड़ों में बंटी और फिर उसका एकीकरण हुआ और आज जिस प्रकार से हम महात्मा गांधी जी की जब 150वीं जयंती मना रहे हैं इस 150वीं जयंती में महात्मा गांधी जी के उस समय के जो विचार, उनके जीवन का जो दर्शन, उनका जो कृतित्व है, मैं समझता हूं कि वह आज हमारे लिये प्रासंगिक है, आजादी मिलने के बाद वह समाप्त नहीं हो गई है बल्कि आजादी मिलने के बाद जो बहुत सारे कार्य जैसे महात्मा गांधी जी ने जो सपना देखा कि हमारा आजाद भारत कैसा होगा और इस आजाद भारत में हमारी क्या व्यवस्थाएं होंगी, जो उस समय शोषित रहे हैं, उस समय जिनका शोषण हुआ है, उस समय जो गरीब रहे हैं, उनके जीवन में बदलाव कैसे आयेंगे और इसलिये यदि हम समग्र रूप से महात्मा गांधी जी के जीवन के ऊपर, उनके कृतित्व के ऊपर विचार करेंगे तो निश्चित रूप से चूंकि हम सभी को यह मालूम है कि गांधी जी का जन्म एक संभ्रांत परिवार में हुआ । उनके पिता जी राजकोट रियासत के दीवान थे, इसका आशय यह है कि अभाव में उनका जीवन नहीं रहा है लेकिन जिस प्रकार से अभाव में जो जीने वाले लोग हैं, उनके प्रति गांधी जी का जो प्रेम रहा है और यही जो उनका प्रेम है कि उनको गांधी से महात्मा बनाने के लिये मार्ग प्रशस्त किया कि वे गांधी से महात्मा बने, पढ़ने-लिखने के बाद में स्वाभाविक रूप से हम सभी ने यह पढ़ा है कि गांधी जी सन् 1888 में कानून पढ़ने के लिये लंदन गये, पहली बार वहां जाने के बाद गांधी जी के मन में यह अनुभूति आयी कि जिस प्रकार से जाने के पहले जो उन्होंने संकल्प लिया, उनकी माता जी ने जो संकल्प दिलवाया कि मांसाहारी नहीं होना है, जो संकल्प जीवन में जितने अवगुण जो मनुष्य में पैदा करता है इस अवगुण को संकल्प लेकर जीवन में इसको हम प्रारंभ नहीं करेंगे, इसको हाथ नहीं लगायेंगे । लेकिन हमने देखा कि जलयात्रा के माध्यम से गांधी जी गए तो इस दौरान उन्हें बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । गांधी जी से बहुत से लोगों ने कहा कि ऐसे नहीं चल सकेगा तो गांधी जी ने कहा कि मैं अपने संकल्प पर अडिग हूं और वे अपने संकल्प पर कायम रहते हुए लंदन पहुंच गए । लंदन में बहुत से लोगों से उनकी मुलाकात हुई, बहुत से लोग उनके सम्पर्क में आए । गांधी जी के बारे में लिखा गया है कि गीता का अनुवाद उन्होंने लंदन में किया है और अनुवाद के माध्यम से उन्होंने गीता को पढ़ना प्रारंभ किया है । गांधी जी ने लंदन में बहुत से विषयों को पढ़ा, उन्होंने बुद्ध को पढ़ा । लंदन में उन्हें ऐसे वर्ग में सदस्यता मिली जो शाकाहारी थे । उनका नेतृत्व करते हुए उन्होंने वहां एकीकरण करने का प्रयास किया । गांधी जी वहां विशेषकर दो लोगों के सम्पर्क में रहे,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जब वहां भाषण देने की बात आई तो एक ने जो प्रस्तुतिकरण किया, प्रस्तुतिकरण करने के बाद गांधी जी को लगा कि यथार्थ में ऐसी बातें नहीं हैं । गांधी जी ने लिखकर दिया और उसके बाद जो प्रस्तुतिकरण किया गया था उसमें यह माना गया कि गांधी जी ने सही कहा है और गांधी जी ने सही लिखा है । यह गांधी जी की ताकत रही है कि अपनी बात को सामने वाले से कैसे मनवा लेना, उस बात को प्रमाणिक रूप से मनवा लेना, गांधी जी ने यह करके दिखाया है ।

गांधी जी कानून की पढ़ाई करके भारत लौटकर आए । लौटकर आने के बाद उन्होंने कानून के पेशे को अपनाया और हम सबको मालूम है कि उसके बाद गांधी अफ्रीका निकले । अफ्रीका में जाकर उन्होंने वकालत की । कुछ लोगों ने गांधी जी के बड़े भाई से सम्पर्क किया कि गांधी जी अफ्रीका में वकालत के लिए भेजना चाहें तो भेज सकते हैं । उस वक्त यह सोच बनी कि अफ्रीका जाना है और गांधी जी अफ्रीका गए । वहां जाकर उन्होंने वकालत शुरू की । वहां किस तरह से भेदभाव किया जाता है इसका सामना गांधी जी ने प्रत्यक्ष रूप से किया । वे फर्स्ट क्लास की टिकिट लेकर ट्रेन में बैठे, उन्हें भारतीयों के द्वारा आगाह किया गया था कि यहां पर भेदभाव किया जाता है, गारे-काले में भेद किया जाता है । यह अनुभव करके गांधी जी को लगा कि मैं जिस कार्य के लिए निकला हूं शायद उस मिशन को पूरा करके मुझे जाना पड़ेगा । यदि अपमान की बात सोचकर मैं भारत लौट गया तो लौटने से मेरा संकल्प पूरा नहीं होगा । वहां जितनी भी कठिनाईयां आईं, जितना भी भेदभाव किया गया, उन सारी स्थितियों का सामना गांधी जी ने किया है । हमने देखा है रेल यात्रा और अनेक अवसरों पर किए गए भेदभाव को उन्होंने सहा । इतना सहने के बाद भी अंतिम निष्कर्ष यह था कि वे वकालत करने गए थे और उन्होंने वकालत की । वकालत करने के दौरान उन्होंने पाया कि कैसे दो भाई आपस में भिड़ते हैं, उन्हें लड़ाने के बजाय समझाईश दी जा सकती है । यदि वे समझाने से मान जाते हैं तो समस्या का हल हो सकता है । अनेक प्रकरणों में गांधी जी ने लोगों को समझाने का काम किया और समझाकर उन्हें न्याय दिलाने का काम किया है ।

समय :
12.00 बजे

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सब देखें कि गांधी जी जब अफ्रीका से वापस लौटे तो उनके लौटने के बाद श्री गोपाल कृष्ण गोखले जी ने कहा कि गांधी जी, आप यहां एक साल तक लोगों को नजदीक से जाकर देखिए और देखने के बाद आप महसूस करिए और महसूस करने के बाद आप जो करना चाहते हैं, वह करें। गांधी जी के यहां आने के बाद जो विदेशी कपड़ा है, उनकी होली जलाई गई। गांधी जी ने लोगों को स्वराज्य व स्वदेशी के लिए प्रेरित किया। लोगों को अहिंसा के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार से गांधी जी के जो उनके प्रमुख ताकत बने, वे हैं शाकाहार, उपवास, अहिंसा, सहिष्णुता, अपरिग्रह, करूणा,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सत्य। ये इनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं। अंग्रेजों की हुकूमत रही है। अंग्रेजों की हुकूमत में किसानों के साथ व यहां रहने वाले गरीबों के साथ अन्याय हुआ। चरणबद्ध श्रृंखला में गांधी जी के द्वारा इस अन्याय का प्रतिकार किया गया और प्रतिकार करने के लिए उन्होंने अपना जो मार्ग प्रशस्त किया, वह अहिंसा का किया। हम सबको उनके खेड़ा आंदोलन के बारे में मालूम है। अकाल के समय में किसानों के ऊपर बर्बरतापूर्वक लगान वसूल किया गया और इस लगान वसूली में ताकत व हिंसा का उपयोग किया गया, लेकिन गांधी जी का मार्ग अहिंसा का था। हम सबको चम्पारण्य के सत्याग्रह के बारे में मालूम है। वहां अन्य जो मुख्य फसल है उसे लेने के बजाय नील की खेती के लिए बाध्य किया गया कि किसान नील की खेती करे और किसान नील की खेती नहीं करना चाहते थे, जिस मामले को लेकर गांधी जी गये और गांधी जी ने वहां जाकर जब सत्याग्रह किया तो गांधी जी निकले तो अकेले थे, लेकिन जब पहुंचे तो गांधी जी के प्रति किसानों का जो अटूट विश्वास है, व उनके मन में जो असीम श्रद्धा है और गांधी जी के अहिंसा के भाव की जो ताकत है, उसके कारण हजारों व लाखों की संख्या में किसान वहां पहुंचते गये और पहुंचने के बाद उन्होंने उस हुकूमत को मजबूर किया कि आप किसानों के ऊपर कोई भी चीज जबर्दस्ती नहीं लाद सकते। आप जबर्दस्ती किसी काम को नहीं करा सकते। यही उनकी आंदोलन की शुरूआत है। गांधी जी का प्रभाव यह था कि गांधी जी जहां भी जाते, चाहे रेल की यात्रा में जायें या जहां भी जायें, गांधी जी का नाम सुनकर पूरे हिन्दुस्तान में हजारों की तादाद में लोग रेलवे स्टेशन में पहुंच जाते थे, स्वागत करने के लिए चले जाते थे और जहां भी जाते थे तो गांधी जी का जय-जयकार होने लगता था। हम सबको मालूम है कि गांधी जी का इस देश के लिए जो असहयोग आंदोलन था, जिसके अंतर्गत अंग्रेजों को हटाना था । उनके प्रभाव में आकर कई लोगों ने अपनी नौकरी भी छोड़ दी। अंग्रेजों का बहिष्कार भी किया और हम सबको मालूम है कि 08 अगस्त, 1942 का आंदोलन, जिस प्रकार से इस देश से अंग्रेजों को एक दिन जाना पड़ेगा और अंततः वह स्थिति आई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उनकी दाण्डी यात्रा के बारे में हम सब लोग सुने हैं। उनकी दाण्डी यात्रा, नमक कानू को तोड़ना है और कानून तोड़कर अंग्रेजों के मनोबल को पस्त करना है। गांधी जी इस नमक कानून तोड़ो आंदोलन के माध्यम से ऐसे लोगों को जोड़कर यह उस हुकूमत को बता दिया कि आपके कानून को आपके हिसाब से मानने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने इसके बल पर लाखों लोगों को एकत्र करके कि नमक को खरीदेंगे नहीं, बल्कि नमक हम घर-घर तक पहुंचा सकते हैं। इसको पहुंचाने का काम इस नमक तोड़ो कानून से किया। लेकिन मैं यह कह सकता हूँ कि गांधी जी के बाद यदि छत्तीसगढ़ में नमक पहुंचाने का काम किया है, तो डाक्टर रमन सिंह जी ने और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने वह काम किया, जिस काम को गांधी जी ने किया था। (प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट) कि हमको नमक के लिए कोई आंदोलन न करना पड़े। बही गांव की घटना की दोबारा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पुनरावृत्ति न हो, लोगों की नमक के लिए हत्याएं हो जाए, तो इसलिए नमक को यहां पर चालू किया गया कि जो आम आदमी है, उसको नमक मिलना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के आंदोलन के साथ-साथ, बहुत सारे सिद्धांत आज हमारे प्रदेश में आगे और क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। उनकी जो मूल सोच रही, उनके जो मूल विचार रहे, उस पर चलने की आवश्यकता है। गांधी जी ने साध्य और साधना की बात कही। हमारा साध्य क्या है, हमारा लक्ष्य क्या है ? उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमारे साधन कैसे होने चाहिए। उन्होंने उसमें उदाहरण दिया कि यदि एक विद्यार्थी को पास होना है, तो उसमें सबसे अच्छी बात होगी, उनका जो साधन है, उसमें पुस्तकें होंगी और उनकी पढ़ाई होगी। लेकिन यदि पास करने का अलग तरीका अपनायेंगे, आप नकल करेंगे, आप पेपर सेट करायेंगे, आप पेपर जांचवाने के लिए पैसा देंगे तो आप पास तो हो जायेंगे, लेकिन पास होने के बाद शायद आपके मन में वह खुशी नहीं होगी। क्योंकि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपको जो साधन चाहिए, उसकी पवित्रता भी उतनी ही होनी चाहिए, जो आपको साध्य है और उस साध्य को प्राप्त करने के लिए आपके साधन की पवित्रता भी होनी चाहिए। हर कोई बड़ा आदमी बनना चाहता है, आज के समय कौन बड़ा आदमी नहीं बनना चाहता है ? सब कोई पैसा कमाना चाहता है। लेकिन वास्तव में पैसा कमाने का मतलब, उसमें आपकी मेहनत है, आपका लगन है, आपका परिश्रम है। आप व्यवसाय के माध्यम से पैसा कमा सकते हैं, आप पेशा के माध्यम से पैसा कमा सकते हैं। लेकिन पैसा कमाने के लिए जरूरी नहीं है कि आप डकैती डाले, आप लूट करें। यदि आप लूटकर बड़े आदमी बने तो कभी भी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। तो गांधी जी का साध्य और साधन के ऊपर उनका जो लक्ष्य रहा, उनकी सोच बनी, उस सोच के अनुसार वास्तव में आज के समय में हम लोग कहां पर खड़े हैं, हम कहां पर जा रहे हैं ? क्या आज के समय में समाज में इस बात की चिंतन करने की आवश्यकता नहीं है ? वास्तव में देश की आजादी के बाद आज हम जहां पर खड़े हुए हैं, जिन परिस्थितियों में खड़े हुए हैं, मैंने यह बात इसलिए कहा कि गांधी जी आज भी प्रासंगिक हैं। उनके बताए हुए उपदेश हैं, उनके बताए हुए जो संदेश हैं, यदि हम उस मार्ग में प्रशस्त होकर चलेंगे, तो निश्चित रूप से गांधी जी ने जो कल्पना की है, हम उसको नीचे धरातल तक पहुंचा सकते हैं, साकार कर सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जिन पूंजीवादी व्यवस्था की बात की, उनको गांधी जी ने ट्रस्टीशिप कहा । हमारे पास जो सम्पत्ति है और हम जो सम्पत्ति कमा रहे हैं, उस सम्पत्ति को कमाने के बाद कितना हिस्सा हमारा होना चाहिए, कितना हिस्सा समाज के लिए समर्पित होना चाहिए, जो समाज का वर्ग है, वहां तक उसको कैसे पहुंचना चाहिए और इसलिए इस सम्पत्ति से आप सम्मान से जीवन-यापन कर सकें । आपको जितनी सम्पत्ति की आवश्यकता है, यदि उतनी सम्पत्ति आपके पास में रहकर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बाकी सम्पत्ति को आप समाज में वितरित करेंगे तो समाज में आपका सम्मान बढ़ेगा, समाज में जो अभाव में हैं, उनके जीवन में खुशहाली आएगी और समाज में एक वर्ग ऊपर और एक वर्ग नीचे की जो बात करते हैं, जो असमानता समाज में दिखाई दे रही है, वह असमानता की जो दूरियां हैं, वह समाप्त होगी और समाज में समानता आएगी, किन्तु आज हम लोग देख रहे हैं कि पूरे विश्व की हम बात करेंगे तो कुछ परसेंट लोग ऐसे हैं, जिनका 80 परसेंट पूंजी पर अधिकार है और 20 प्रतिशत पूंजी में बाकी लोग बंटे हुए हैं और इसी के कारण आज समाज में असमानता दिखाई दे रही है । इस असमानता को समाप्त करने के लिए आज बहुत सारे लोग ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को दान करने और लोगों में समानता का भाव लाने का प्रयास किया है जैसे वारेन बफेट, बिल गेट्स हैं, मार्क जुगरबर्ग, विनोद खोसला, एलन मस्क, लैरी एलिसन, डेविड वाफेल्कर हैं, ऐसा नहीं है कि केवल विदेश में हैं । आज हमारे देश में भी ये प्रवृत्ति बढ़ी है । नारायण मूर्ति जी, अजीम प्रेम जी, शिव नाडर जी ऐसे अरबपति हैं, जिन्होंने अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा समाज को समर्पित किया है । निश्चित रूप से यह प्रेरणा आने वाले समय में समाज को मिलनी चाहिए, जिससे उनके माध्यम से समाज में अभावग्रस्त लोगों में, उनकी जीवन में खुशहाली आ सके और समाज में समरसता स्थापित हो सके ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वदेशी स्वराज सिद्धान्त । महात्मा गांधी जी ने उस समय गांव की कल्पना की थी कि भारत की जो आत्मा है, वह गांव में बसती है । जब तक गांव का विकास नहीं होगा, तब तक भारत का विकास नहीं हो सकता । अब यदि गांव का विकास करना है तो उनकी जो कल्पना थी कि गांव के लोगों को हम आत्मनिर्भर कैसे बनाएं और यदि आत्मनिर्भर बनाना है तो उनको अपने पैरों पर खड़ा करना पड़ेगा । अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए जिस बात को गांधी जी ने प्रतिपादित किया कि जो कुटीर उद्योग हैं, जो लघु उद्योग हैं, ऐसे कुटीर उद्योग, लघु उद्योगों को वहां पर प्रोत्साहन मिलनी चाहिए । गांधी जी चरखा चलाते थे, सूत कातते थे, गांधी जी स्वयं उस कपड़े को जो सूत कातते थे, जो सूत कातते हुए जो कपड़ा बना है, उसी कपड़े को वे पहनते थे । उन्होंने अपने पूरे जीवन में निर्वाह किया है । इसके पीछे उनकी जो मूल भाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना था और इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए यदि गांव के जो उत्पाद हैं, उन उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा अपने जीवन में, दिनचर्या में हम उपयोग करेंगे और हम उसका उपयोग करेंगे तो जो राशि है, वहां तक पहुंचेगी और दूसरी बात यदि आज हम देखेंगे तो मार्केट में हम कहां पर खड़े हुए हैं । आज सोच में भी जो अंतर आई है, स्वदेशी को छोड़कर पूरे देश में जो चाईना के जो मार्केट है, पूरे विश्व में, और उसके साथ में आज छोटे से छोटे वस्तुओं से लेकर बड़े से बड़े वस्तुओं को लेकर विदेशी प्रभाव में जो बहकर जा रहे हैं, इससे हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होने वाली नहीं है । लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा देना, लोकल आर्थिक स्थिति को मजबूत करना, जिससे गांवों में हमारी मजबूती आ सके । आज

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हम देख रहे हैं कि हजारों के तादाद में, लाखों के तादाद में, कोर्ट में हमारे फाईल पेंडिंग हैं । महात्मा गांधी जी ने तो ग्राम सुराज, उसके पीछे ग्राम पंचायतों का मजबूतीकरण, एक ऐसी व्यवस्था बनाना, जिसमें गांवों में बैठकर लोगों को न्याय दिला सके । पंच के परमेश्वर कहा गया । परमेश्वर ने जो निर्णय दिया, उस निर्णय को स्वीकार होना चाहिये । स्वीकार करने की बात अगर कर ली जाये तो आज भी उस व्यवस्था के तहत में कार्य करना शुरू करे, आधे से ज्यादा मामले जो कोर्ट में जा रहे हैं, थाने में जा रहे हैं, गांव में बैठकर उसका निराकरण संभव है । बहुत सारे हम समय का अपव्यय, बहुत सारे हम धन का अपव्यय, इस अर्थ के अपव्यय से हम समाज को बचा सकते हैं । लेकिन 70 सालों में जो मजबूती मिलनी चाहिये, वह मजबूती नहीं मिली, मजबूती नहीं मिलने के कारण में, आज इसका खामियाजा सब लोग भुगत रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्तमान जो शिक्षा की बात करते हैं, जो शिक्षा की पद्धति हमारे यहां लागू है, उस शिक्षा के पद्धति ने जो हमको दिया है, वह है डिग्री और उस शिक्षा पद्धति ने हमको दिया है बेरोजगारी । गांधी जी को सोच ऐसी रही है कि शिक्षा पद्धति ऐसी हो, जिसके माध्यम से स्वयं रोजगार सृजित कर सके...।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, पूर्व मुख्यमंत्री चले गये, नेता प्रतिपक्ष जी भाषण दे रहे हैं । पूर्व मुख्यमंत्री जी को जाना नहीं था भई । नेता प्रतिपक्ष भाषण दे रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको समझ में नहीं आयेगा । गांधी जी के बारे में वह बोल रहे हैं । गांधी जी के बारे में बोल रहे हैं, आपको समझ में नहीं आयेगा ।

श्री अमितेश शुक्ल :- जिनको समझ में नहीं आ रहा था, उनको तो लेना था । मेरे तो घर में ठहरे हैं भईया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप सुन तो लो । आपके घर में ठहरे हैं, हम लोग भी..।

श्री अमितेश शुक्ल :- पूर्व मुख्यमंत्री को जाना नहीं था । सदन के नेता प्रतिपक्ष भाषण दे रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अपनी असहमति से, आप ड्रेस कोड में नहीं हो । अवगत कराओ आप । आज आपके लिये स्वर्णिम अवसर है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मुख्यमंत्री जी के खिलाफ असहयोग आंदोलन है क्या ।

श्री बृहस्पत सिंह :- चन्द्राकर जी, आपके लिए एक खुशखबरी है । यह खबर आ रही है कि गोवा के राज्यपाल ...।

श्री धर्मजीत सिंह :- मंत्री, वंत्री बनाओ, नहीं तो उल्टा, सीधा कपड़ा पहनकर आयेंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय अमितेश जी बोल रहे हैं कि मुख्यमंत्री जी चले गये, माननीय अमितेश जी का एक सार्वजनिक बयान आया था, मुझे प्रताड़ित क्यों किया जा रहा है,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मैं समझ नहीं पा रहा हूँ । मैं निवेदन करता हूँ, आज गांधी जयंती है, गांधी जी ने सत्याग्रह का मार्ग दिखाया है । आपकी प्रताड़ना के विरोध में आप सत्याग्रह शुरू करो । यह सदन आपके साथ में रहेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सत्याग्रह शुरू करिये ।

श्री अमितेश शुक्ल :- यह बातें सुनकर मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है । आपके मुंह से सुनकर अच्छा लग रहा है कि आप लोग गांधीजी के बारे में बात कर रहे हैं । यह बड़े आनंद का विषय है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अमितेश जी का दो बयान आया ।

श्री अमितेश शुक्ल :- वास्तव में शर्मा जी, मैं बहुत प्रसन्न हूं कि आप गांधी जी के सत्याग्रह के बारे में बात कर रहे हैं । गांधी जी के सत्याग्रह.....

श्री अजय चन्द्राकर :- अमितेश जी, एक मिनट । आपको दो बयान आया था कि छत्तीसगढ़ सरकार को अध्ययन करवाना चाहिये कि हरियाणा में 15 मंत्री क्यों है, है कि नहीं है वह अमितेश जी जाने ?

श्री अमितेश शुक्ल :- गांधी जी की बातों को विषयान्तर मत करो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दूसरा, उन्होंने बयान दिया था कि मुझे किस बात की सजा दी जायेगी, मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग की थी कि दोनों मांग के लिए एस.आई.टी.बनाया जाये । इनके घर बुढ़ापारा में महात्मा गांधी ठहरे थे, तुलसीचौरा वहां जगह है । इनको आजीवन तुलसीचौरा में ...।

श्री अमितेश शुक्ल :- नेता प्रतिपक्ष भाषण दे रहे हैं, आपके पूर्व मुख्यमंत्री चले गये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अपने घर में जाकर जहां महात्मा गांधी जी बैठे थे उस तुलसी चौरा में जाकर बैठ जाओ।

श्री शिवरतन शर्मा :- और मैं तो कहता हूं कि वहां नहीं बैठ सकते तो मुख्यमंत्री जी के सामने बैठ जाओ कि आपके साथ न्याय होना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- बूढ़ापारा में गांधी चौरा है, आप वहां बैठिए, यहां बोलने की जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी का भाषण चल रहा है और इनके ही सदस्य विरोध कर रहे हैं, मतलब नेता प्रतिपक्ष का विरोध है।

अध्यक्ष महोदय :- वह आ गये हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- अमितेश जी, मुख्यमंत्री जी के पास जा-जाकर परेशान हो चुके हैं, वह मंत्री बन नहीं पा रहे हैं लेकिन सौभाग्य से दर्शक दीर्घा में भी एक व्यक्ति बैठे हुए हैं जो अमितेश जी की तरफ नोटिश ले रहे हैं। आप चिंता मत करिये। दिल्ली जाने के बाद आगे चर्चा होगी लेकिन यहां पर ऐसा विधानसभा के खिलाफ ड्रेस पहनकर मत आया करो। ये असहयोग आंदोलन कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- कौशिक जी, चलिए समाप्त कर दीजिए। अब रमन सिंह जी आ गये हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो शिक्षा की बात कही कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो रोजगार श्रृजन करे और इसलिए उस दिशा में जो प्रयास इस देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है, इसी विधानसभा में हम लोगों ने पारित किया कि कौशल उन्नयन के माध्यम से हम यहां पर लाईवलीहुड कालेज खोलेंगे जिससे लोगों को रोजगार मिल सके। गांधी जी ने ऐसी ही शिक्षा पर बल दिया था। आज के समय में हम उसे आगे कैसे बढ़ा सकते हैं ताकि किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर रोजगार की दिशा में हमारी ये शिक्षा तथ्यपरक कैसे हो इस दिशा में बल दिये जाने की आवश्यकता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ने कहा है कि सत्य को कोई कितना भी दबाये सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं। आपने देखा है कि गांधी जी को सत्य के कारण अनेकों बार जेल जाना पड़ा, यातनायें भुगतनी पड़ी लेकिन हमेशा वह अडिग रहे, कभी डिगे नहीं और एक दिन सत्य की जीत हुई। अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में गांधीजी ने इसका वर्णन किया है कि गांधी जी के दर्शन में गांधी जी ने सत्य को भगवान और परमेश्वर कहा है। आज इस बात को लेकर चलने की महती आवश्यकता है। गांधी जी अहिंसा के पुजारी थे, अहिंसा उनकी ताकत थी और अहिंसा के बल पर उन्होंने अंग्रेजों को भारत से भगाया। लेकिन कतिपय ऐसे शासक रहे हैं जिन्होंने हिंसा का सहारा लिया, कत्लेआम हुआ और उसके बाद उनका पतन भी हुआ है, हमारे सामने उसके अनेकों उदाहरण हैं। अहिंसा मानव को जोड़ती है इसलिए गांधी जी की जो सहनशीलता रही है कि जो अपना विरोध करने वाले भी हैं इस अहिंसा और सत्य के बल पर विरोध करने वाले का विरोध भी कम कैसे हो जाए और वह हमें आत्मसात कैसे करें इसे गांधी जी ने अपने जीवन में करके बताया है। वर्तमान समय में हम लोग गांधी जी को परिवार, समाज, राष्ट्र से ऊपर मान सकते हैं क्योंकि वह ऐसे महापुरूष रहे हैं कि उनकी राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता रही है। आज हम देख रहे हैं कि विदेशों में भी गांधी जी की 150वीं जयंती मनाई जा रही है, उसके पीछे उनकी स्वीकार्यता है। गांधी जी किसी धर्म, सम्प्रदाय, दल से ऊपर हैं। उनको इस बंधन में नही बांधा जा सकता। इसलिए गांधी जी केवल एक धर्म के चहेते नहीं, बल्कि सभी धर्मों के अनुयायी ने गांधी जी को स्वीकार किया है। गांधी जी सर्वसम्मत मान्यता उनकी रही है। आज हम देख रहे हैं कि क्या स्थिति है ? एक देश, दूसरे देश में जो हत्याएं हो रही है, वर्चस्व की लड़ाई, एक धर्म के दूसरे धर्म की लडाई, एक समाज के दूसरे समाज के बची में लड़ाई, एक परिवार के दूसरे बीच में जो संघर्ष है, वास्तविक में हिंसा के बल पर इसको समाप्त नहीं किया जा सकता। यदि विश्व में हम शांति स्थापित करना चाहते हैं तो गांधी जी बताये हुए मार्ग पर चल करके हम विश्व में शांति स्थापित कर सकते हैं। गांधी जी ने अपने जीवन में, अपने जो खुद उन्होंने पहले उसका अनुभव किया है, सिद्धांत बाद में लाया है। यदि नस्लवाद के खिलाफ गांधी जी लड़ाई लड़े, तो गांधी जी ने अपने जीवन में उसको भोगा है और खुद भोगने के बाद में बाकी लोगों के बीच में उस बात

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

को ले करके आये। लोगों में उसकी स्वीकारिता मिली है। गांधी जी साबरमती आश्रम और जो भी लोग आश्रम में गये, उस समय उनकी जो समाज की रचना हमारी प्रकृति ने हमको जो दिया है उसका संरक्षण, यदि प्रकृति ने हमको दिया है तो उसका कितना हमको लेना है, कितना हमको वापस देना है, पर्यावरण को कैसे सुरक्षित रखना है। सबसे बड़ी बात जो गांधी जी के अपने व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह स्वच्छता को ले करके है कि हम समाज को कैसे स्वच्छ बनाये, घर को कैसे स्वच्छ बनाये ? गांधी जी ने खुद इसको करके किया है। मुझे लगता है कि यदि गांधी जी के अनुयायी हम लोग अपने आपको मानने वाले सब लोग, यह उस रास्ते पर चल करके काम करते तो आज बाहर में शौच जाने की आवश्कयता नहीं पड़ती। 70 साल के बाद भी इस देश में खुले में शौच जाने की मजबूरी रही है। यदि इस बात को ले करके किन्हीं ने काम किया तो नरेन्द्र मोदी जी ने, गांधी जी के विचार और आदर्श को ले करके इस देश में उन्होंने स्वच्छता को अपनाया और आज पूरे हिन्दुस्तान में इस स्वच्छता का जो प्रभाव पड़ा है, न केवल वह दिखाई दे रहा है, बल्कि लोगों के मानस पटल में अंतर्आत्मा में उसकी आवाज आई है। हम सब लोग इस बात को उस दिशा में बढ़ रहे हैं जो गांधी जी ने मार्ग प्रशस्त किए हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बहुत सारी बातें जो गांधी के जीवन में, जो गांधी जी ने हम सबके सामने और गांधी जी का जो प्रसंग है, मुझे लगता है कि वह समाप्त नहीं हुई है। बल्कि उसको आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री जी गोडसे की बात बोल रहे थे, गांधी जी और गोडसे, मैं एक, मुख्यमंत्री जी प्रस्ताव रखे हैं, चाहें तो आप जोड़ सकते हैं या न जोड़ें कि आज लाल बहादुर शास्त्री जी का ...।

श्री अमरजीत भगत :- नेता जी मैं आपसे अनुमति चाहता हूं। मोदी जी ने टायलेट तो बनवाया लेकिन इतना छोटा-छोटा बनवाया है कि उसमें अमितेश घूस ही नहीं सकते हैं। (हंसी)

श्री धरमलाल कौशिक :- वे उधर बैठे हैं, वह आपको जवाब दे देंगे।

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मोदी जी ने, महात्मा गांधी जी ने सूट बूट को छोड़कर उस देश में आये जो अध्यक्ष जी के पीछे फोटो लगा हुआ है। लेकिन मोदी जी ने जिस ड्रेस को छोड़कर सूट बूट में आया उसमें भी प्रकाश डालिये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, विषयांतर मत होइये।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, आज पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की भी पुण्यतिथि है और हम सब लोग उनको बधाई दे रहे हैं। इस प्रस्ताव में
यदि लालबहादुर शास्त्री जी का भी उल्लेख हो जाए तो मैं समझता हूँ कि उसमें कोई अनुचित नहीं है। बल्कि जो आज का प्रसंग है, जिस प्रसंग में गांधी जी ने इस देश के किसानों, नवजवानों के लिए काम

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किया। लालबहादुर शास्त्री जी ने उनको बढ़ाने का काम किया है इसलिए उस प्रस्ताव को उनको जोड़ा जाए, मैं आपसे ऐसा आग्रह करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ने अहिंसा का मार्ग बताया। आज जो बात आ रही है, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो उल्लेख किया कि नाथूराम गोड़से और महात्मा गांधी जी। वास्तव में आज नाथूराम गोड़से के बारे में चर्चा नहीं हो रही है, उसमें उन्होंने एक बात कही कि उनको गाली दे।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नाथूराम गोड़से मुर्दाबाद का समर्थन, मुझे लगता है कि सम्माननीय सदस्य को भी करना चाहिए और सभी लोगों को करना चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- मुर्दाबाद क्या है ? मुर्दाबाद गाली नहीं है? मैं उस बात पर नहीं जा रहा हूँ कि आप गाली दें या न दें। आप मुर्दाबाद बोलें या न बोलें, मैं उस बात पर नहीं जा रहा हूँ। मैं गांधीवाद की बात कर रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी, आप नाथूराम गोड़से का समर्थन कर रहे हैं क्या ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सब लोग नाथूराम गोड़से को मुर्दाबाद कर रहे हैं इन लोग मुर्दाबाद क्यों नहीं कर रहे हैं। ये उसको गाली थोड़ी है। जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को मारा, उसी पूजा करेंगे क्या ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं गांधीवादी विचार की बात कर रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- प्रतिपक्ष के सम्माननीय सदस्य जी, नाथूराम गोड़से का समर्थन कर रहे है क्या ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जो सारा व्याख्यान गांधी जी की अहिंसा, उनके बताये हुए मार्ग पर है और गांधी जी ने कभी नहीं कहा है कि आप किसी का मुर्दाबाद बोलिए। ये कैसी गांधीवादी विचारधार है ?

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या माननीय नेता प्रतिपक्ष जी नाथूराम गोड़से का समर्थन कर रहे हैं ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय नेता जी, यदि आप गांधी जी को मानते हैं तो एक बार गोड़से को मुर्दाबाद करके बताईये। हिम्मत है तो उल्टा बोलकर बताईये।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी नाथूराम गोड़से के लिए स्पीच दे रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि नाथूराम गोड़से ने जो काम किया, उसको उसकी सजा मिली, उनको फांसी में चढ़ाया गया, उनको फांसी मिली।

श्री कवासी लखमा :- उस समय देश के कानून ने किया किया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- लेकिन माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपको मुर्दाबाद बोलने में क्या समस्या है ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस घटना को हुए 70 साल से ऊपर हो गये, लेकिन आज इनको याद आ रहा है नाथूराम गोड़से। नाथूराम गोड़से को सजा मिली। जो गांधी जी के अनुयायी और मानने वाले लोग हैं। गांधी जी ने कभी ये मार्ग प्रशस्त नहीं किया है कि खून के बदले खून लो। यही गांधीवादी दृष्टिकोण दिखायी दे रहा है और यही दृष्टिकोण से यदि प्रदेश को आगे चलायेंगे तो मुझे कुछ नहीं कहना है। आज के इस अवसर पर...।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तो जिन्ना भी आपके आदर्शवाद है ?

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सम्माननीय नेता प्रतिपक्ष जी किस दृष्टिकोण से चलना चाहते हैं, नाथूराम गोड़से या गांधी जी। पहले इसको क्लियर करें ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज के इस अवसर पर मैं फिर बोल रहा हूँ। जिस बात को गांधी जी ने कहा कि गरीबों का सपना पूरा हो। यदि उनके शौचालय की व्यवस्था की। यदि उनके लिए आजादी के बयार में आज तक हजारों, लाखों लोग ऐसे हैं जिनके सर पर छत नहीं है। यदि बेटी की पढ़ाई की व्यवस्था की, यदि सही मायने में किसी ने एडाप्ट किया है तो इसको माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने एडाप्ट किया है। हम बड़ी-बड़ी बातें करते हैं कई लेखकों ने लिखा है कि समाचारपत्रों में छपेंगे। लेखक भी अपने पृष्ठ में छपवायेंगे। आखिर आपने इतने दिनों में गांधी जी के लिए क्या किया? आपने उनके नाम से कितने संस्थान खोलें ? उनके नाम पर कितने एयरपोर्ट का नाम रखें, राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी के नाम से उनको कहां सम्मानित किया, चूंकि आज हम सब लोग मिलकर गांधी जी की चर्चा कर रहे हैं मैं इस बात को फिर कहना चाहता हूँ कि राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी के कारण, आज इस सदन में हमको बोलने का अवसर प्राप्त हुआ है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये 15 सालों तक शासन में थे तो इन्होंने क्या किया ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि यह देश गुलाम रहता तो शायद यह बोलने का अवसर प्राप्त नहीं होता।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सम्माननीय ने तो जो गांधी जी चरखा चलते थे, उस खादी पर भी अपनी तस्वीर लगा ली और ये गांधी जी के बारे में बात करते हैं।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- अभी तो आप लोग अमितेष शुक्ल जी जिस असहयोग आन्दोलन में बैठे हैं उसकी गंभीरता से चिंता करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले ये वेरीफाई करे कि गांधी जी की विचारधारा का समर्थन करते हैं या नाथूराम गोड़से की विचारधारा का समर्थन करते हैं ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि गांधी जी ने जो संकल्प लिया कि मांसाहार ग्रहण नहीं करना है, शाकाहार बनना है। उन्होंने ऐसी बहुत सारी बातें बतायी हैं। गांधी जी ने अपृश्यता की बात कही, भेदभाव को समाप्त करना है। गांधी जी ने कुष्ट लोगों की सेवा की है और गांधी जी ने शराब बंदी की भी बात कही है। ऐसे तत्व जिससे समाज में विखंडन, विकार पैदा हो, हमको ऐसी चीजों को त्यागना चाहिए। मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहूंगा कि आज गांधी जी की 150 वीं जयंती मना रहे हैं इस अवसर पर मैं चाहूंगा कि मुख्यमंत्री जी शायद इसी सदन में घोषणा करें, गांधी जी के वक्तव्य, विचारों और उनके आदर्शों से प्रभावित होकर, प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा आज हो, इतना कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। बाकी सभी सदस्य आज और कल अपने विचार रखेंगे। आपने जो मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय नेता प्रतिपक्ष जी से पूछना चाहता हूं कि नाथूराम गोडसे के मुर्दाबाद के नारे का समर्थन करेंगे या नहीं करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, यादव जी बैठिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- यादव, मुर्दाबाद, जिंदाबाद कहना चाह रहे हैं तो माननीय नेता जी ने शराबबंदी की मांग की है तो आप बोल दो कि मैं बंद करूंगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- जी, आपकी सारी बातें को सुन रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 15 साल क्या कर रहे थे? (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- नाथूराम गोड़से मुर्दाबाद का समर्थन करेंगे या नहीं करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, यादव जी, बैठ जायें।

श्री विकास उपाध्याय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने यहां दो विचारधारा की बात की है और यहां दोनों विचाराधारा सामने हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, उपाध्याय जी, बैठिये।

श्री रामकुमार यादव :- एक तरफ महात्मा गांधी जी के बारे में बोलते हैं और दूसरी तरफ नाथूराम गोड़से का समर्थन करने की बात करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बैठिये। यह विशेष सत्र है, इसलिए आप इस बात का विशेष ख्याल रखें कि पिछले सत्रों की तरह टोकटाकी न करें। आज गांधी जी के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, उनके आदर्शों,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दया, करूणा पर बात करें। इस तरह की टोकाटाकी न करें। मैं आप सबसे निवेदन करूंगा कि इस सत्र को आप विशेष ही रहने दें। माननीय धर्मजीत सिंह जी।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि आपने गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर पूरे हिन्दुस्तान में पहली विधानसभा होने का गौरव हम सबको प्रदान कराया है। ये ऐसे ही नहीं हुआ है, क्योकि आप गांधी के चिंतन को मानने वाले परिवार से संबंधित हैं, आप कबीर के समर्थक हैं, आपने तकलीफ, मुसीबत, समस्याओं को देखा है तो निश्चित रूप से गांधी जी के लिए आपका प्रेम है और देश के लिए उनके योगदान को देखकर आपने ये जो अवसर दिया, उसके लिए आप पूरे छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से बधाई के पात्र हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं गांधी जी के ऊपर बोलने के पहले श्रीमती देवती कर्मा जी को भी बधाई देना चाहता हूं जो आज के इस सत्र में पहली बार यहां चुनाव जीतकर आई हैं, उपचुनाव में विजय हो करके आई हैं। मैं उन्हें भी बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। (मेजों की थपथपाहट) वह हमारे महेन्द्र कर्मा जी की धर्मपत्नी भी हैं और स्वयं दो बार विधायक हो चुकी हैं, आपको बहुत-बहुत बधाई।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के ऊपर बोलने के पहले स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी को भी नमन करना चाहता हूं कि वह देश के एक महान सपूत थे जिन्होंने गरीबी देखी, जिन्होंने सादगी का जीवन जिया, जिन्होंने ईमानदारी से अपना जीवन जीते हुए देश की खातिर ही अपना प्राण ताशकंद में न्यौछावर किया, ऐसे महान सपूत को भी छत्तीसगढ़ की जनता, अपने दल, विधानसभा के सभी साथियों की ओर से उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी के बारे में सभी लोग बचपन से पढ़ते आ रहे हैं। बहुत ज्यादा विस्तृत बोलने की जरूरत नहीं है। उन्होंने खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन की शुरूआत तब की, जब उन्हें यह अहसास हुआ कि अंग्रेजों की हुकूमत भारतीयों के सहयोग से ही संभव हो पाई है। तभी उन्होंने सोचा कि अगर कुछ चंद अंग्रेज हमारे ही भारतीयों के सहारे राज्य कर रहे हैं तो हम ऐसा क्यों न करें कि हम अपने भारतीयों में देशप्रेम की भावना जागृत करें और उन्हें अग्रेजों के खिलाफ खड़ा कर सकें। स्वदेशी नीति, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। अपने हाथ से काते हुए धागे से उन्होंने कपड़ा बनाया। सरकारी नौकरी छोड़ने का आह्वाहन किया, अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त तगमों को उन्होंने वापस किया और इसका अंत 1922 में चौरी-चौरा कांड के हिंसक प्रदर्शन से हुआ जिसमें गांधी जी बहुत व्यथित हुए। ऐसा नहीं है कि गांधी के प्रदर्शन में हिंसा नहीं हुई थी, उनके भी प्रदर्शन में हिंसा हुई थी और उससे वह अत्यंत व्यथित हुए। इसी केस में गांधी जी को राजद्रोह के मामले में गिरफ्तार किया गया और सन् 1924 में उनको रिहा किया गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सन् 1924 से 1928 तक महात्मा गांधी जी ने सक्रिय राजनीति से अपने को दूर रखा और वे अस्पृश्यता, शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे। अंग्रेजों ने सर जॉन साईमन के नेतृत्व में भारत के लिये एक नया संवैधानिक सुधार आयोग बनाया लेकिन उसमें भारत का कोई भी व्यक्ति नामिनेट नहीं था, उन्होंने इसका विरोध किया । सरकार द्वारा नमक पर कर लगाये जाने के बाद नमक सत्यागृह किया और दिनांक 12 मार्च से 06 अप्रेल तक अहमदाबाद के दांडी से उन्होंने 388 किलोमीटर की पदयात्रा की, हजारों भारतीयों ने इसमें भाग लिया और लगभग उस समय 60 हजार से अधिक लोगों को अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार किया । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत छोड़ो आंदोलन की मांग तीव्र हुई, सन् 09 अगस्त 1942 को मुंबई में भारत छोड़ो आंदोलन का आगाज हुआ, उनकी गिरफ्तारी हुई और सन् 1944 के आसपास ही यह करीब-करीब तय हो चुका था कि अब भारत आजाद होने वाला है इस तरह से हम यह कह सकते हैं कि हमारे देश के बहुत स्वतंत्रता संग्राम सैनानी उस युग में जो भी रहे, जिन्होंने अपना बलिदान दिया, जिन्होंने अपना त्याग दिया, जिन्होंने देश की आजादी की खातिर लड़ाई लड़ी उसमें से सर्वोपरि महात्मा गांधी जी थे और उन्होंने अहिंसक आंदोलन के तहत् अंग्रेजों की सरकार की नींव हिलाकर रख दी । मैं कुछ लोगों के विचार भी रखूंगा । महात्मा गांधी भारत ही नहीं विश्व के ऐसे राष्ट्रनायक हैं जिन्होंने अपने विचार दर्शन से उन्नीसवीं शताब्दी में पूरी मानवता को प्रभावित किया, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में जब भारत परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़ा कराह रहा था उस समय गांधी जी ने अपनी अहिंसा के वैचारिक लाठी को लेकर परतंत्रता की बेड़ियों को न केवल कुचला बल्कि साम्राज्यवादी शक्तियों के सामने सत्य और अहिंसा की ताकत दिखायी। गांधी जी का महान शाश्वत् सत्य है । महात्मा गांधी एक बहुपक्षीय प्रतिभा के स्वामी थे, उन्होंने बहुत सी मानव समस्याओं के बारे में सोचा और तात्कालिक राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों पर एक अस्थायी प्रभाव छोड़ा । एक फ्रांसीसी इतिहासकार और समाजशास्त्री प्रोफेसर लुईस स्मेंसिनगन लिखते हैं कि गांधी जी बहुत साधारण शब्दों को असाधारण शब्द देने में माहिर थे, गांधी जी समय के साथ बदलते थे और उनका मत विकास की प्रक्रिया में रहता था । गांव और भारत । भारत का गांव और गांधी जी, भारत अभी गांव का देश है । आज भी हमारी अर्थव्यवस्था कहीं न कहीं कृषि आधारित है । वे जानते थे कि उनके काल में अधिकांश जनता गांव में रहती थी इसलिये वे गांव के बहुमुखी विकास हेतु औद्योगिकीकरण का विरोध करते थे । मशीनीकरण का विरोध कर हथकरघा का समर्थन भी वे बराबर करते रहे । उनका चरखा आंदोलन भी इसी पर केंद्रित था । गांधी जी ऐसी मशीनों को स्वीकार कर सकते थे जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाये उसे नुकसान न पहुंचाये । भारत के लिये गांधी की आर्थिक अवधारणा पूरी तरह से शांतिवादी है । वे लिखते हैं कि यह सभ्यता ऐसी है कि वह खुद को नष्ट

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कर देगी । मुझे डर है कि औद्योगिकीकरण मानवता के लिये एक अभिशाप सिद्ध हुआ और औद्योगिकीकरण का भविष्य अंधकार में होगा ।

समय :
12:44 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, खादी स्वदेशी चरखे का नारा, कुटीर-उद्योग की बात गांधी जी के लेखों में बार-बार आता है क्योंकि गांव नष्ट होते ही भारत भी नष्ट हो जाएगा । महिलाओं के बारे में गांधी जी का बहुत स्पष्ट विचार था कि दुनिया के सबसे बड़े मुक्तिदाता और स्त्रीवादी चिंतकों में से एक हैं उन्होंने कहा कि मैं दिल से चाहता हूं कि हमारी महिलाओं को पूरी आजादी मिले । उन्होंने लिखा कि अधिकतर महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जाता है स्वास्थ्य सेवा और पोषण आहार उनके लिये दूर की चीज है । हमारे परिवार और समाज में पुरूष और स्त्री के बीच बचपन से ही शुरू होने वाला शोषण अंत तक बना रहता है । यह गांधी जी के कुछ विचार थे । अब मैं आपके समक्ष कुछ और बातों को रखना चाहता हूं । गांधी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, मूलत: कर्मण्यवादी थे । इसलिए उन्हें आधुनिक युग का असाधारण पुरूष, प्रगाढ़ देशप्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता, श्रेष्ठ समाज सुधारक एवं उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ माना जाता है । गांधी जी ने आत्मकथा में लिखा है कि गांधीवाद नाम की कोई चीज नहीं है, न ही मैं अपने बाद कोई सम्प्रदायवाद छोड़ जाना चाहता हूं । मैं इस बात का दावा नहीं करता हूं कि मैंने किसी नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है । मैंने तो केवल शाश्वत सत्यों को अपने नित्य प्रति के जीवन में और समस्याओं पर अपने ढंग से लागू करने का प्रयास किया है । मैंने जो समितियां बनाईं और परिणाम प्राप्त किये, ये अंतिम नहीं हैं । मैं उन्हें कल बदल सकता हूं । सत्य और अहिंसा अनादिकाल से चले आ रहे हैं । मैंने तो केवल अपनी शक्तिभर इनके प्रयोग किये हैं । (सभापति महोदय द्वारा बजर (घंटी) बजाने पर) बंद कर दूं ।

सभापति महोदय :- नहीं, चलने दीजिए । आप जारी रखें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- धर्मजीत भइया, गांधी जी के विचारों पर पूर्णतया चलने वाले व्यक्ति अभी सभापति के रूप में बैठे हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- ठीक है, मैं देख रहा था जब वे यहां बैठे थे तो गांधी जी का प्रवचन बहुत ध्यान से सुन रहे थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय धर्मजीत जी, इधर चार-पांच लोग जो बैठते हैं वे सम्पूर्ण गांधीवादी हैं । खेलसाय सिंह जी, रामपुकार सिंह जी, धनेन्द्र साहू जी, सत्यनारायण जी ।

श्री धनेन्द्र साहू :- आपको कोई संदेह है क्या (हंसी) ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अभी गोडसे की भी चर्चा हुई और गांधी की हत्या की भी चर्चा हुई । एक पाश्चात्य विचारक हैं, स्टैनले जॉन्स । वे लिखते हैं कि हत्यारे की गोलियां महात्मा गांधी और उनके विचारों का अंत करने के लिए चलाई गई थी । किंतु उसका परिणाम यह हुआ कि वे विचार स्वच्छंद हो गए और मानव जाति के थाती बन गए । हत्यारों ने महात्मा गांधी की हत्या करके उनको अमर बना दिया । किसी मानव ने अपने जीवन के आदर्शों का सार, उससे अधिक पूर्ण रूप से कभी नहीं प्राप्त किया । सभापति महोदय, प्रश्न ही नहीं उठता । किसी भी राजनेता को, किसी भी शांतिप्रिय आदमी को, किसी भी देश के ऐसे व्यक्ति को जो जनसेवा में लिप्त हो, अगर उसके ऊपर कोई भी हमला करता है, गोली-बारूद दागता है तो उसकी निंदा होनी ही चाहिए और इस देश का कोई भी सभ्य नागरिक ऐसी घटनाओं की निंदा करेगा । सभापति महोदय, नाथूराम गोडसे इस देश का आदर्श कभी नहीं हो सकते । चाहे राजनीतिक रूप से किसी को फायदा हो या किसी को नुकसान हो । उसने देश के एक फकीर को गोली मारी, चाहे वह किसी भी विचारधारा का हो । ऐसे व्यक्ति को यह देश, जीवन भर क्षमा नहीं करेगा । इसलिए यदि मुर्दाबाद सुन लेने से ही किसी को तसल्ली हो रही हो तो, सभापति महोदय, सदन की गरिमा इस बात के लिए अनुमति नहीं देती कि यहां पर हम मुर्दाबाद के नारे भी लगाएं, क्योंकि यह सदन प्रजातंत्र का पवित्र मंदिर है और आज हम महात्मा गांधी जी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए हम सब यहां इकट्ठे हुए हैं ।

सभापति महोदय, महात्मा गांधी जी ने अपनी आत्मस्वीकृति देते हुए लिखा था कि जब संशय मुझे घेर लेते हैं, जब निराशाएं साकार रूप धारण करके मेरी ओर निहारती हैं, जब मुझे क्षितिज पर एक भी प्रकाश रश्मि दिखाई नहीं देती, तब मैं भगवत गीता का पाठ आरंभ कर देता हूं और मुझे सांत्वना देने के लिए कोई न कोई श्लोक मिल जाता है । गांधी जी ने अपनी आत्म कथा में यह भी माना है कि टालस्टॉय की अनुपम कृति स्वर्ग तुम्हारे अंदर है, इसे पढ़ने से पूर्व उनके हृदय में अहिंसा के विषय में अनेक शंकाएं थीं, पर इसे पढ़ने के पश्चात् उन सभी शंकाओं का निराकरण हो गया और अहिंसा में उनकी आस्था दृढ़ हो गई । कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने भी लिखा है कि मुझे गांधी जी के विषय में महत्वपूर्ण बात यह जान पड़ती है, यद्यपि वे राजनीतिक संगठनकर्ता, लोक नेता एवं नैतिक सुधारक के रूप में श्रेष्ठ हैं तथापि वे मनुष्य के रूप में सबसे श्रेष्ठकर हैं क्योंकि इनका कोई भी पक्ष एवं कार्यकलाप उनकी मानवता को मर्यादित नहीं कर पाता है। इस मनुष्य के गुण महान हैं और वह मनुष्य अपने गुणों से भी अधिक महान जान पड़ता है। गांधी जी के विचार पर एक और राजनीतिक चिंतक हैं। चिंतक पॉल एंड पॉर लिखते हैं गांधी जी के दर्शन में आध्यात्मिकता, राजनीतिक विचार निश्चित रूप से परस्पर गुथे हुये थे और गांधी जी ने स्वयं माना कि मेरे लिए राजनीति सत्ता साध्य नहीं है। सभापति महोदय, गांधी जी ने आर्थिक विचार पर अपने मत व्यक्त किये हैं। गांधी जी के अनुसार एक आदर्श

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

गांव में निम्नलिखित चीजें होनी चाहिए। मैं यह गांधी जी के हिसाब से बता रहा हूं। ढांचे में व्यवस्था, व्यवस्थित सड़क, गलियां नालियां, स्वच्छ मंदिर और मस्जिद, धर्मशाला, छोटा दवाखाना, अपनी जल व्यवस्था, स्कूल एवं अनिवार्य बुनियादी शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, थियेटर और मनोरंजन सुविधाएं, भोजन और कपड़े में आत्मनिर्भरता, अफीम और तंबाकू छोड़कर के वाणिज्यिक फसलें, जंगली जानवरों और लूटेरों के खिलाफ रक्षा, ग्रामिणी रक्षकों की अनिवार्य सेवा, अहिंसा और सत्याग्रह की तकनीक को अपनाते हुए 12 कार्यकारी विधायी और न्यायिक शक्तियों के साथ ग्राम पंचायतों के बारे में गांधी जी ने सोचा है। सभापति जी, और भी बहुत सारी बातें हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि महात्मा गांधी ने इस देश को आजादी दिलायी है। 600 से ज्यादा रियासतों में बंटे हुये देश को भारतमाता बनाने वाला महात्मा गांधी है। हजारों भाषाओं और बोलियों वाले इस देश को एक सूत्र में पिरोने वाला महात्मा गांधी है। महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर जब उस वक्त के उनके बाद के जो बड़े व महान नेता हुए 50 से ज्यादा देशों को उन लोगों ने आजादी दिलायी है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने भी अपने देश के लिए लड़ा और उन्होंने कहा कि वास्तविक वीरता सर्वसम्मति की तलाश नहीं करता, उसे निर्मित करता है। उन्होंने यह भी कहा कि

If you can't fly, then run,
If you can't run, then walk,
If you can't walk, then crawl,
but whatever you do,
you have to keep moving forward.

हमारे जीवन का उस दिन अंत होना शुरू हो जाता है, जिस दिन हम उन मुद्दों के बारे में चुप हो जाते हैं जो आम समाज के लिए मायने रखता है। सभापति महोदय, Johannesburg आपके साथ मैं गया था। साउथ अफ्रीका के दौरे में आपके संग था। हम 8 साल पहले गये थे। आपके साथ ही गये थे। Johannesburg में महात्मा गांधी की मूर्ति के सामने में हम सब नतमस्तक हुये थे। वहां पर उनकी जो मूर्ति लगी है, वह कोई फकीर वाली मूर्ति नहीं है। उनकी मूर्ति वहां पर एक बहुत बड़े वकील के ड्रेस में बनी हुयी मूर्ति है। महात्मा गांधी किसी गरीब घर के आदमी नहीं थे। महात्मा गांधी दीवान के बेटे थे। महात्मा गांधी बैरिस्टर थे। वे चाहते तो ऐश और आराम की जिंदगी जीते, लेकिन गांधी ने इस देश के गरीबों के दर्द को देखा और इसलिए उन्होंने उन गरीबों के समान ही अपने आपको और अपने जीवन को समर्पित किया। किसी को सीख देने के पहले अपने ऊपर उसे अमल करना चाहिए, तब उस सीख का असर दूसरों के ऊपर होता है। गांधी तो इस दुनिया में एक ही है, पर गांधी जैसे बहुत से लोग हुये। उसे मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला, विनोवा भावे और हमारे यहां पर मेरे युवावस्था की बात मुझे याद है क्रांति कुमार भारती एक फ्रीडम फाइटर होते थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- भैया, आप अभी भी युवा हैं। युवावस्था नहीं है क्या ?

श्री धर्मजीत सिंह :- क्रांति कुमार भारती कलेक्ट्रेट में झंडा फहराये थे। उनके कान में गर्म तेल डाला गया और उन्हें कोड़े से मारा गया। मैं उनको बहुत नजदीक से देखा हूं, मिला हूं, बैठा हूं। उनके नाम से पंडरिया में क्रांतिसागर जलाशय है। बिलासपुर में एक क्रांति नगर है। सभापति महोदय, प्रोफेसर पी.डी. खेड़ा की बात कर रहे थे। मैं 25 साल से ज्यादा से उनसे जुड़ा हुआ हूं। प्रोफेसर खेड़ा अचानकमार टाइगर रिजर्व मेरे विधानसभा के लमनी के गांव में रहते हैं। मेरा दावा है कि वे गांधी तो नहीं हो सकते, लेकिन वे गांधी से कम भी नहीं थे। आप उनकी कुटी देखने जाइए। शायद, गांधी जी का आश्रम उनसे बहुत अच्छा रहा होगा, उसके कुटि में घुसकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि एक घंटे भी वहां रह सके। वहां उसने अपनी जिन्दगी के 30 साल काटे, गरीबों की सेवा करते हुए काटे। अध्यक्ष महोदय, मैं ऐसे खेड़ा को ही याद करता हूँ।

माननीय सभापति महोदय, गांधी जी स्वच्छता का नारा दिए। जो अच्छा काम करे, गांधी जी के प्रति काम करे, उसकी तारीफ भी होनी चाहिए। मोदी जी ने स्वच्छता का संदेश दिल्ली से दिया और उसका परिणाम यह हुआ कि पूरे देश में स्वच्छता एक जन आंदोलन बना है। हम सभी सरकार से कहना चाहते हैं कि अगर गांधी जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करना है, तो उस कार्यक्रम को सरकारी कार्यक्रम मत रखिये, जन आंदोलन बना दीजिये। गांव-गांव में उस आंदोलन का प्रचार करिये। जब आप सरकार में बैठे हैं, आप मंत्री हैं, आप विधायक हैं, आप नेता प्रतिपक्ष हैं, तो उस अपील का जनता के बीच असर होता है। जब प्रधानमंत्री जी हाथ में झाड़ू पकड़कर झाड़ू लगाये, मुख्यमंत्री लगाये, मंत्री लगाये, विधायक लगाये, तो आम जनता में भी अवेयरनेस आया और सफाई में लोग लगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, चरखा। आप बुनकरों की क्या स्थिति है ? मैं आज ही अखबार में पढ़ रहा था कि खादी भण्डार के खादी कम बिक रहे हैं, क्यों ? सभापति महोदय, इसका जवाब कौन देगा ? खादी का प्रचलन सरकारी दफ्तरों में क्यों नहीं बढ़ाया जा रहा है ? अगर हम गांधी को श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो खादी को प्रमोट क्यों नहीं किया जा रहा है ? खादी के लिए बजट का प्रावधान क्यों नहीं किया जा रहा है ? बुनकरों और हथकरघा चलाने वालों की छूट की व्यवस्था क्यों नहीं हो पा रही है ? सभापति महोदय, यह करना पड़ेगा। अगर हम अपने गांधी को, अगर अपने भारत के गांधी को, अगर हम अपने छत्तीसगढ़ की धरती में आए हुए गांधी को श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, तो उनके बताए हुए छोटे-छोटे कामों को देखना पड़ेगा। सभापति महोदय, गांधी जी ने तो कहा है कि शराब समाज के लिए घातक है। फिर, गोड़से की बात तो आ गई, अब शराब के बारे में किनसे पूछे ? सभापति महोदय, अंग्रेजों ने भी शराब नहीं बेची थी। 1947 के पहले, सौ साल का इतिहास निकाल लीजिये, अंग्रेज सरकार ने भी शराब बेचने का जघन्य पाप नहीं किया था। अब यह यक्ष प्रश्न आपके सामने है, विचार करियेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय सभापति महोदय, अहिंसा। अगर हम अहिंसा मानते हैं, तो आज अपील करियेगा न। आज गांधी जी के इस पावन 150वीं जयंती पर हमको सदन से अपील करना चाहिए कि हमारा प्रदेश सबसे ज्यादा हिंसा से ग्रस्त है। नक्सली हमलों से आघात हमारे प्रदेश को लगा है। हमारे लोग परेशान हैं। हम गांधी जी के जयंती के इस अवसर पर अपील करते हैं कि नक्सली हथियार छोड़े, बातचीत के लिए तैयार हों, सरकार बात करें। महात्मा गांधी जी भी अंग्रेजों से बात करते थे। गोलमेल कान्फ्रेंस में भाग लेने जाते थे। सब नेता बैठते थे। आप उनसे बात करिये। काहे को हिंसा ? गांधी के देश में खून की क्या जरूरत ? सभापति महोदय, इसलिए ये बेबसी और लाचारी में बहने वाले खून को रोकने के लिए भी आज गांधी जयंती के अवसर पर सरकार और नेता प्रतिपक्ष दो बड़े जिम्मेदार लोगों की तरफ से अपील होना चाहिए कि वहां पर वह करे। गांधी जी के नाम से कहीं मेडिकल कालेज है ? गांधी जी के नाम से कौन सी बड़ी संस्था है, जरा बतायें ?

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- भैय्या, पहले मनरेगा चलता था। पहले महात्मा गांधी रोजगार गारन्टी चलता था, जिसको नरेगा कर दिए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- बहन जी, मैं दिल्ली का मामला नहीं पूछ रहा हूँ। छत्तीसगढ़ की विधान सभा की बात कह रहा हूँ। मैं तो सामने बैठे हुए लोगों से पूछ रहा हूं, हमारे सम्मानित मंत्रियों से पूछ रहा हूँ कि कहां है महात्मा गांधी ? कौन सी संस्था का नाम है महात्मा गांधी ? सभापति महोदय, अगर इस सरकार में हिम्मत है तो आज ही महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए इस सदन में यह निश्चित किया जाना चाहिए कि छत्तीसगढ़ की जो नई विधान सभा भवन बनेगी, उसका नाम महात गांधी विधान सभा भवन होगा। यह मेरी आप सबसे मांग है। सभापति महोदय, गांधी के बताये रास्ते पर चलेंगे तभी कल्याण होगा। आज पूरा देश, पूरी दुनिया हिंसा से ग्रस्त है। हम लोग रोज टेलीविजन में देख रहे हैं कि पड़ोसी देशों में एटम बम फोड़ने की धमकी दी जा रही है। एक लंगोटी वाले ने अंग्रेजों को हरा दिया। हम अपने देश की हिंसा नहीं रोक पा रहे हैं। गांधी जी के सिद्धांत हमारे लिए आवश्यक है। गांधी जी जैसे सादगी से जीवन जीते थे, मितव्ययिता बरतते थे, पारदर्शिता रखते थे ।

समय :
1:00 बजे

सभापति महोदय, अगर उस दिशा में हम सब मिलकर चलने की कोशिश करेंगे तो निश्चित रूप से हमारा देश शांतिपूर्ण देश, बहुत ही तरक्की करने वाला देश और महात्मा गांधी के प्रति सच्ची श्रद्धा देने वाला देश साबित होगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

खाद्यमंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- सभापति महोदय, आदरणीय, आपसे निवेदन है । सादगी से जीवन जीने के लिए उस पक्ष के साथियों से अनुरोध करें कि मोदी जी भी लंगोटी पहनें । जो सूट पहन रहे हैं, उसकी जगह कुछ लंगोटी पहनें तो पूरे देश में एक मैसेज जाएगा ।

समय :
1.01 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आप नेहरू जी से सीख लेना । नेहरू जी ने गांधी जी के अक्षरश: विचारों का पालन किया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके संस्कृति का ज्ञान बहुत अच्छा है । बहुत अच्छे संस्कृति मंत्री हो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको मालूम है कि सूट के अंदर में लंगोटी पहनते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके संस्कृत का ज्ञान और गांधी जी पर आपका ज्ञान बहुत अच्छा है ।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, गांधी जी को मानना अलग बात है, गांधी जी का मानना अलग बात है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- खैर, अब किसको लंगोटी पहनना चाहिए, नहीं पहनना चाहिए, मैं उस विषय में नहीं जाता । जीवन में अहिंसा सिर्फ बोली से नहीं होती, अहिंसा वाणी से भी होती है । अब कोई किसी को कह दे कि अधिकारियों को जूता मारो तो ये भी अहिंसा है । अगर कोई कह दे कि कलेक्टर, एस.पी. का कालर पकड़ो तो ये भी हिंसा है । मंत्री जी, इस सबको पहले सोचो । मोदी को या हमको या इनको लंगोटी मत पहनवाओ और लंगोटी पहनने से सादगी नहीं होती ।

श्री अमरजीत भगत :- धर्मजीत भैया, इधर वाले तो मान लीजिए कि हंसी मजाक में कह भी दिए, उधर वाले तो सीधे सांसद और विधायकों में सदन में जूतर पैजर देखे हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, मैं श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आपको एक बार पुन: धन्यवाद देता हूं और अपनी बात समाप्त करता हूं । आशा करता हूं कि इस पर आप लोग विचार जरूर करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- भोजन अवकाश के तुरंत पश्चात् विधान सभा परिसर स्थित सेन्ट्रल हॉल में माननीय सदस्यों का समूह चित्र लिया जाएगा । सभी माननीय सदस्य समूह छायाचित्र हेतु कृपया सेन्ट्रल हॉल में अपना नीयत स्थान ग्रहण करें ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भोजन के पश्चात् अपराह्न 3.00 बजे से मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान, एपीएल कार्ड वितरण, मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना, मुख्यमंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना, मुख्यमंत्री वार्ड कार्यालय योजना का शुभारंभ एवं माननीय सदस्य श्री दलेश्वर साहू द्वारा निर्मित नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी योजना के प्रचार-प्रसार के लिए डिजीटल कार्ड का विमोचन विधान सभा परिसर स्थित डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी प्रेक्षागृह में किया जाएगा ।

सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया कार्यक्रम में उपस्थित होने का कष्ट करें ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा (क्रमश:)

श्री मोहन मरकाम (कोण्डागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, देश ही नहीं, बल्कि विश्व देश के महान् चिंतक मुर्धन्य समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूज्य महात्मा गांधी जी के 150वीं जयंती मना रहा है । अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से तथा सम्माननीय सदस्यों की ओर से आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने दो दिनों का विशेष सत्र बुलाकर हम सभी सम्माननीय सदस्यों को महात्मा गांधी जी की विचारधारा, उनके दर्शन-चिंतन को समझने का अवसर दिया, इसके लिए आपको दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष जी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी उल्लेखनीय भूमिका रही है । वे स्वाधीनता संग्राम, विचारक, नेता, समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक चिंतन को नया मोड़ देने वाले सक्रिय राजनीति एवं विचारशील चिंतक थे । दक्षिण आफ्रीका से प्रारंभ हुए इनका विद्रोही व्यक्तित्व भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान पूर्णत: निखरा । वे सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आन्दोलन जैसे मौलिक आन्दोलनों के प्रणेता रहे हैं। गांधी जी के करिश्मात्मक व्यक्तित्व तथा उनके विचारों का न केवल भारत में, बल्कि विश्व स्तर पर व्यापक प्रभाव पड़ा । उनके विचार अथवा सुव्यवस्थित न होकर प्रयोगात्मक रूप में उभरे । आत्मनिर्भर ग्राम गांधी जी ने दृढ़ता से कहा था कि जब तक हमारे गांव उपेक्षित व अंधकारपूर्ण रहेंगे, भारत कभी भी समृद्ध नहीं हो सकता । गांधी जी का उद्देश्य था कि भारत की गरीबी का समूल उन्मूलन हो तथा भारत एक आत्मनिर्भर तथा स्वाभिमानी राष्ट्र बनें । छत्तीसगढ़ की माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार महात्मा गांधी जी के सपनों को, उनके दिखाये रास्तों को, उनके अनुसार आगे चल रही है । ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर विशेष जोर दिया जा रहा है । माननीय अध्यक्ष जी, जो छत्तीसगढ़ राज्य की सरकार जो नई परिकल्पना के साथ आगे बढ़ रही है,गढ़बो नवा छत्तीसगढ़, माननीय अध्यक्ष जी, जो योजनायें बना रही है, आज नीति आयोग, अन्य सूबों की सरकार सात समन्दर पार आज संयुक्त राष्ट्र संघ भी छत्तीसगढ़ सरकार की अगर तारीफ कर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रही है तो महात्मा गांधी जी के जो सपने हैं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का जो उन्होंने सपना देखा था, उसी रास्तों पर हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार, आगे बढ़ रही है । माननीय अध्यक्ष जी, आज विश्व चिन्तित है । नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी, का जो कान्सेप्ट है, अगर आज अगला विश्व युद्ध होगा तो पानी को लेकर होगा । आज नरवा को पुर्नजीवित करने का जो संकल्प छत्तीसगढ़ सरकार ले रही है, जो पानी को बचाने का संकल्प ले रही है, आज रायपुर जैसे शहर में 500 फीट से नीचे पानी चला गया है, कहीं न कहीं, त्राहिमाम-त्राहिमाम पानी को लेकर हो रहा है । आज सरकार सोच रही है, पानी कैसे बचे । नदियां पुर्नजीवित कैसे हो, उसके लिए काम कर रही है। माननीय अध्यक्ष जी, हिन्दू धर्म में जो माता का दर्जा दिया गया है, मां को संरक्षण करने का जो बीड़ा हमारी भूपेश बघेल जी की सरकार ने उठाया है, वह तारीफेकाबिल है । घुरवा और बाड़ी जो हमको मिल सके, शुद्ध फल-फूल मिल सके, आज इस योजना का पूरे विश्व में लाभ मिलेगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूरे देश में मंदी है । अगर आज छत्तीसगढ़ सरकार की योजनाओं के कारण छत्तीसगढ़ में मंदी का असर नहीं पड़ा है । इस सदन से कहीं न कहीं सरकार को, भूपेश साहब के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो सरकार की योजनाओं के कारण छत्तीसगढ़ में मंदी का असर नहीं हुआ है । माननीय अध्यक्ष जी, हमारे अन्य साथियों ने कहा कि लाल क्रान्ति, कहीं न कहीं छत्तीसगढ़ के लिए चिन्ता का विषय है । लाल क्रान्ति के कारण आज बहुत से क्षेत्र में हमारे रहवासियों को बहुत सी तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है। मगर जब से भूपेश बघेल जी की सरकार बनी है, हर स्तर पर लाल क्रान्ति, लाल आतंक से, कैसे छुटकारा मिले, उसके लिए सरकार लगातार काम कर रही है । उसके लिए योजनायें बना रही है, जो गांधी जी ने सपना देखा था, अहिंसा छोड़कर बातचीत का जो रास्ता, हमारी सरकार ने विकास के लिए अपनाया है, कहीं न कहीं उसका लाभ अंदरूनी क्षेत्रों में, बस्तर, सरगुजा, जैसे क्षेत्रों में लाभ मिल रहा है। विकास, निर्माण और प्रगति के लिए जो योजनायें हमारी सरकार बना रही है, उसका लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में, गांवों में सीधा-सीधा उसका लाभ मिल रहा है, माननीय अध्यक्ष जी । माननीय अध्यक्ष जी, आर्थिक चिंतन । गांधी जी की अर्थव्यवस्था में मानववाद और सदगुण प्रवृत्तियों को प्राथमिकता दी गई है । वे प्रत्येक कार्य और व्यवस्था को समान रूप से महत्वपूर्ण मानते थे । श्रम आधारित जीवन को ही सर्वोच्च जीवन की संज्ञा देते थे । आर्थिक समानता को गांधी जी ने अहिंसापूर्ण स्वराज की चाबी बताते हुये कहा कि आर्थिक समानता का अर्थ है पूंजीपतियों और मजदूरों के बीच झगडों को हमेंशा के लिए मिटा देना । आर्थिक समानता के लिए उनका मानना था कि विशालकाय कारखानों के चक्के चलाने की अपेक्षा गांवों की हर झोपड़ी में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति और शहरों के लिए भी माल तैयार करने वाले कुटीर उद्योगों की स्थापना को अधिक श्रेयकर मानते थे । हमारी माननीय भूपेश बघेल सरकार, जितनी भी योजनायें, हमारी स्व-सहायता समूह के माध्यम से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुर्नजीवित करने के लिए और लघु एवं कुटीर उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन देकर हमारी भूपेश बघेल सरकार काम कर रही है । इससे कहीं न कहीं लोगों को रोजगार मिल रहा है। लोग आत्मनिर्भर बन रहे हैं, उसका लाभ हमारे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जो मजबूती देने में हमारी सरकार काम कर रही है, उससे लोगों को भी रोजगार मिल रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, धर्म के बारे में गांधी जी कहते थे कि वे धार्मिक मोक्ष प्राप्त करने के लिए हैं किंतु सन्यासी नहीं। गांधी जी के अनुसार सच्ची धार्मिक प्रवृत्ति का अर्थ है कि मनुष्य स्वेच्छा से स्वधर्म को अंगीकार कर ले और उत्साह के साथ उसका पालन करे। धर्म मनुष्य को ईश्वर से और मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। धर्म केवल निजी शुद्धिकरण का साधन नहीं है अपितु वह एक अत्यधिक शक्तिशाली सामाजिक बंध है। गांधीजी सत्याग्रह आंदोलन के द्वारा सत्य की स्थापना करना चाहते थे। इसके तहत उन्होंने विरोधी पर भी प्रहार करने तथा उसे दुख पहुंचाने के बजाय स्वयं को कष्ट देने के माध्यम से मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करना संभव बताया। अध्यक्ष जी, सत्याग्रह का अर्थ सत्य के प्रति आग्रह अर्थात आत्मशक्ति, प्रेम, भक्ति और सत्यशक्ति का आग्रह। यह एक ऐसा शब्द है जो सामाजिक तथा राजनैतिक संघर्ष खासकर गांधीवादी दृष्टिकोण को सूचित करता है। सत्याग्रह केवल सामूहिक संघर्ष और प्रतिकार की पद्धति नहीं है यह व्यक्तिगत और घरेलू संघर्ष का भी आत्मसंयम द्वारा समाधान प्रस्तुत करना है। सत्याग्रह शब्द केवल संघर्ष और प्रतिकार की ही सूचना नहीं बल्कि रचनात्मक कार्यों का भी सूचक है। सत्याग्रह, अहिंसा का मार्ग यह एक असीमित एवं अपरिमित अवधारणा सत्याग्रह के लिए वैधानिकता का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ने लक्ष्य प्राप्ति के लिए दो मार्गों पर चलने को कहा था-सत्यनिष्ठा, सत्य विरोध। आज जब गांधी जी की बात होती है, सविनय अवज्ञा स्वतंत्रता और कानून में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न है। गांधी जी के अनुसार इस साधन का प्रयोग तभी श्रृजनात्मक और जीवनप्रद हो सकता है जब अवज्ञा की अपेक्षा उसके विशेष सविनय पर अधिक जोर दिया जाए। उनका मानना था कि सविनय अवज्ञा जो कि मेरा अस्त्र है इसमें असहयोग का अंतिम चरण का जिसमें खतरा भी अधिक होता और सावधानी की भी अधिक आवश्यकता, इसका प्रयोग अंतिम अस्त्र के रूप में किया जाना, सन् 1930 में नमक कानून का उल्लंघन, सविनय अवज्ञा का सफल उदाहरण है। गांधी जी का मत था कि सरकार का आधार उसकी शक्ति जनता की निष्क्रिय सम्मति नहीं बल्कि उसका सक्रिय सहयोग है। यदि राजनीतिक व्यवस्था को जनता का सहयोग नहीं मिलेगा तो राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह पंगू और शक्तिहीन हो जायेगी और उसका अंत हो जायेगा। यदि सरकार जनता की भावनाओं के अनुकूल चलती है तो सरकार के साथ जनता द्वारा सहयोग करना, उसके अधिकार हैं और कर्तव्य भी। गांधी जी के अनुसार अन्याय पर आधारित कानून को हमें स्वीकार नहीं करना चाहिए क्योंकि यह गुलामी की निशानी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और धर्म के खिलाफ है। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के द्वारा John Ruskin की पुस्तक Unto This Last का गुजराती भाषा में अनुवाद किया गया और उसका नाम सर्वोदय रखा गया। इस पुस्तक में लिखी बातों ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। सर्वोदय से तात्पर्य सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास जो कि माननीय भूपेश बघेल जी की 9 महीने की सरकार लगातार छत्तीसगढ़ के ढ़ाई करोड़ जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का काम कर रही है। सर्वोदय, इसका आधार होगा कि सभी व्यक्ति परस्पर प्रेम से बंधे होंगे, उनमें कोई भेदभाव नहीं होगा। राजा और किसान, हिन्दू तथा मुसलमान, छूत तथा अछूत, गोरे तथा काले, अपराधी व संत सभी बराबर होंगे। कोई भी दल अथवा व्यक्ति का शोषण नहीं होगा। सर्वोदय समाज में सभी समान होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को उनके परिश्रम का उचित प्रतिफल मिलेगा। सबल व्यक्ति समाज में निर्बल व्यक्तियों की रक्षा तथा उनकी संरक्षता का कार्य करेंगे। इस प्रकार सभी व्यक्ति सबका भला करने का सहायक होगा। माननीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व्यक्ति नहीं, अपितु एक विचारधारा थे, एक आडियोलॉजी थे। मनुष्य अपने आपमें समस्त परिस्थितियों के अपना उद्धार करे, अपनी स्वरूप को कभी गिरने न दे, क्योंकि जीवात्म ही अपने मित्र और अपनी शत्रुगीता तथा अक्षयपात्र में इस बात का उल्लेख है। भारतवर्ष में नहीं अपितु विश्व बिरादरी गांधी जी को राष्ट्रपिता के रूप में सम्मान मिलता है। महात्मा गांधी विश्व विभुति थे, उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था, भारत स्वतंत्रमुखी, अनुउपलब्धियों से एकमात्र थी, भारतीयता स्वतंत्रता की खासियत यह थी कि वह अहिंसक और उस समय के सबसे ज्यादा ताकतवर और साम्राज्य के खिलाफ थे। माननीय अध्यक्ष जी, कहावत भी है, इंग्लैण्ड का सूरज कभी डूबता नहीं था....।

श्री सौरभ सिंह :- मोहन मरकाम जी सुनाई दे रहा है ठीक से।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पांच मिनट। हमारी सरकार गांधी जी के सपनों का छत्तीसगढ़ बनाने का जिस निर्णय के साथ आगे बढ़ रहा है...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, कान से सुनाई नहीं दे रही है तो कान से निकाल लें।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, आजादी के 70 वर्षों में भी प्रजातंत्र की कई विकृतियां आ गई, अब विकट रूप धारण कर लिया है। आदमी आदमी का दुश्मन हो गया है।

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना ।

हिन्दी हैं, हमवतन हैं, हिन्दोस्ता हमारा है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं दो मिनट में अपनी बात कह रहा हूं। आज देश में

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जो हालत है, जो धर्म के आधार पर, जाति के आधार पर, सम्प्रदाय के आधार पर जो सरकारें बांटने का प्रयास कर रही है। मगर जो गांधी जी के सपनों को साकार करने का काम हमारी सरकार माननीय श्री भूपेश बघेल जी की सरकार लगातार कर रही है। आज हम देखते हैं, आज जो बातें आ रही है देश की महान सभ्यता, महान संस्कृति चाहे मोहन जोदड़ो की हड़प्पा की संस्कृति हो या नालंदा तक्षशिला विश्व के लोग ज्ञान अर्जन करने के लिए इस देश में आते थे। गांधी जी का सपना था, भारत की गौरवशाली इतिहास के अनुसार आजादी के बाद यह देश उस ओर बढ़े, उस प्रगति की ओर बढ़े, गांधी जी का सपना था। गांधी जी देश भर में उसी के रूप में देखना चाहते थे। आज जो हमारी सरकार माननीय श्री भूपेश बघेल जी की सरकार जो सपनों का भारत, गांधी जी के सपनों का भारत जो चाहते थे उनके अनुसार काम कर रही है। गांधी जी के प्रिय भजन हमें सीखा देते हैं -

"वैष्णव जन तो तेन कहिये, जे पीड़ परायी जाणे रे ।
पर दु:ख उपकार करे, तो ये मन अभिमान न आणे रे" ।

उनके प्रिय भजन आज भी हमारे कानों में गूंजते हैं।

"रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम ।
ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान"।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष जी, आज जो देश में हालत है, हमारे मुख्यमंत्री जी ने जो विचारधारा देश को तोड़ने का, देश को मरोड़ने का काम कर रही है, जो गोडसे के विचारधारा के लोग हैं उनको भी आज मैं- देर आये दुरस्त आये, आज गांधी के चिंतन के गांधी के विचारधारा के आज देर से सही आज 70 साल बाद उनको भगवान ने सदबुद्धि दिया और गांधी जी के विचार धारा को मानने लगे हैं। माननीय अध्यक्ष जी आपने बोलने का अवसर दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- जी, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं माननीय सदस्यों से एक निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे 47 सदस्य इस अवसर पर अपनी बात रखना चाहते हैं। सब लोग अपनी बात रख सकें, इतना ध्यान आपको भी देना पड़ेगा। मैं आप सबको निवेदन करना चाहता हूं कि वह बात फिर न दोहराई जाये जो एक बार हो चुकी है। आदरणीय अजय चंद्राकर जी।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, लंच के बाद कर लेते हैं। 10 मिनट पहले लंच कर लें। आप जैसा कहें।

अध्यक्ष महोदय :- सत्यनारायण शर्मा जी। आप अभी भाषण देना चाहेंगे ? अभी तो 12-13 मिनट हैं। शुरू हो जाइये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आपने 150वीं वर्ष में विशेष सत्र

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आहूत किया उसके लिए आपको सदन के नेता को, सदन के नेता प्रतिपक्ष को मैं बधाई देता हूं। मैं इस बात को बोलने के पहले स्वीकार करता हूं कि मेरी हैसियत, मेरी कद, मेरी क्षमता, मेरी अध्ययन कोई भी चीज महात्मा गांधी की आलोचना, महात्मा गांधी की दृष्टि के खंडन मंडन के लायक नहीं है। मैं वही बात कहना चाह रहा हूं जो गांधीवांगमय में या विभिन्न देश, विदेश के लोगों ने घटनाक्रमों में लिखा है, विचार व्यक्त किया है। सहमति, असहमति, यदि गांधी जी के वांगमय को पढ़ें तो जितनी उनकी विचारधारा आती है उतना महत्वपूर्ण शब्द असहमति भी है। अब असहमति को परिभाषित करने के अपने-अपने तरीके हैं कि कौन असहमति को किस तरह से परिभाषित करता है। गांधीवांगमय में एक शब्द बहुत आता है। आपने भी जो किताब दी है, उसमें वह शब्द आता है हरिजन शब्द। उधर एकाध विद्वान सदस्य बैठे हैं यदि जब ये उपयोग करूंगा तो उसको अनुमति दी जाए क्योंकि वह उसी में हल्ला कर देंगे, नहीं तो। क्योंकि गांधी जी ने किन शब्दों में इन चीजों को उल्लेखित किया है, उससे मतलब नहीं है। इसलिए मैं क्षमा मांगकर, अनुमति लेकर इन बातों को कहूंगा। पिछली सदी में अल्बर्टआईस्टिन के बारे में कहा जाता था कि वह अपने दिमाग का 5 प्रतिशत हिस्सा उपयोग किये थे, ऐसा माना जाता है। उन्होंने जो गांधी जी के बारे में कहा था। बहुत मुमकिन है कि आने वाली पीढ़ियां शायद ही इस बात पर विश्वास करे कि हाड़ मांस का एक ऐसा इंसान इस धरती पर मौजूद था। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ दु:ख के साथ भी खड़ा हूँ। महात्मा गांधी का मतलब कुरूद और धमतरी जिला होता है। आपके ग्रंथ में मैंने सचिव साहब को इस बात को अवगत करवाया था कि आपने जिन चीजों से भी इसको लिखा होगा। एक परिशिष्ट महात्मा गांधी जी की छत्तीसगढ़ की यात्रा के बारे में उसका उल्लेख होना था। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से भी यह अपेक्षा कर रहा था कि जब छत्तीसगढ़ में महात्मा गांधी जी आये तो उसके बारे में कुछ कहेंगे। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता था कि छत्तीसगढ़ का क्या योगदान महात्मा गांधी जी के कार्यक्षेत्र में, विचारधारा पर और उन पर प्रभाव है। छत्तीसगढ़ का समकालीन इतिहास में एक बड़ा योगदान महात्मा गांधी के उद्देश्यों और आन्दोलनों पर भी रहा है। पर दु:ख इस बात का रहा कि जो आत्म गौरव, जिस बात को मैं बोलता था कि छत्तीसगढ़ का स्वाभिमान, यह पोला, तिजा, हरियाली की छुट्टी से नहीं होगा। ये एक अव्यव मात्र है। किसी भी चीज की छुट्टी...।

श्री बृहस्पत सिंह :- इतने जोर-जोर से गुस्से में नहीं बोलने के लिए बोले हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी के यहां तीन बंदर हैं...(व्यवधान)।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घोर आपत्ति है माननीय सदस्यों को बंदर बोला जाए। ये बहुत गंभीर बात है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के तीन बंदर की बात कर रहे हैं। संसदीय कार्यमंत्री जी...।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- इन्होंने संसदीय मंत्री जी का बोला है। घोर आपत्तिजनक है माननीय सदस्यों को बंदर बोलना।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो लोग जीतकर आये हैं उनको बंदर बोला, उनसे माफी तो मंगवा दें।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्यों ? गांधी जी के तीन बंदर हैं, उसमें क्या विलोपित करने की बात है?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको यह भी बताना चाहूंगा कि आज तक के अध्ययन में यह माना जाता है कि महात्मा गांधी जी के तीनों बंदर राजनांदगांव जिले से खुदाई में प्राप्त हुए। छत्तीसगढ़ में यह भी माना जाता है।

श्री कवासी लखमा :- राजनांदगांव से यहां कौन है? वे नहीं हैं इसलिए यह राजनांदगांव बोल रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मुझे क्षमा करियेगा। मैं अपनी पूरी बात करकर ही बैठूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ये पूरे गांधीवांगमय में छत्तीसगढ़ के साथ अन्याय, छत्तीसगढ़ का योगदान, पूरा कहीं नहीं है। इसके लेखन की जरूरत है। इसको पीढ़ी को बताने की जरूरत है। ये लोग गांधीवाद और गोड़से, फूलझड़ी छोड़ दी गई, ये फूलझड़ी भर से गांधीवाद को नहीं समझ पायेंगे या छत्तीसगढ़ में जो गांधी जी के कार्यों पर प्रभाव डाला। एक छोटा सी बात बताना चाहता हूँ कि 20 नवम्बर, 1920 को छत्तीसगढ़ पहली बार महात्मा गांधी आते हैं। पहली बार किसके बुलावे से आते हैं? नारायण, पंडित सुन्दरलाल शर्मा। मैं जिस विधान सभा से आता हूँ। चंदसूर गांव के मालगुजार, 36 गांव को छोड़, उनके 84 गांव। जब मुख्यमंत्री जी किसी बात की घोषणा करते हैं तो उनके परिवार वालों से मिलिए और आज की स्थिति में पता करिये कि सुन्दरलाल शर्मा जी का परिवार कैसा है? दूसरा शख्स कुरूद की धरती का ही लाल, जब रायपुर सेन्ट्रल जेल में जाओगे तो वहां पर बोर्ड में लिखा है नारायणराम लेखा वाले। ये जो लोग थे वे कंडेल सत्याग्रह के लिए लाये। अब यहां से मेरी बात शुरू होती है। दूसरी बार महात्मा गांधी जी यात्रा होती है वर्ष 1933 में 22 नवम्बर से 27 नवम्बर तक, 5 दिनों के लिए।। वह आपके बिलासपुर जिले से जाते हैं। वर्ष 1917-18 में चंपारण्य, जब वर्ष 1915 में दक्षिण अफ्रीका से आये तो उन्होंने पहला आंदोलन चंपारण का किया, वहां पंडित रामकुमार शुक्ला जी ले गये। वहीं से उनको 'बापू' की उपाधि मिली। माननीय अध्यक्ष महोदय, सन् महत्वपूर्ण है। इस देश का दूसरा किसान सफल आंदोलन 1920 में हुआ। बारडोली का जो 1928 में तीसरा आंदोलन किसानों का हुआ जिसमें महात्मा गांधी को 'सरदार' की उपाधि मिली। दूसरी बार जब 1933 में छत्तीसगढ़ आये।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष जी, आज गांधी जी पर चर्चा हो रही है

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

और गांधी जी कभी भी इतना जोर-जोर से भाषण नहीं दिया करते थे। कुछ तो उनके विचार को आत्मसात करिये।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विशेष सत्र है और बोलने वालों की संख्या अधिक है, सबको अवसर मिलेगा। मुझे लगता है कि इसमें उनको जवाब देने की आवश्यकता नहीं है, उनको अवसर मिलेगा तो बात कर लेंगे। हर बात में खड़ा होना और खासकरके मंत्री, ये ठीक नहीं है। आप आसंदी से निर्देशित करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- बोलने दीजिए, ये गांधी जी के संस्कारी अपने आप को कहते हैं, अच्छा संस्कार है, बोलने दीजिए, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं जो महत्वपूर्ण बात कहने वाला हूं गांधी जी जब दूसरी बार 1933 में छत्तीसगढ़ आये, माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी उन्होंने कहा कि धमतरी दूसरा बारडोली है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस शब्द में आपत्ति है।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष जी, अमेरिका के राष्ट्रपति हमारे देश के प्रधानमंत्री को देश का पिता बोल दिया।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह ठीक नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह गांधावादियों को अकल की बात समझ में नहीं आयेगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, धमतरी को दूसरा बारडोली कहा गया। मैं छत्तीसगढ़ के योगदान में आपसे कहूंगा कि जब छत्तीसगढ़ का किसी गांधी वांगमय में पुर्नलेखन हो, छत्तीसगढ़ की दो यात्राओं का उल्लेख नहीं है, छत्तीसगढ़ का योगदान देश नहीं जानता। बारडोली को बोला जाना चाहिए कि यह देश का कंडेल है या देश का धमतरी जिला है, क्योंकि दोनों आंदोलन के बाद बारडोली हुआ।

श्री बृहस्पत सिंह :- यही याद कराने के लिए आज विशेष सत्र बुलाया गया है।

श्री अजय चन्द्राकर :-माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात कहना चाहता हूं कि महात्मा गांधी की दूसरी बार जो यात्रा हुई, वह छत्तीसगढ़ में हरिजन उद्धार के 22 नवंबर से 27 नवंबर तक हुई, वह दोबारा एक ही जिले में 25 नवंबर को धमतरी पहुंचे। लेकिन मैं वह बात नहीं कहना चाहता। 23 नवंबर 1925 को देश में पहली बार पंडित सुंदरलाल शर्मा 1500 हरिजन व्यक्तियों के साथ राजिम के श्रीराम जानकी मंदिर में प्रवेश करते हैं। 12 तोले का मुकुट भी हरिजन बंधु बनवा कर रखते हैं। उस दौरे में उस हरिजन फंड में 74 हजार रुपये 1933 में एकत्र होते हैं। हरिजन में महात्मा गांधी लिखते हैं कि मैं अपना गुरू पंडित सुंदरलाल शर्मा को मानता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- लेकिन आप इतने विद्वान हैं आपको मालूम होगा कि यहां पर आपको हरिजन शब्द को अनुसूचित जाति के नाम से संबोधित करना है। इतने विद्वान हो करके आप बार-बार उसी बात को कह रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे इसीलिए अनुमति लिया था, मैं जानता था कि इनकी सीमायें यहीं तक है। माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने लिखा, बाद में उसका नाम बदल दिया।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कुछ भी बोल देंगे, बंदर बोलेंगे, महात्मा गांधी जी ऐसा नहीं बोल रहे थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- उन्होंने बाद में अपने अंक में लिखा कि मैं यदि अछूतोद्धार सीखा, इस दिशा में आगे बढ़ा, महात्मा गांधी जी जिस धरती से प्रेरणा लेते हैं, वह धरती छत्तीसगढ़ की होती है, वह महापुरूष पंडित सुंदरलाल शर्मा होते हैं जिसको छत्तीसगढ़ का गांधी कहा जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरी, तीसरी बात का उल्लेख और करूंगा जो छत्तीसगढ़ का योगदान रहा। इस सदन में माननीय चिंतामणि महाराज जी कहीं पर बैठे होंगे, पूछ लीजिए जब पूरा देश सत्ता के संघर्ष में लगा था, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जिस बात को कहा, गोड़से के बारे में बात करूंगा तो छत्तीसगढ़ का एक आदिवासी संत गहिरा गुरू नोवाखाली में गांधी जी के साथ शांति स्थापित कर रहे थे, ये छत्तीसगढ़ का योगदान है। यह दुर्भाग्य है कि इतिहास इससे अनभिज्ञ है। (मेजों की थपथपाहट) और यह शासन जो गांधीवादी अपने आपको कहती है, शायद वह इस बात को समझती नहीं है, नहीं तो शायद संस्कृति मंत्री बार-बार कुर्सी से खड़े नहीं होते ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- आदरणीय, एक तो आप आपत्तिजनक शब्द का प्रयोग करते हैं । गांधी जी का कहीं इससे सरोकार नहीं है, जो आप बोल रहे हैं जिस प्रकार आप बड़ी उंची आवाज में बोलते हैं लेकिन उन्होंने हमेशा शांतिपूर्वक ढंग से कार्य किया । दूसरा आप जो गहिरा गुरू जी के बारे में बोल रहे हैं तो सरगुजा यूनिवर्सिटी का नाम गहिरा गुरूजी के नाम से स्थापित किया गया है, आप चिंता न करें । अपने मंत्रियों का नाम स्थापित करना उन्हें आता है ।

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- आपका भाषण भोजनावकाश के बाद जारी रहेगा । आज भोजन की व्यवस्था माननीय मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास की ओर से माननीय सदस्यों के लिये लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर की गयी है।

सदन की कार्यवाही सायं 4.00 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है और मेरा यह निवेदन है कि भोजन के पूर्व आप छायाचित्र के लिये पहुंच जायें ।

(अपराह्न 1.31 से 4.04 बजे तक अंतराल)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :
4:05 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- अजय चन्द्राकर जी, आपका भाषण जारी रहेगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज गांधी जी पर चर्चा चल रही है । छत्तीसगढ़ विधान सभा में भी गांधी जी... अब आप चेयर पर हैं इसलिए आगे कुछ नहीं कहूंगा ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि छत्तीसगढ़ ने गांधी जी को क्या दिया और छत्तीसगढ़ ने गांधी जी से क्या लिया ? दुर्भाग्य यह है कि मुख्यमंत्री जी के या अन्य किसी सदस्य के भाषण में, और मैं यह बात तथ्यपूर्वक कह सकता हूं कि गांधी वांग्मय के जितने स्वरूप हैं, जितने लोगों ने लिखा दोनों यात्राओं का उल्लेख कहीं पर भी नहीं है । इसीलिए मैंने कहा कि त्यौहार में छुट्टी देना छत्तीसगढ़ का आत्म गौरव नहीं है । वे विश्वव्यापी नागरिक थे, जो छत्तीसगढ़ की धरती पर घटा उसका उल्लेख हिंदुस्तान के इतिहास में नहीं है, यह किसकी गलती है? छत्तीसगढ़ ने महात्मा गांधी जी को वह योगदान दिया । मैं गहिरा गुरू का उल्लेख कर रहा था । गहिरा गुरू नुआखली के दंगे में वह आदिवासी संत, महात्मा गांधी के साथ थे । जब लोग सत्ता की लड़ाई लड़ रहे थे । इसका शोध करवाना चाहिए, अध्ययन करवाना चाहिए । संस्कृति मंत्री जी जिस बात पर आपत्ति ले रहे थे। उन्हें यह बात खड़े होकर बोलना चाहिए था कि मैं इस बात का अध्ययन करवाउंगा, शोध करवाउंगा । अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी को भी यह बात अच्छे से मालूम होगी कि जब महात्मा गांधी जी की हत्या हुई और जब वे गिरने लगे तो उन्हें संभालने वालों में से एक हाथ छत्तीसगढ़ का था, वह था श्री चंदूलाल चंद्राकर जी का। यह बात स्थापित सत्य है चाहे तो इसका अध्ययन करवाना चाहिए । माननीय मुख्यमंत्री जी ने अभी रामानुजाचार्य का उल्लेख किया । शंकराचार्य जी के बाद सनातन धर्म के जो पांच प्रमुख हुए । रामानुजाचार्य, रामानंदाचार्य, माधवाचार्य, निंबकाचार्य। गांधी जी को गढ़ने वाला यदि कोई प्रान्त है, यदि आप उनकी आत्मकथा पढ़ें तो प्रतिदिन वे हवेली जाते थे, वल्लभाचार्य की 84 बैठकों में सबसे ज्यादा बैठक, पांचवा संत वल्लभाचार्य छत्तीसगढ़ की भूमि पर पैदा हुआ और वैष्णव यदि धर्म स्वीकार करते हैं तो उसके पीछे कोई धारणा काम करती है तो छत्तीसगढ़ के वह महान संत अभनपुर के रहने वाले हैं, वल्लभाचार्य । गुजराती लोग यदि छत्तीसगढ़ की सबसे ज्यादा यात्रा करते हैं तो वल्लभाचार्य की भूमि की करते हैं । वैष्णव धर्म में वे दीक्षित होते हैं । वे कितनी धार्मिक बात बता रहे हैं, अध्यक्ष महोदय, यदि संस्कार के बीज पड़ते हैं तो छत्तीसगढ़ से पड़ते हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- इसके बाद भी तो मोदी-मोदी गुणगान करते हो ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- गांधी जी के तीन बंदर । मैं अभी दो का उल्लेख अभी और करूंगा । जब-जब आप खड़े होओगे । (श्री कवासी लखमा के खड़े होने पर) वह दूसरा खड़ा हो गया । अभी तीसरा खड़ा होगा तो फिर बताउंगा ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- ये बताओ, गांधी जी की हत्या किसने की ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आगे बोलूंगा, पक्का ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अजय जी, ये गांधी जी के तीन बंदर नहीं हैं, ये संसदीय कार्य मंत्री के बंदर हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं तो पहले ही बोला हूं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- चंद्राकर जी, यह बता दीजिए । गांधी जी ज़िंदाबाद, गांधी जी जिंदाबाद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 100 बार गांधी जी जिंदाबाद, एक हजार बार गांधी जी जिंदाबाद ।

श्री बृहस्पत सिंह :- नाथूराम गोडसे मुर्दाबाद, नाथूराम गोडसे मुर्दाबाद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल बोलेंगे । आप सुनो तो । आप बोलने दोगे तब तो ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तो बोलकर शुरू कर ना ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, इन सबको मेरे समय में काउंट मत करियेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अच्छा बोल रहे हैं, बोलते रहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने माननीय सदस्यों के लिए एक ग्रंथ की प्रति उपलब्ध करवाई । मैं आपको धन्यवाद् देता हूं, ये विधान सभा के प्रयास हैं । 1933 में जब गांधी जी की दूसरी यात्रा हुई, 1936 में गांधी जी का सबसे प्रमाणिक ग्रंथ गांधी मीमांसा, छत्तीसगढ़ के आर.डी.तिवारी साहब ने लिखी। मैं सोचता था कि 150 वीं वर्षगांठ में शायद संस्कृति मंत्री या स्कूल शिक्षा मंत्री उसको बंटवाते, क्योंकि जब वह प्रकाशित हुई तो गांधी जी के बारे में उनके जीवन का, उनके योगदान का, उनके कार्यों का छत्तीसगढ़ में तैयार सबसे प्रमाणिक ग्रंथ था।

अध्यक्ष महोदय :- उसकी पूरी प्रतियां नहीं हैं, हमने छापने को बोला है । जब छपकर आएगा तो हम विधायकों को उपलब्ध करवाएंगे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- सबसे पहले चन्द्राकर जी को दीजिएगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिए । आपने कह दिया, मैंने मान लिया । मैं अपनी बात बोल लेता हूं फिर माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो कहा उस पर आउंगा और गोडसे जी पर भी आउंगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, वेरियर एल्विन समाज शास्त्री, नेतृत्वशास्त्री महात्मा गांधी जी के दत्तक पुत्र माने जाते हैं । उन्होंने सबसे ज्यादा लिखा है तो छत्तीसगढ़ पर लिखा है । छत्तीसगढ़ के समाज शास्त्र पर लिखा है, छत्तीसगढ़ में गांधी पर लिखा है, छत्तीसगढ़ में बस्तर पर लिखा है । चलिए, वह गांधी मीमांसा छप

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रही होगी । अंग्रेजी में भी उसका नाम गांधी एक्स रेड है। तो एलविन के ऊपर भी एक किताब गांधी जी के नाम से बंटवा देते। उनके दत्तक पुत्र हैं। सबसे ज्यादा लेखन उन्होंने छत्तीसगढ़ में किया। बहुत देर से मांग हो रही है कि गांधी जी का योगदान क्या है? नाथूराम गोडसे मुर्दाबाद आप कहेंगे या नहीं कहेंगे ? मुझे यह समझ में नहीं आया कि माननीय मुख्यमंत्री जी की या कांग्रेस के इस बहुमत की रूचि गोडसे जी के बारे में जानने की है...।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह भी उल्लेख कर दीजिए कि गोडसे जी की मूर्ति कहां-कहां बन रही है और मंदिर कहां-कहां बन रहे हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- थैंक यू। जब-जब ये खड़े होंगे तो मैं माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी को थैंक यू बस दूंगा।

श्री कवासी लखमा :- पंडित को क्यों पसंद करते हैं, बताइए। पंडित को क्यों पसंद करते हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- ओशो जब लिखे तो कहा करते थे। यदि लिखना है और यदि आलोचना के लायक हिन्दुस्तान में कोई शख्स है तो वह महात्मा गांधी हैं। मैं हर किसी की आलोचना नहीं कर सकता। महात्मा गांधी के जो प्रशंसक लोग थे Albert Eionstein का उल्लेख करके जिसकी मैंने बात शुरू की। नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग सीनियर/जूनियर दोनों ओबामा साहब, स्टीव जार्ज साहब, लूई जीसा जो उनकी जीवनी के थे, रोमा रोला जी जिन्होंने उनकी जीवनी लिखी, रूजवेन साहब ये उनके अनन्य प्रशंसक लोगों में से है। अब जिसका उत्तर ये चाहते हैं। यदि उन्होंने असहमति व्यक्त की। एक विचाराधारा वीभत्स रूप से हिन्दुस्तान में उभरी। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब भाषण दिया तो यह जानना चाहूंगा। जो नाथूराम गोडसे की असहमति थी, वीभत्स थी, निंदनीय थी, सब थी, वह मैं कह सकता हूं। महात्मा गांधी जी ने अपनी बातों में कहा अपराध से घृणा करो, अपराधी से मत करो। ये उनके लक्ष्य हैं। जो गांधीवादी लोग हैं, वे पहले दिन से कह रहे हैं कि साहब, नाथूराम गोडसे। नाथूराम गोडसे। वे अपराधी से घृणा कर रहे हैं या अपराध से, इसे मैं मुख्यमंत्री जी पर सौंपता हूं।

श्री देवेन्द्र यादव :- मतलब आप अपराधी से घृणा नहीं कर रहे हैं, यह कह रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा आप थोड़ा सा बैठिए। अभी आपके ऊपर भी आउंगा। आप गांधी के बारे में जितना जानते हैं, उसके लिए समय ले लीजिए। मैं आपसे बड़ा गांधीवादी हूं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप नाथूराम गोडसे को गले लगाने के लिए तैयार हैं?

श्री अजय चन्द्राकर :- बोलने तो दीजिए महाराज। मैं आ रहा हूं न।

श्री देवेन्द्र यादव :- यह क्लियर कर दीजिए, समर्थन करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं नाथूराम गोडसे में आ रहा हूं। अपराध से घृणा करो, अपराधी से नहीं। यह महात्मा गांधी कहते थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री देवन्द्र यादव :- आप अपराधी से घृणा नहीं करते हैं न, आप यही कह रहे हैं न।

श्री शिवरतन शर्मा :- यादव जी, गांधी दर्शन पढ़ लो। गांधी जी ने यह कहा है, उस शब्द का ये उल्लेख कर रहे हैं। पहले गांधी दर्शन पढ़ लो।

श्री रामकुमार यादव :- ये कह रहे हैं कि गोडसे जी से नफरत मत करो, अपराधी से करो, यही बोल रहे हैं न।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप माननीय मुख्यमंत्री जी से जैसा बोल रहे हैं, वैसा ही पूछ रहा हूं कि आप अपराध से घृणा कर रहे हो, अपराधी से नहीं। इस बात को क्लियर कीजिए, इसके बाद बोलिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- यादव जी, आप अपराध से घृणा करो, अपराधी से नहीं। गांधी जी ने इस बात को कहा है या नहीं कहा है मुख्यमंत्री जी से पूछ लीजिए। संसदीय कार्य मंत्री जी से पूछ लीजिए कि माननीय गांधी जी ने यह बात कही है या नहीं कही है।

श्री देवेन्द्र यादव :- जिस तरीके से माननीय सदस्य ने सवाल पूछे हैं..।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं जल्दी इस लाइन को बोलने के बाद खत्म करूंगा। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो योजना कही, मैं इस पर बात कहूंगा। एनीबेसेंट उससे सहमत थे। असहमति के तरीके दूसरे थे। नाथूराम गोडसे की असहमति के दूसरे थे। जिन्ना असहमत थे । बाल गंगाधर तिलक उनसे असहमत थे। सुभाष चंद्र बोस उनसे असहमत थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने उनकी आलोचना की और आलोचना का उत्तर यंग इंडिया में महात्मा गांधी जी ने लिखकर दिया। आप महात्मा गांधी वांगमय पढ़ लीजिए। एम.ए. जयकर उनसे असहमत थे। भीमराव अंबेडकर साहब उनसे असहमत थे। ये जो रिजर्वेशन की बात करते हैं, पूना पैक्ट उनको पढ़ना चाहिए। जो गांधी जी और अंबेडकर के बीच वार्ता हुई। रिजर्वेशन की शुरूआत हुई। हिन्दुस्तान का वह एक अमर इतिहास है। ये असहमत थे तो क्या कांग्रेस उसके लिए मुर्दाबाद बोलेगी ? यह स्पष्ट होना चाहिए । यह असहमति के तरीके हैं। महात्मा गांधी ने असहमति से अपने जीवन में जितना सत्कार किया है शायद हिन्दुस्तान में या दुनिया में किसी नेता ने असहमति का सत्कार नहीं किया है।

श्री अमरजीत भगत :- जो भी गांधी जी को मानता है, वह गोडसे की विचारधारा से सहमत हो ही नहीं सकता है। जिस प्रकार से आप यह घूमा-फिराकर बात कर रहे हैं। गांधीवादी लोग गोडसे की विचारधारा से सहमत हो ही नहीं सकते। चाहे आप जितना जोर-जोर से चिल्ला-चिल्ला कर बोलें।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप तो बस यह बता दीजिए। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं..।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी गोडसे की विचारधारा क्या थी ? यह आप बता दो।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अमरजीत भगत :- वह हिंसा के रास्ते पर चलने वाली विचारधारा थी। बापू को उन्होंने गोली मारा। उस विचारधारा से आप सहमत हो क्या? इसीलिए तो हम चाह रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- आप किस विचारधारा को मानते हो?

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये पाण्डेय जी, आप बैठ जाइये।

श्री शैलेश पाण्डेय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय भैय्या एक नाम भूल गये थे। अमित शाह का नाम लेना भूल गये थे,जो छत्तीसगढ़ में ही आकर गांधी जी को चतुर बनिया बोलकर गये थे। तो उसमें एक नाम और जोड़ लीजिये।

श्री अजय चन्दाकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो बातों का उल्लेख करूंगा। आज मुझे संसदीय कार्यमंत्री जी ने अवगत करवाया कि कल शायद मुख्यमंत्री जी उत्तर देंगे। मैं नहीं जानता कि वे उत्तर देंगे या नहीं देंगे, आपने क्या व्यवस्था दी है ? कांग्रेस का एक बड़ा धड़ा था, 24 मार्च, 1931 को भगत सिंह को फांसी होनी थी, वह 23 मार्च को दे दी गई। उनके पहले इरबिन और गांधी जी की वार्ता हुई। उस वार्ता में यह सहमति हुई कि जो अहिंसक आंदोलन में शामिल थे, उनको छोड़ा जायेगा। कांग्रेस का एक बड़ा धड़ा मानता था कि यदि महात्मा जी चाहते तो भगत सिंह की फांसी रूकवा सकते थे। यह बात सत्य है, इससे सहमत है या असहमत है ? माननीय मुख्यमंत्री जी जब बात कर रहे थे तो जरूर बतायेंगे कि कौन से पक्ष की निंदा करेंगे, कौन से पक्ष का समर्थन करेंगे ? कौन से पक्ष की आलोचना और समर्थन करेंगे ? मैं कल उत्तर में जरूर सुनना चाहूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी घटना, जब जलियावाला बाग काण्ड हुआ, उसी सत्र में कांग्रेस का अधिवेशन जलियावाला बाग काण्ड के लिए आहुत था। जो भारतीय मारे गये, टोटल 1650 राउण्ड गोलियां थी 379 मारे गये और कितने घायल हुए, जो भी हुए। दूसरी महत्वपूर्ण बात थी। पूरी कांग्रेस के कार्यसमिति गांधी जी के विरोध में थी। कौन से विरोध में थी ? जो जलियावाला बाग काण्ड में मरे, इसके अतिरिक्त जो 5 अंग्रेज मरे, उसका भी नाम शोक प्रस्ताव में शामिल होना चाहिए। यह इतिहास बोलता है, मैं नहीं बोल रहा हूँ। माननीय मुख्यमंत्री जी कल उत्तर देंगे तो मैं जरूर सुनना चाहूंगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, यह बहुत निंदनीय विषय है कि आज बापू जी के जयंती के दिवस पर इस तरीके से घुमा-घुमाकर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसमें क्या आरोप ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ0 (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- उस समय की परिस्थितियों क्या थी ? आप प्रमाणित कर रहे हैं कि आप गांधी को नहीं स्वीकारते। यह आप प्रमाणित कर रहे हैं। उस समय की परिस्थितियां क्या थी, उसका अध्ययन करना चाहिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- यह निंदनीय विषय है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह बात कहना चाहता हूं कि इस तरीके से आरोप- प्रत्यारोप इतिहास पर लगा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने चर्चा की शुरूआत की। माननीय मुख्यमंत्री जी ने गोडसे मुर्दाबाद करने की बात की। सदस्य अपने विचार रख रहे हैं। समय-समय पर गांधी जी ने उन विषयों को उठाया है, उसको सुनने में क्या तकलीफ है ? सहमति और असहमति का विषय है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं सहमत और असहमत की बात कर रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप बापू पर आरोप लगा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप गांधी जी की जीवनी पढ़ लो। उसमें सारी बातों का उल्लेख है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य पूछना चाहता हूं कि क्या ये बापू पर आरोप लगा रहे हैं ? ये हमारे महात्मा गांधी जी के ऊपर आरोप लगा रहे हैं। हम ऐसी सोच की निंदा करते हैं और यही सोच भी, जो उस समय भी बापू की हत्या की थी और यही सोच आज यहां पर आकर बापू की निंदा कर रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने उस दिन माफी मांगी थी। मैं एक बात भी अपने मन से नहीं बोल रहा हूँ। भारत के इतिहास का ही उल्लेख कर रहा हूँ और मैंने क्षमा मांगी थी, अपने आप को कहा था कि मेरी वह औकात नहीं है, वह क्षमता नहीं है कि मैं उस महान आदमी के बारे में कुछ कहूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब दूसरी बात की ओर चलते हैं। असहमति और सहमति, गोडसे और अन्यान्य लोग, जो महात्मा जी से असहमत थे। वही एक चरित्र था, जो असहमत और सहमत के लायक इस हिन्दुस्तान में थे। बाकी सब लोग विरासत का फायदा उठाने वाले थे। मैं आगे दो-चार मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सन् 1893 में दो घटना घटी। 07 जून, 1893 को नतालसे डरबन जा रहे थे, तो उनके सामान को प्रथम श्रेणी से फेंक दिया गया। महात्मा गांधी खत्म। उस दिन से वकालत बंद। एक महात्मा का जन्म हो गया। उसी साल 11 सितम्बर को एक आदमी विश्व सनातम धर्म को स्थापित कर शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के सनातन धर्म और संस्कृति को स्थापित कर रहा था। जो महात्मा गांधी, उसके बाद, जब चर्चा हुई, राष्ट्रीय आंदोलन, माननीय मुख्यमंत्री जी ने ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अनेकांतवाद का उपयोग किया, शायद हिन्दुस्तान का सबसे महान शख्स, जो लोगों की सुनता था, लोगों को सहता था, लोगों को करता था और उसके बीच से रास्ता निकालता था, उनका जो सबसे प्रसिद्ध लाईन था, जब परेशान होते थे, सत्य की जीत बिना जोखिम लिये नहीं होती, महात्मा गांधी जी का ये अमर वाक्य था कि सत्य की जीत बिना जोखिम लिए नहीं होती । माननीय अध्यक्ष महोदय, जो उस महान आदमी ने हिन्दुस्तान नहीं, पूरी दुनिया को दिया, उसका मूल केन्द्र था, वही सत्य उसकी आत्म प्रेरणा और सविनय अवज्ञा उसको मिली, यदि असहयोग की भावना मिली तो टालस्टाय से मिली । यदि बुद्ध धर्म से वे करूणा को ग्रहण करते हैं, शांति, अस्तेय, अस्वाद, अपरिग्रह जैन धर्म से ग्रहण करते हैं तो जदास्तुत से शांति सीखते हैं तो इस्लाम से कुछ सीखते हैं । सारे उसके *वांगमय* में वर्णित है और उसके बीच से वे रास्ता निकालते हैं । अध्यक्ष महोदय, जो आपने किताब दी है, उस किताब को कोड कर देता हूं । गांधी जी का मत था कि जो देश प्रेम को नहीं जानता, वह अपने सच्चे धर्म, कर्तव्य धर्म को भी नहीं जानता। अत: धर्म मानव सेवा सर्वहित कल्याण देश प्रेम आदि सभी का समिष्ठ रूप है और उन्होंने लिखा है-मेरे राम, हमारी प्रार्थनाओं के राम अयोध्या नरेश राम, अयोध्या नरेश दशरथ के पूर्व ऐतिहासिक राम नहीं हैं, वे सास्वत्, अजन्मा, अद्यितीय केवल मैं उन्हीं की पूजा करता हूं । अध्यक्ष महोदय, ये आपकी दी हुई किताब में लिखी है, मैं अपने मन से नहीं बोल रहा हूं, लेकिन पूरी दुनिया में ताकत क्या थी ? मैं उनके सभी आन्दोलनों में कई चीजों में सबसे ज्यादा प्रभावित आदमी हूं कि एक मुट्ठी नमक नहीं । 78 आदमी के साथ शुरू किया और एक अंग्रेजी साम्राज्य को हिला दिया । जब उन्होंने यरवदा जेल में 21 दिन का उपवास किया तो पूरी दुनिया के प्रधानमंत्रियों को लेटर भेजे गए कि वे पहल करें कि महात्मा गांधी के जीवन की रक्षा हो, वे हिन्दुस्तान के लिए नहीं, वे देश के लिए जरूरी है । दुनिया का एक मात्र आदमी, जो पांच बार नोबेल पुरस्कार के लिए 1937, 1938, 1939, 1948 और 1949 में नामांकित हुआ । जब ये दूसरी बातें करते हैं तो महात्मा गांधी के उस पक्ष को नहीं जानते कि जिन्होंने अपृश्यता के लिए अपना जीवन दिया। जिस गांधी जो ये जानते हैं...

श्री बृहस्पत सिंह :- जिस गांधी को जानते हैं, जिस गांधी को जानते हैं। मतलब कितने गांधी थे, ये भी बता दीजिए न । हर बार आप बोल रहे हैं कि जिस गांधी को जानते हैं, आप बता दें कि कितने गांधी हैं । आपके गांधी अलग थे, हमारे गांधी अलग थे, उनके गांधी अलग थे क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- बताऊंगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी ने 30 अक्टूबर, 1934 को कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था और कांग्रेस से इस्तीफा देते वक्त जो उन्होंने लिखा था, मैं वह पढ़कर सुना देता हूं। चूंकि मनाने की सारी कोशिशें नाकामयाब हो चुकी हैं । यह कांग्रेस जहां उसके फैसले को स्वीकार कर रही है, वहीं वह कृतज्ञता के गहरे बोध को दर्ज करती है। इसके पहले गांधी ने कहा था कि जो उस वजह को हटाने के लिए कांग्रेस छोड़ रहे हैं, जो उसे कुचल रहा है, ताकि वह विकास

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कर सके और उसके परिणाममय भी अपना विकास कर सकूं । 30 अक्टूबर को महात्मा गांधी जी ने तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी को अपना इस्तीफा सौंप दिया । जो नामांकित हुए, 1937, 1938, 1939, 1947 और मृत्यु के दो दिन पहले 1948 में चूंकि उस समय मृत्यु पश्चात् नोबेल पुरस्कार देने की परम्परा नहीं थी, 1948 में किसी को नोबेल पुरस्कार नहीं दिया गया ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब जो दूसरे गांधी और तीसरे गांधी की बात पूछ रहे थे, बापू के प्रशिक्षित माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी जिनके प्रशिक्षित जो हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, सन् 42 में यहां से शुरू होती है, 42 में उन्होंने कांग्रेस को वर्धा कांग्रेस अधिवेशन में सूचित कर दिया कि राजा जी और सरदार पटेल मेरे राजनीतिक उत्तराधिकारी नहीं होंगे । उन्होंने कहा कि जवाहरलाल नेहरू मेरे उत्तराधिकारी होंगे । सरदार पटेल जी कहते हैं कि महात्मा गांधी जी ने तय किया है कि मैं अपने मृत्यु पर्यन्त, जीवन पर्यन्त नेहरू जी के लिए कोई संकट पैदा नहीं करूंगा, यदि मैं कोई संकट पैदा करूंगा तो महात्मा गांधी जी के साथ अन्याय होगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, जो बात मैंने कही है, गांधी रामचन्द्र गुहा की किताब, गांधी के पहले तक का यह अंश है । गांधी के बाद का अंश पढ़िये । 1967 के बाद महात्मा गांधी जी के चार पुत्र थे, उत्तराधिकार नहीं बनाया, जब असहमति और सहमति की बात हम करते हैं, जो गांधी जी यंग इंडिया निकालते थे, जो गांधी हरिजन निकालते थे, जिसका नाम नवजीवन उन्होंने बाद में कर दिया, 1967 के बाद वाली कांग्रेस उस पत्रकार के लिए, जिस स्वतंत्रता के लिए, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए, विश्व बंधुत्व के लिए, मानवता के लिए, सुख के लिए वह लड़ रहे थे, उसी कांग्रेस ने प्रेस सेंसरशिप लगाई । जब महात्मा गांधी के गोंडसे के बारे में बात करते हैं, मैं सौ बार निंदा करता हूँ । कोई भी आदमी हत्या करते हैं तो, पर आपातकाल के लिए गांधी का जो दूसरा दौर शुरू हुआ, उस आपातकाल के लिए, माननीय मुख्यमंत्री जी उत्तर देंगे तो क्या बोलेंगे, मैं सुनूंगा और वह जो कांग्रेस को विरासत की राजनीति होने लगी, जो एक कांग्रेस सम्मेलन कहते हैं, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, डॉ. हेडगेवार, उस कांग्रेस के सदस्य थे, जयप्रकाश नारायण जी उस कांग्रेस के सदस्य थे । जे.पी.कृपलानी कांग्रेस के सदस्य थे, राममनोहर लोहिया कांग्रेस के सदस्य थे, यह इतिहास कहता है । वह कांग्रेस एक परिवार में कैसे तब्दील हुई, एक परिवार की विरासत कैसे बनी, कौन-कौन से मूल्यों की बात करती है, जब गांधी के बाद कांग्रेस की बात होती है, तो स्वतंत्रता आंदोलन के कांग्रेस की बात नहीं होती है । महात्मा गांधी की बात नहीं होती है, वह गांधी के मायने बदल गये होते हैं । वह गांधी निहितार्थ राजनीतिक स्वार्थ के लिए उपयोग होते हैं और वह गांधी स्वतंत्रता आंदोलन के दौर के गांधी के स्वरूप से बदला हुआ गांधी होता है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- उसी कांग्रेस के स्कूल से पढ़कर आये हो भाई ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- दो मिनट में खत्म कर रहा हूँ अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय, आज महात्मा गांधी के आदर्शों में छत्तीसगढ़ सरकार ने चार-पांच घोषणा की । उद्योग नीति, शायद नवम्बर में ला रहे हैं । पंचायती राज, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, जिनकी बात कर रहे हैं, वह महात्मा गांधी, 30 जनवरी 1948 के पहले के महात्मा गांधी के आदर्शों की मैं बात कर रहा हूँ, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने ध्यानाकर्षण लगाया था, बुनकर, तकली, चरखा, राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक थे, छत्तीसगढ़ में बुनकरों को पेमेंट नहीं हो रहा है । आप चांपा में रहते हैं, रोजगार नहीं मिल रहे हैं, उसकी कोई नीति नहीं है । सहकारिता गांधी जी की आत्मा में धड़कती थी, सहकारी आंदोलन का कार्य, यदि दो साल पूरा हो जाता, कोई भी दल के लोग रहते, सिर्फ सरकारीकरण करने की कोशिश, हाई कोर्ट ने आंदोलन को बचा दिया, 1335 सोसायटियों को गांधी जी के आदर्शों को किस आधार पर बात करते हैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, आज के पेपर में है । कवर्धा के शक्कर कारखाने में 20 करोड़ रूपया, सहकारिता का शक्कर कारखाना है, किसानों का बकाया है, किसानों की बात करते हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, आज के पेपर का उल्लेख मैं कर रहा हूँ, बैठिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी, व्यक्तिक स्वच्छता, पर्यावरण सारी चीजों पर बात किये, आज पूरे देश को ओ.डी.एफ. घोषित करने जा रही है । किसने मना किया था कि स्वच्छता मत अपनाये । हिन्दुस्तान का एकमात्र नेता, जिन्होंने देश की लड़ाई के साथ-साथ बहुत सारे सामाजिक कार्यक्रमों को, अपने हाथ में लिया। अछूतोद्धार का मामला हो, स्वदेशी का मामला हो, आत्मनिर्भरता के ग्राम विकास का मामला हो, पंचायती राज में गांधी जी की इज्जत कितनी थी, उनको गिड़गिड़ाना पड़ा कि पंचायती राज को स्थान दो । आज भी संविधान की प्रति रखी होगी । आर्टिकल 40 में राज्य के विषय, जब किसी और स्वतंत्रता के बाद के गांधी को श्रेय देने की कोशिश होती है, 73 वां, 74वां संशोधन जिस दिन पारित हुआ, उस समय देश में नरसिंहाराव की सरकार थी, अल्पमत की सरकार थी, देश के आधे प्रान्तों में गैर कांग्रेसी सरकार थी, जिनके समर्थन से 73 वां और 74 वां संशोधन इस देश में पारित हुआ और लागू हुआ । यह अजीब तरह का गांधीवाद है । ऐसे अनन्य चीजें ग्राम विकास की, पहली सरकार मैंने देखी, नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी, कांग्रेस के अध्यक्ष बोल रहे थे, अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हो रही है । मैं बोलता हूं कि अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि उस पर मंगल ग्रह पर भी हो, चांद पर भी हो, रोवर में भी हो मुझे उससे मतलब नहीं है, बजट कौन सा है? जब डॉ. रमन सिंह जी की सरकार ने मोबाईल के लिए पैसे ले लिये तो नेता प्रतिपक्ष जी ने सर उठा लिया था कि पंचायती राज के पैसे का दुरूपयोग और क्या-क्या नहीं मालूम, इसकी आलोचना में जेस्चर पोस्चर देखने लायक होते थे। आज नरवा, घुरवा, गरूआ, बारी के लिए 14 वें वित्त आयोग के पंचायत के पैसे के जा रहे हैं तो नेता जी भीष्म पितामह की तरह मुंडी झुकाये बैठे हैं। क्या बजट होगा, क्या स्वरूप

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

होगा, उसका कान्सेप्ट क्या है इतने बड़े सदन में किसी को नहीं मालूम। ये ग्राम विकास की योजना है? होगा ऐसा होगा, ऐसा होगा ऐसा होगा।

श्री रामकुमार यादव :- ये रायपुर में है वह कौन से बजट का था?

श्री अजय चन्द्राकर :- अब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष आज फैशन के लिए टोपी लगाकर आये थे और इधर (अध्यक्षीय दीर्घा की ओर इशारा करते हुए) कांग्रेस के एक महान आदमी टोपी लगाये बैठे थे, नवनियुक्त कांग्रेसी। मैं नाम नहीं ले रहा हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप सदन में गांधी जी के बारे में चर्चा करिये, कांग्रेस को, टोपी को अपमानित करने की बात क्यों कर रहे हैं? इतने विद्यान हैं तो टोपी का नाम क्यों ले रहे हैं, गोडसे का नाम लो। आप गोडसे जी की टोपी पहनकर आ जाओ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह कांग्रेस अध्यक्ष जी, राहुल गांधी जी को कुछ कहा गया, मैं गलत कहा गया बोलता हूं तो कोंडागांव थाने में रिपोर्ट करवाने चल दिये हैं। दूसरी बार एक सज्जन ने उसको सतनामी कहा तो वह भूल गये कि इस आदमी ने सतनामी कहा। अध्यक्ष महोदय, एक मामले में महात्मा गांधी का डबल स्टैंडर्ड नहीं होता था। यदि यह कांग्रेस अध्यक्ष जी का स्टैंड है तो दोनों मामले में वह थाने जाते तो मैं मानता कि ये कांग्रेस के अनुयायी हैं, गांधी जी के अनुयायी हैं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने गांधी जी पर दो दिन का सत्र रखा तो इनको तारीफ करना चाहिए लेकिन इसे ये नेतागिरी बना रहे हैं। ये नागपुर का पालन कर रहे हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप हमारे प्रदेश अध्यक्ष के ऊपर उंगली क्यों उठा रहे हैं? आप गांधी जी की बात करिये ना, गोडसे जी की बात करिये ना। गोडसे के बारे में क्यों नहीं बोलते?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके तीन-चार बंदर है।

अध्यक्ष महोदय :- वे खत्म कर रहे हैं, खत्म करने दो। आप खत्म करिये।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, इनको कितना समय मिलेगा?

श्री कुलदीप जुनेजा :- अध्यक्ष जी, बहुत सारे लोगों को बोलना है। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, गोडसे जी ने ऐसा क्यों किया ये बात आनी चाहिए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनका ज्ञान ओव्हरफ्लो हो रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी की विचारधारा, महात्मा गांधी जी की विरासत 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध से 20 वीं सदी के मध्यार्थ तक पूरी दुनिया के मानवता के लिए एक माईलस्टोन था, एक लैंप था। उसका सबसे बड़ा उदाहरण जो माना जाता है कि हिरोशिमा में जब अमेरिका के द्वारा लिटिल ब्वॉय और फैट ब्वॉय नाम के दो परमाणु बम गिराये गये तो जापान को सरेंडर करना पड़ा पर महान शांतिवादी लोग इस बात को मानते हैं कि वही अमेरिका 20 साल बाद जब

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

इस लिटिल ब्वॉय से बड़े बम उसके पास थे तो मानवता का संहार देखकर उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वियतनाम पर वह बम गिरा सके। उन्होंने अपनी हार स्वीकार कर ली। लोगों ने कहा कि यदि दुनिया में प्रभाव है, ये घटना घटी तो गांधीवाद के कारण घटी। आज वह गांधीवाद में मैं जब आलोचना करता हूं या प्रशंसा करता हूं आज पूरी सड़क में देख लीजिए कि गांधी जी की तस्वीर ज्यादा लगी है कि किसी और व्यक्ति की तस्वीर लगी है। गांधी जी के बारे में शहर सजा है या विपरीत टिप्पणियों के बारे में शहर सजा है? सत्य को सुनना नहीं है, सत्य को यदि जानना नहीं है, सत्य को स्वीकार नहीं करना है तो गांधी जी से हम दूर जा रहे हैं, जितनी आलोचना सुनने की आपकी हिम्मत होगी, जितनी आप स्वीकार कर सकेंगे, जितने असहमति को आप सहमति में बदलने की ओर जायेंगे, आप महात्मा गांधी जी का सबसे ज्यादा सम्मान करेंगे। मैं महात्मा गांधी जी के साथ-साथ लाल बहादुर शास्त्री जी को जिन्होंने देश को एक सामाजिक आंदोलन दिया । मैं स्वीकार करता हूं कि देश में अन्न की कमी है, यह देश एक बार उपवास रखे। लोगों ने उपवास किया..।

अध्यक्ष महोदय :- ताम्रध्वज साहू।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, उसके बाद फूड कार्पोरेशन की हुई पुल बने खाद्यन्न की उन्नति हुई, हरितक्रांति हुई, एक घटना अलग हुई, उन दोनों महान आत्माओं को देश की सेवा की, विश्व की मानवता की सेवा की, भारत माता की सेवा की और छत्तीसगढ़ का भी उनके अभियान में छोटा बहुत योगदान रहा। इन सबको श्रद्धा सहित स्मरण करते हुए, श्रद्धा से साथ उनके मूल्य योगदान को याद करते हुए, उनको श्रद्धांजलि देते हुए, वे सदैव हिन्दुस्तान और दुनिया के जनमानस में अमर रहेंगे, यह भाव व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़, महात्मा गांधी अमर रहे।

(भारतीय जनता पार्टी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये।)

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत ध्यान से हमने सम्माननीय सदस्य की बात सुनी। लेकिन इन्होंने जो कहा था कि ये बात का उत्तर देंगे, इन्होंने उत्तर नहीं दिया।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी मैंने आपसे एक काम की है। मैं जानबूझकर नहीं बोला कि प्रतिपक्ष शराबबंदी की मांग कर चुके थे। इधर-उधर की बात बंद कर (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, ये गोडसे के विचारधारा से प्रेरित हैं कि महात्मा गांधी के विचारधारा से प्रेरित हैं। मैं सम्माननीय सदस्य से पूछना चाहूंगा कि गोडसे के विचारधारा से प्रेरित हैं कि महात्मा गांधी के विचारधारा से प्रेरित हैं।

अध्यक्ष महोदय :- साहू जी आ रहे हैं, चलिये साहू जी सब संभाल लेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, इनकी आवाज गोडसे जी से प्रेरित लग रहा था।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष जी, आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जन्मदिन का अवसर है और आपने दो दिवसीय विशेष सत्र का जो आहुत किया, आयोजन किया उसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। आज लाल बहादुर शास्त्री जी जो हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने कम समय में भी अपना एक इतिहास रचा, उनका भी जन्मदिन है, उनको भी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं इस सदन में आपके माध्यम से देता हूं। गांधी जी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे, वक्ता इधर से उधर से दोनों तरफ से अपनी बात रख रहे हैं, मूल केन्द्र आज 150 वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व, उनके कृतित्व, उनके कार्य, उनके संदेश, उनके उपदेश, उनके बातों का दुर्गामी परिणाम, उनके कार्यों से देश की एकता, अखण्डता, इन सारी बिन्दुओं पर हम चर्चा कर रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ी को मालूम हो कि इस देश में एक ऐसा व्यक्ति जन्म लिया था जो आज भी अनुपूरणीय है और युगों युगांतर तक उनके जो संदेश हैं, जो कृतित्व हैं, वह मानवता के लिए एक संदेश देता रहेगा। उस महान आत्मा को प्रणाम करते हुए, जिनको हमारे देश के लोग न जाने किन-किन नामों से नाम लेकर उनका सम्मान करते हैं, कोई मोहनदास करमचंद गांधी कहता है, कोई बैरिस्टर गांधी कहता है, कोई बापू जैसा सम्मान का, आदर का, पूजा का सम्मान उनको देता है। कोई राष्ट्रपिता कहते हैं, कोई महात्मा गांधी कहते हैं, अनेक नामों से उस महान व्यक्ति को हमारा देश जानता है, मानता है, स्वीकार करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अपने कार्यो के साथ हम लोग जब अनुभव करते हैं या थोड़ा बहुत जो पढ़ पाये हैं, माननीय अजय चंद्राकर जी जैसा नहीं पढ़ पाये हैं, पर थोड़ा बहुत जो पढ़ पाये हैं, कम पढ़ा हूं बोल रहा हूं, आप ज्यादा पढें हैं। थोड़ा बहुत जो पढ़ पाये हैं, जो अनुभव करते हैं या सीख मिलती है या वक्ताओं से जो सुनते हैं या आजादी के पहले का जो इतिहास पढ़ते हैं या अब जो अनुभव करते हैं, उस समय की स्थिति या वर्तमान स्थिति, उन सारी चीजों को, तो लगता है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी काफी विचारवान थे। तमाम परिस्थितियों के मद्देनजर परिस्थितियों का आंकलन करके कल क्या हो सकता है, परसों क्या हो सकता है ? दस साल बीस साल बाद क्या परिस्थितियां निर्मित हो सकती हैं, उनका अध्ययन करके योजना भी बनाते थे, बातें भी करते थे, लोगों के सामने अपनी बात भी रखते थे। विचारवान होने के साथ उनकी भाषा, उनकी शैली में, इतना आकर्षण कि व्यक्ति एक बार सुनता तो सहजता से उसको स्वीकार कर लेता था और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का अनुसरण करने लगता था। सम्माननीय अध्यक्ष जी, एक घटना का उल्लेख दो लाईन करना चाहूंगा, उनके तर्कों के विषय में इतना अधिक सम्मोहन था कि अंग्रेजों को भी डर लगता था कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सामने चर्चा के लिए जांए, न जाएं। एक बार इंग्लैण्ड के तत्कालीन विंसेंट चर्चिल ने भारत जाने वाले वाईसराय को बार-बार समझाकर कहा कि आप महात्मा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गांधी जी के सामने कम बैठना, कम जाना, आप उनकी बातों को इंकार नहीं कर पाओगे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की बातों का इतना सम्मोहन हुआ करता था, वे अपनी बातें सैद्धांतिक तरीके से रखते थे। सामने वाला व्यक्ति कितना भी असहमत हो, जब गांधी जी अपनी बात रखते थे तो वे सहमत हो जाते थे, उनके सामने, उनकी बात को स्वीकार कर लेते थे । यह लेख है कि इसी डर से चर्चिल प्रधानमंत्री रहते हुए कभी महात्मा गांधी जी के सामने नहीं आये और उनसे नहीं मिले। हालांकि बाद में वहां पर जो चर्चिल की जो मूर्ति है, उनके बाजू में ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की भी मूर्ति लगायी गई है। हमारे सामने महात्मा गांधी जी का एक ऐसा व्यक्तित्व आता है, जिससे हमको सीख मिलती है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो हम लोग देखते, सुनते और अनुभव करते हैं। गांधी जी की सोच थी कि समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति का दु:ख कैसे दूर किया जाये? जब उन्होंने आजादी, आजादी के संघर्ष के पहले पूरे देश का भ्रमण, दौरा किया था, अलग-अलग वर्ग के लोगों से मिलना, अलग-अलग जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोगों से मिलना, गांवों, रास्ते, बारिश, ठण्ड, धूप, भूखे मरते व्यक्ति, बीमार व्यक्ति के पास, सारे लोगों से उसमें मिलना और मिलकर विस्मृत नहीं, भूलते नहीं, उसको देख लेते थे। आंकलन कर लेते थे, कागज में, मस्तिष्ठ में बिठा लेते थे कि ये हमारे भारतवर्ष का वर्तमान परिदृश्य है। ये हमारे देश की वर्तमान स्थिति है, ये हमारे देश के लोगों, किसान, मजदूर, महिलाओं, बीमार की हमारी परिस्थितियां हैं। वह यह सारा आंकलन कर लेते थे और उसी के अनुसार आजादी के बाद का भारत कैसा हो ? यह सोच उनके दिमाग में होती थी और इसीलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की सोच रहती थी कि समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक हमारी योजना कैसे पहुँचे ? हम उनके दु:ख कैसे दूर कर पायें ? पूरे भारतवर्ष, पूरे समाज में आपस में भाईचारा और सद्भाव का वातावरण कैसे हो ? एक जाति, एक धर्म, एक सम्प्रदाय के बीच की लड़ाईयां न हों, गांधी जी की सोच होती थी कि आजादी के इस दौर में और आजादी के बाद में भी हमारे देश में सामाजिक समरसता, भाईचारा कैसे स्थापित कर सकें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व से हमको बहुत सारी चीजें सीखने कों मिलती है। उनके व्यक्तित्व में हमको कहीं पर भी लेशमात्र घमण्ड, अभिमान दिखायी नहीं देता। आज थोड़े से कोई पद, पैसे, प्रतिष्ठा, मान, सम्मान में जो गल्तियां, कुरीतियां, खराबियां, हममें आती हैं। हम देखते हैं कि पूरा देश जिनके अनुसरण चलता है पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी में एक नाम मात्र, एक नये पैसे का घमण्ड, कोई अभिमान नहीं था। किसी को छोटा या बड़ा मानने का, उनका दृष्टिकोण नहीं था। उनका व्यक्तित्व बड़ा विचित्र सा था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के मामले में उनकी सोच थी कि शिक्षा का बहुत ज्यादा प्रचार-प्रसार हो कि हर व्यक्ति अपना हित और अहित समझने लगे। सभी लोगों को इतना शिक्षित होना

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

चाहिए। उनकी सोच थी कि हर व्यक्ति का सम्मान होना चाहिए। चाहे वह पढ़ा लिखा है या नहीं पढ़ा लिखा है, चाहे वह राजनीतिक, व्यापारी, अधिकारी, खेत में काम करने वाला मजदूर, किसान, भीख मांगता व्यक्ति है, पर इस देश में सबका सम्मान होना चाहिए। उनकी एक अलग सी सोच थी। वह हमेशा संस्कार की बात किया करते थे। हमेशा उनका ध्यान संस्कृति की रक्षा की ओर रहा करता था। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से संस्कार और संस्कृति दो बड़ी चीजें मिला करती थी। माननीय अध्यक्ष जी, गौमाता की सेवा, उनके आश्रम या आश्रम से बाहर देखें, यह एक बड़ा अनोखा काम हमें उनका दिखाई देता है की गौमाता की सेवा होनी चाहिए। इसके कई कारण हैं। हमारी संस्कृति, संस्कार अलग, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अलग होने के बाद भी और अन्यान्य दृष्टिकोण से भी गौमाता की सेवा दिखावे के लिए नहीं, वास्तविक दृष्टिकोण में गौमाता की सेवा होनी चाहिए। विदेशी सामान, विदेशी सभ्यता के बारे में तो सब जानते हैं, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी विदेशी सभ्यता के बिल्कुल पक्षधर नहीं थे। विदेश सामग्री का त्याग करना, उसका उपयोग नहीं करना, यह सभी जानते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बड़ी बात नशा की बात है। वह नशा के घोर विरोधी थे। किसी भी प्रकार से आने वाली पीढ़ी को बरबादी से बचाया जाये, रोका जाये, इसका सबसे बड़ा दुश्मन इस चीज को माना जाता था। अपनी सभ्यता, संस्कृति, अपनों के द्वारा उत्पादित सामग्री का उपयोग, यह हमें उनका संदेश मिलता है जो उस समय ही नहीं बल्कि आज भी हमको प्रासंगिक लगता है। परिस्थितिजन्य गांधी जी जब भी कोई निर्णय लेते थे, हम लोगों ने देखा, पढ़ा और सुना है, उनकी जीवनी, उनकी कहानियों या अन्य लेखकों की लेखनी से जो हमें देखने और सीखने को मिलता है कि किसी घटनाक्रम में आजादी के पहले परिस्थितिजन्य जब भी वह कोई निर्णय लेते थे तो सारे देश की जनता उसको एकमत से स्वीकार करती थी। राष्ट्रपिता के प्रति इतना विश्वास, लगाव, समर्पण, प्रेम लोगों के मन में किसी एक व्यक्ति के प्रति होना बहुत बड़ी बात थी। माननीय अध्यक्ष जी, उस जमाने के काफी लोग अभी बचे हैं। इसिलए ये बात स्वीकार कर ली जा रही है कि गांधी जी ने ऐसा किया और हम विश्वास करके मान रहे हैं। पर आने वाले 10, 20, 25 साल के बाद उस पीढ़ी के लोग जब समाप्त हो जायेंगे तो शायद हमारी आने वाली पीढ़ी इस बात को स्वीकार करे या ना करे, ये एक चिंतनीय विषय जरूर रहेगा। इस पर जरूर आने वाली पीढ़ी को अपने देश के हिसाब से बताना, सीखाना, समझाना बहुत आवश्यक होगा।

माननीय अध्यक्ष जी, गांधी से हमें अपना काम खुद करने की प्रेरणा मिलती है। वह अपना काम खुद करते थे। उनमें ये बड़ी विशेषता थी कि किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। हम तो आज मंत्री हैं तो कोई इसको करने के लिए कह दे तो ये तो बहुत छोटा काम है, किसी दूसरे को कह देंगे कि ये काम करके ले आओ। लेकिन गांधी जी के व्यक्तित्व से हमको सीखने को मिलता है कि वह किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। यहां तक की टॉयलेट साफ करना, जूता बनाना, जिसका उल्लेख आ चुका है, वह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। वह छुआछुत के सख्त विरोधी थे। महात्मा गांधी के इतने गुण थे कि वह सारी चीज सीखने के लायक हमारे पास है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी दो बार छत्तीसगढ़ आये, हम छत्तीसगढ़ के लोग सौभाग्यशाली हैं कि यहां छत्तीसगढ़ में उनका दो बार आना हुआ। पहली बार 1920 में और दूसरी बार 1933 में आये। उनका पहला प्रवास जल सत्याग्रह के निमित्त था। कंडेल जिसका उल्लेख अभी हो रहा था। अंग्रेजी सरकार ने जो सिंचाई दर बढ़ा दिया, उधर के किसानों के उसके लिए सत्याग्रह किये। किसानों ने इतनी ज्यादा एकता दिखाई, सत्याग्रह किया कि अग्रेंजों को टैक्स वापस लेना पड़ा। और यह गूंज जब दिल्ली तक गई तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रभावित हुए और खुद चलकर यहां आये। कंडेल के आसपास धमतरी में ये स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसका उल्लेख करना चाहूंगा, क्योंकि छत्तीसगढ़ की बात छत्तीसगढ़ की विधानसभा में हो रही है। जब वह यहां आये तो मौदहापारा रायपुर में उन्होंने सभा ली। सतनामी समाज के आश्रम में भी वह गये, अनाथालय का दौरा भी किया, गांधी चौक में उन्होंने बड़ी सभा भी ली। उन्होंने शुक्ल भवन में प्रार्थना की, वहां आज भी गांधी चबूतरा मौजूद है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी कल्पना करते थे कि इस देश में रामराज्य की स्थापना हो। रामराज्य की स्थापना की कल्पना के संबंध में रामायण में लिखा है कि- दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य काहु नहीं व्यापा। उनकी एक अलग सी सोच थी कि आजादी के बाद ऐसा देश बने जहां किसी को किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो, परेशानी न हो, कोई गरीब न हो, कोई दुखी न हो । महात्मा गांधी जी के मन में अलग से एक राम राज्य की कल्पना थी । राम राज्य को साकार करने के दृष्टिकोण से एक ग्राम स्वराज की दूसरी कल्पना भी थी । गांधी जी ने ग्राम स्वराज की कल्पना की और वे कहते थे कि भारत की आत्मा गांव में बसती है । जब भारत की आत्मा गांव में बसती है तो गांव के लोग खुशहाल हों, गांव के लोग खुशहाल रहें, किसान खुशहाल हों, मजदूर खुशहाल हों, महिलाएं खुशहाल हों, विद्यार्थी खुशहाल हों । भारत की आत्मा जब गांव में बसती है, ग्राम स्वराज की बात आती है तो किसी किसान को कर्ज से आत्महत्या न करनी पड़े, उनकी उपज का भरपूर मूल्य उसको मिले, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकें तभी ग्राम स्वराज सार्थक होगा । स्वास्थ्य ठीक रहे, भरपेट भोजन मिले, गांव में हरियाली हो, सभी जाति-धर्म-संप्रदाय के लोग गांव में एक-साथ मिल-जुलकर रहें, आपस में भाईचारा हो, सद्भाव हो, एक-दूसरे का सम्मान करें, एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ रहें, गौमाता की सेवा करें, किसानों को आत्महत्या न करनी पड़े, उनको भरपूर उपज मिले ।

सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, राम राज्य और ग्राम स्वराज की उसी कल्पना को वर्तमान में हमारी कांग्रेस की सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार पूरा करने जा रही है । अभी अजय

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

चंद्राकर जी कह रहे थे नरवा, गरूआ, घुरवा, बाड़ी कहां से आयेगा, कैसे होगा ? कुछ समझ में नहीं आता, कोई बजट नहीं है । काम हो रहा है उनको देखना चाहिए । वे कहते हैं कि बजट से क्या मतलब है ? बजट के बिना प्रावधान के भी अगर हम काम कर रहे हैं, वे जान रहे हैं लेकिन विरोध करना क्योंकि यह एक ऐसी योजना है, इस योजना को क्रियान्वित करने में जब सब लोग इसे कर लें तो निश्चित तौर पर ...।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- पिछली बार भी हम लोग देखते थे कि शुरू से इनकी आदत रही है कि उनका पूरा बजट में ही ध्यान रहता है ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष जी, नरवा योजना । सब जानते हैं कि वाटर लेवल डाऊन हो रहा है, सिंचाई के लिये पानी नहीं मिल रहा है । नरवा में स्टॉपडेम बनाना, एनीकट बनाना, पीचिंग करना, पानी को रोकना ताकि बारहों महीने हमें पानी मिल सके । किसान को सिंचाई के लिये मिल सके, वॉटर लेबल हो, पेयजल की बात न हो । गरूआ की बात, गौमाता की सेवा की बात हम आडम्बर नहीं करते, गौशाला के निर्माण की बात नहीं करते, यह डे केयर है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि आप अनुमति दें तो मैं इसी विषय पर कुछ बोलना चाहता हूं । मैं इसी विषय पर जो चल रहा है उसी में बोलना चाहता हूं, मेरा कोई आक्षेप नहीं है । आपकी योजना महत्वाकांक्षी हो सकती है, मैंने उसके विरोध में नहीं कहा । मैंने यह कहा कि आज तक विधानसभा में उसका कोई कांसेप्ट नहीं रखा गया, यदि आप अच्छा समझ रहे हैं तो मैं भी अच्छा कहूं । यह कांसेप्ट है, यह बजट है, यह तरीके हैं, यह क्रियान्वयन एजेंसी है, इतने दिन में इतने का लक्ष्य है, प्रदेश की सबसे बड़ी पंचायत को बता देंगे तो उसमें आपत्ति क्या है ? मेरी तो बस यही मांग है ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष जी, बताया गया है, बताया जा रहा है, बाहर भी बताया जा रहा है कि यह प्रोजेक्ट क्या है इसके तहत् काम कैसे होगा, क्या-क्या काम होगा, क्या लाभ होगा ? सब चीजें बतायी जा रही हैं । मैं नहीं समझता कि माननीय अजय चंद्राकर जी उससे अनभिज्ञ होंगे कि उसमें जो किया जा रहा है उससे क्या लाभ होना है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बड़े ज्ञानी हैं, ज्ञान का ओवरफ्लो हो जाता है इसलिये इन्हें समझ नहीं आ रहा है ।

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आपके पास 3 ठोस आदमी हैं । (हंसी)

श्री ताम्रध्वज साहू :- सम्माननीय अध्यक्ष जी, गांधी जी और उनका असाधारण व्यक्तित्व । मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि जिनका जन्म 150 वर्ष पूर्व हुआ, एक लंबी अवधि 150 वर्ष होती है और पढ़ाई के दरमियान उन्होंने जो किया हो, पढ़ाई के बाद जब उनके सामने यह परिस्थितियां बनीं, विदेशों

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

में उन्हें छोटा समझा गया, भारतीय समझा गया, गाड़ी से उतारा गया, उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ी। जो भी उनका हुआ है वह उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के लिये यह समय बड़ा कम है, गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा जितने बड़े ग्रंथ और पुस्तकों पर चर्चा करने से भी बड़ा है क्योंकि यदि उनके जीवन के हर पहलू पर चर्चा की जाये तो बहुत कम समय होगा । उनकी 150 वीं जयंती पर एक बार उनकी शिक्षा एवं उनके आदर्शों का हम आत्म मंथन करें और गांधी जी ने जिस नये समाज की रचना की बात की थी, उस समाज का निर्माण हम इन व्यवस्थाओं में परिवर्तन करके करें । गांधी जी के चिंतन के दो प्रमुख आधार थे, मैं बहुत कम समय में अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा क्योंकि समय कम है । राष्ट्रपिता के दो प्रमुख आधार स्तंभ थे, सत्य और अहिंसा । गांधी जी के अनुसार सत्य के द्वारा ही ईश्वर का अनुभव किया जा सकता है । गांधी जी के लिए सत्य एवं ईश्वर समरूप थे । ब्रिटिश शासनकाल में अहिंसा का व्यापक प्रयोग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया और लोगों को उससे जोड़ा । गांधी जी ने अहिंसा को एक आंदोलन का रूप दिया । गांधी जी सत्य को सबसे बड़ा कानून और अहिंसा को सबसे बड़ा कर्तव्य मानते थे । सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी की सोच थी कि यदि भारत के प्रत्येक गांव में पंचायतीराज कायम होगा तभी सामाजिक समरसता आ पाएगी क्योंकि बिना सामाजिक समरसता के देश तरक्की नहीं कर सकता । यही काम पंचायती राज व्यवस्था लागू करके हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी जी ने किया । गांधी जी ने ऐसे संविधान की रचना करवाने की बात कही, प्रयत्न किया जो भारत को एक तरह की गुलामी और परावलम्बन से मक्त कर दे । गांधी जी ने कहा कि आजादी तो हमें मिल गई लेकिन सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल करना बाकी है । उनका लक्ष्य भारत की जनता को सर्वांगीण विकास से जोड़ना था । गांधी जी ने कहा था कि जो भी करें वह समाज के आखिरी व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए, इसलिए ग्राम सुराज, उद्योग, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, इन सब बातों पर उन्होंने बहुत जोर दिया । अध्यक्ष जी, गांधी जी की शिक्षा का मतलब क्या था । उनकी शिक्षा का उद्देश्य क्या था । गांधी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, बालक आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो सके । गांधी जी ने संस्कृति को शिक्षा का आधार माना । उनके अनुसार मानव के व्यवहार में संस्कृति परिलक्षित होनी चाहिए । उनके अनुसार सच्ची शिक्षा यह है, जिसके द्वारा बालकों का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो सके । गांधी जी ने चारित्रिक और नैतिक विकास को शिक्षा का उचित आधार माना । सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के विचारों और उनके कार्यों को अपनाने से हम अपने आप को सुरक्षित रख सकेंगे । दुनिया को स्वच्छ संदेश दे सकेंगे । हम ऐसे समुदाय की रचना करें जिसमें सभी मानव भाई-भाई की तरह रहें । गांधी जी के विचार व आदर्श शाश्वत हैं । इन्हीं मार्गों पर चलकर हम 21वीं सदी में आदर्श समाज बना सकते हैं । अध्यक्ष जी, दो लाईन बोलकर अपनी बात

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समाप्त करता हूं - आप कर्म बोइए और आदत काटिये, आदत को बाइए और चरित्र काटिये, चरित्र को बोइए और भाग्य को काटिये, तभी तुम्हारा जीवन सार्थक होगा, धन्यवाद, जय हिंद, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद आपका । माननीय सदस्यों के स्वल्पाहार की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है । कृपया सुविधानुसार स्वल्पाहार ग्रहण करें ।

समय :
5:00 बजे

(सभापति महोदय (श्री मनोज सिंह मंडावी) पीठासीन हुए)

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय सभापति महोदय, मैं सबसे पहले आपको, माननीय मुख्यमंत्री जी को, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी को और इस सदन के सभी सदस्यों को बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं । बहुत बहुत बधाई देना चाहता हूं । आज हम एक इतिहास गढ़ रहे हैं, पूरे देश में हमारी विधान सभा है जो गांधी जी की 150वीं जयंती को और साथ में शास्त्री जी की जयंती को हम सब मिलकर सामूहिक रूप से मना रहे हैं । शायद, हमारे बहुत से सदस्य ऐसे होंगे जिन्होंने गांधी जी को पढ़ा नहीं होगा, गांधी जी को सुना नहीं होगा, गांधी जी के विचारों को जाना नहीं होगा । आज उन सबको इस सदन के माध्यम से, मीडिया के माध्यम से पूरे देश को, कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा ने दो दिन बैठकर गांधी की विचारधारा पर विचार किया है । गांधी जी एक ऐसे महान विचारक थे। गांधी जी पारिवारिक होने के बावजूद भी एक संत थे। वे एक महान पुरूष थे। गांधी जी में बुद्ध की अहिंसा थी। महावीर का अपरिग्रह था। उपनिषदों का सत्यमेव जयते था और तीनों एक साथ मिलते हैं, तब महात्मा गांधी बनता है। ऐसे महात्मा गांधी का 19वीं शताब्दी में जन्म हुआ। 20वीं शताब्दी में वे फले-फूले और 21वीं शताब्दी में वे हमारे भविष्य के निर्धारक के मूल तत्व बने, परंतु अगर आज हम इस बात के ऊपर विचार करें कि जब 21वीं सदी है तो 21वीं सदी में कृत्रिम बुद्धि का उपयोग हो रहा है। 21वीं सदी में रोबोट बन गये हैं। ऐसे समय पर गांधी जी शायद इस बात को जानते थे और इसलिए गांधी जी ने कहा था कि यह सच है कि मेरा देह आप सबके बीच में नहीं रहेगा, परंतु उसके बाद भी मेरे विचार रहेंगे। मैं कितना भी बूढ़ा हो जाऊं, परंतु मेरे विचार कभी बूढ़े नहीं होंगे। आज गांधी को मानने वाले तीन प्रकार के लोग हैं। एक तो ऐसे लोग हैं जो गांधी के नाम पर सत्ता प्राप्त कर लेते हैं पर सेवा कम और राज ज्यादा करते हैं। इस बात का कष्ट है कि जब गांधी जी की हम 150वीं जयंती मना रहे हैं। आखिर गांधी कहां चले गये ? गांधी कहां खो गये ? हमने 60 सालों तक इस देश में राज किया। गांधी जी के विचारों का ऐसा कौन सा विषय है, जिसके ऊपर में गांधी जी ने नहीं बोला है। गांव के ऊपर, गरीब के ऊपर, किसान के ऊपर, गाय के ऊपर, राम के ऊपर, धर्म के ऊपर, शराब के ऊपर नेताजी ने उस विषय को छूआ। अगर आप गांधी के सच्चे अनुयायी हैं। सभापति जी, इस दो दिन के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सत्र में मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि सरकार को मजबूर करे कि गांधी जी 150वीं जयंती पर छत्तीसगढ़ में शराबबंदी घोषित की जाती है। (मेजों की थपथपाहट) इसे मजबूर करे। इस बात की घोषणा करें।

श्री कवासी लखमा :- आज बंद है। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप तो उस विभाग के मंत्री हैं। आपके घर आज रात को पहुंच जाएगी। बंद होने से कुछ नहीं होता। (हंसी) गांधी जी ने शराब के बारे में कहा। मैं कहना चाहता हूं कि शराब का नशा..।

श्री अजय चन्द्राकर :- शराबबंदी नहीं हो तो कम से कम हाउस में शराब की कोई प्रथा आयी थी, उसकी बंदी हो।

श्री कवासी लखमा :- यह प्रोग्राम आप किया करते थे। ऐसा लग रहा है। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- गांधी जी ने शराब के बारे में कहा, मैं यह कहना चाहता हूं कि शराब का नशा करना लगभग आत्महत्या करने जैसा है, क्योंकि एक पुरूष या एक महिला जो नशीले पेय लेती है और पागल हो जाती है। अपनी आत्मा को मार देती है। कुछ समय के लिए निश्चित रूप से आत्मा की मृत्यु शरीर की मृत्यु से बदतर है। ये गांधी जी के शब्द हैं। गांधी जी ने तो यहां तक कहा है कि शराब से मिलने वाले टैक्स से जो शिक्षा दी जाती है, उसकी बजाय ऐसी शिक्षा न दी जाए तो वह ज्यादा बेहतर है।

श्री कवासी लखमा :- आप 15 साल क्या कर रहे थे? 15 साल उस पैसे को कहां लगा रहे थे। यह बताइए कि उन 15 सालों में उस पैसे को कहां लगा रहे थे?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपकी चिंता कर रहे थे।

श्री कवासी लखमा :- 15 साल में वह दारू वाला पैसा कहां जा रहा था?

श्री संतराम नेताम :- यह विचार 15 साल पहले क्यों नहीं आया?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राष्ट्र के बच्चों या अन्य सार्वजनिक सेवाओं की शिक्षा पर नशे की बिक्री से होने वाली आय को खर्च करना आपराधिक कृत्य है। यह मैं नहीं कह रहा हूं। गांधी जी कह रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- यही मैं कह रहा हूं कि 15 साल तक उस पैसे किधर उपयोग कर रहे थे? क्या मोदी के पास जा रहा था?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय बृजमोहन जी, आपके पिताजी गांधीवादी थे। आप नहीं हैं। इस बात को मैं जानता हूं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके पिता जी गांधीवादी थे, आप नहीं हैं। मैं इस बात को जानता हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- थे नहीं, वे अभी हैं। वे 87 साल के हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- वे गांधी विचारधारा के हैं। लेकिन आप क्यों नहीं हुए ? आप गांधी विचारधारा के क्यों नहीं हुए ?

श्री केशव चन्द्रा:- वह गांधीवादी हैं, तभी तो बोल रहे हैं कि शराबबंदी करो।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तो असली गांधीवादी आप हैं। सत्तू भैय्या, असली गांधीवादी आप हैं और भाटो है।

श्री केशव चन्द्रा :- वह गांधी की चिंता कर रहे हैं इसीलिए तो बोल रहे हैं कि पूर्ण शराबबंदी करो।

एक माननीय सदस्य :- नाथूराम गोडसे की विचाराधारा से हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने मजबूर करके सत्यनारायण जी को गांधीवादी बना दिया है। आजकल उनकी हंसी मजाक समाप्त हो गई है। आज उनके द्विअर्थी संवाद समाप्त हो गए हैं। आजकल वे शांत हो गए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- सत्यनारायण जी टेंशन में हैं कि शराबबंदी का रिकमण्ड करूं कि चलने के लिखू, कहकर के। वह उस तनाव में जी रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सरकार को राष्ट्र के निर्माण के लिए इस तरह के राजस्व के उपयोग के प्रलोभन से दूर रहना चाहिए। यदि हम बुराई को मिटाते हैं तो आसानी से देश की आय बढ़ाने के अन्य तरीके और साधन खोज लेंगे। यह महात्मा गांधी जी ने हरिजन पत्रिका में 21 सितम्बर, 1947 को कहा है, देश की आजादी के समय कहा है। उन्होंने बहुत सारी चीजें कही हैं। मैं सोचता था कि जब माननीय विधान सभा अध्यक्ष जी अपना कथन पढ़ेंगे तब सरकार से आग्रह करेंगे। मुझे लगता था कि जब मुख्यमंत्री जी का भाषण होगा, निश्चित रूप से इस विषय को छूयेंगे, इसके बारे में कुछ कहेंगे। आपने अपने घोषणा-पत्र में कहा है कि हम शराबबंदी लागू करेंगे। किसी ने मांग नहीं की थी। शराबबंदी लागू करने के लिए कमेटी बनाने की जरूरत क्या है ? सत्तू भैय्या कहां जा रहे हैं, गांधी जी बुला रहे हैं। (सदस्य श्री सत्यनारायण शर्मा सदन से बाहर जा रहे थे) गांधी जी बुला रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति जी, आप पहली बार आसंदी पर बैठे हैं, आपको बहुत-बहुत बधाई। माननीय बृजमोहन भैय्या मांग कर रहे थे, माननीय आबकारी मंत्री जी के साथ अलग से बैठ जायें, उसमें से थोड़ा सा चर्चा कर लें।

श्री केशव चन्द्रा :- हम लोग लंबे समय से मांग कर रहे थे। यह बात और है कि पहले आप मांग कर रहे थे अब इनसे मांग कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- चलिये-चलिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आज यह सरकार कमेटियां बना रही हैं। कमेटी की जरूरत क्या है ? जब शराबबंदी करना है तब कमेटी की जरूरत क्या है ? कौन सा गांधीयन विचार है ? गांधी जी ने तो शराब के बारे में जो कुछ कहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- बृजमोहन जी, गांधी जी के बारे में भाषण सुन-सुनकर आधे मंत्री गायब हो गए हैं और ये गांधीवादी लोग हैं। इधर देखिये गांधीवादियों की स्थिति ?

श्री ताम्रध्वज साहू :- अभी आप सुने नहीं हो। आसंदी से सूचना दी गई जिन-जिन सदस्यों को चाय पीना है, बाजू में व्यवस्था है। तो आसंदी के आदेश का पालन करना हम सबका काम है।

श्री देवेन्द्र यादव :- गोडसेवादी यहां पर पूरे उपस्थित हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि ये लोग गांधी के नाम पर सत्ता प्राप्त करके राज ज्यादा कर रहे हैं, गांधी के विचारों को लागू नहीं कर रहे हैं। सभापति महोदय, दूसरे प्रकार के लोग कौन से होते हैं ? जो गांधी के नाम पर संस्थाएं बना लेते हैं। आप और हमारी सरकारों से अनुदान ले लेते हैं। परन्तु गांधी के विचारों के ऊपर वे किसी प्रकार कोई काम नहीं करते हैं। तीसरे प्रकार के लोग होते हैं, जो वास्तव में गांधी के विचारधारा के ऊपर काम करते हैं। परन्तु उनकी संख्या दिन ब दिन घटती जा रही है। जब हम यहां पर गांधी जी के विचारों के ऊपर चर्चा कर रहे हैं तो हमको यहां पर सोचना पड़ेगा कि आने वाले समय में क्या होगा ? गांधी जी की गांवों के बारे में जो कल्पना है, गांधी जी के धर्म के बारे में जो कल्पना है, अच्छी बात है। इस 21वीं सदी में इनकी पार्टी को अब धर्म के ऊपर आना पड़ रहा है, गाय के ऊपर आना पड़ रहा है, इनके नेता मन्दिर जाने लगे हैं। जब इनको समझ में आ गया कि गांधीयन को छोड़ने से काम नहीं चलेगा, धर्म को छोड़ने से काम नहीं चलेगा, राम को छोड़ने से काम नहीं चलेगा, गाय को छोड़ने से काम नहीं चलेगा, ..।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सभापति महोदय, एक मिनट । हम कभी भी नहीं छोड़े थे । आप लोग दिखावा करते हो । हम लोग वास्तविक करते हैं । जितना गणेश पंडाल अपने-अपने शहर में देख लेना, गणेश पंडाल सबसे ज्यादा कांग्रेसियों का रहेगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- राम को काल्पनिक कहने वाले भी आप ही लोग हैं । ये क्यों भूल जाते हो ? सुप्रीम कोर्ट में शपथ-पत्र दिए हो ।

श्री देवेन्द्र यादव :- गोड़से मुर्दाबाद बोलने वाले आप लोग नहीं हो, गोड़से मुर्दाबाद ।

श्री ताम्रध्वज साहू :- सभापति महोदय, अभी दुर्गा पंडाल लगा हुआ है। सर्वाधिक घूमकर देख लो, कांग्रेसी लोग हैं । भाजपा के लोग एकाध-दो जगह है और जो धर्म की बात, गौ सेवा की बात करते हो, धर्म की बात सबसे ज्यादा व्रत, उपवास हम कांग्रेसी लोग रखते हैं, आप लोग नहीं रखते और राम की बात करते हो ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- कांग्रेसी लोग दत्तात्रेय गोत्र वाले लोग हो, कांग्रेस के दत्तात्रेय गोत्र वाले उधर बैठे हो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, राम काल्पनिक है, ये शपथ-पत्र देने वाले ये लोग हैं और (व्यवधान) ये कहते हैं कि गणेश और दुर्गा पंडाल (व्यवधान) हम हिन्दू नहीं हैं, ये प्रचार करने वाले ये लोग हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, राम नाम जपना, पराया माल अपना । (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, हम लोग धर्म को मानते हैं और ये लोग धर्म की राजनीति करते हैं, ये अंतर है । इनको गोड़से मुर्दाबाद बोलने, सुनने में मिर्ची लग जाती है । ये ऐसे लोग हैं और गोड़से मुर्दाबाद बोलने में तकलीफ होती है ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सभापति महोदय, हमारे मुख्यमंत्री जी गौ हत्या के नाम पर राजनीति करते थे, अब उनके पालन-पोषण, रहने-बसने सबको काम हमारी सरकार कर रही है । उनको हरा चारा खिलाया जा रहा है, उनकी सेवा हमारी सरकार में माननीय मुख्यमंत्री जी कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, बड़ा आदमी बनना है तो एस.पी., कलेक्टर का कॉलर पकड़ो, ये गांधी दर्शन है । अधिकारी को जूता मारो, ये इनका गांधी दर्शन है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, हमारे मुख्यमंत्री जी पशुधन के लिए गौठान बना रहे हैं तो इनको समस्या हो रही है और ये आरोप लगा रहे हैं । जब 15 साल से सत्ता में थे तो इनको गाय की याद नहीं आई, हमारे पशुधन का ख्याल नहीं आया ।

श्री सौरभ सिंह :- गोठान में कितनी गायें मर रही हैं, उसको भी बता दो।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप लोगों ने खाली सड़कों में छोड़ दिया था, हमारी सरकार उनका ख्याल तो कर रही है ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, जिस नाम से राजनीति कर रहे थे । अब उनके पास कोई मुद्दा ही नहीं रह गया है इसीलिए तिममिला गए हैं, अब उनके पास कोई मुद्दा ही नहीं रह गया, जो अब गाय की भी पूजा करते हैं, राम की भी पूजा करते हैं, माता कौशल्या की भी पूजा करते हैं । 15 सालों में माता कौशल्या के मंदिर भी नहीं गए, हमारे मुख्यमंत्री जी और माननीय गृहमंत्री जी ने माता कौशल्या के मंदिर में दर्शन करके आये हैं। 15 सालों तक राज करने के बाद भी आप लोगों ने माता कौशल्या के मंदिर नहीं गए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हैं । आज यह घोषणा कर दीजिए कि मैं आजीवन टोपी पहनूंगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि सम्माननीय सदस्य लोग गांधी जी को मानते हैं या गोड़से को मानते हैं । गांधी जी की विचारधारा को मानते हैं या गोड़से की विचारधारा को मानते हैं, यह पहले बता दीजिए । ये हमारे साथ गोड़से मुर्दाबाद बोलेंगे या नहीं बोलेंगे ? गोड़से मुर्दाबाद । (व्यवधान) गांधी जी अमर रहे, गांधी जी अमर रहे ।

(सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्री देवेन्द्र यादव :- गोड़से मुर्दाबाद के नाम से इनके मुंह से आवाज नहीं निकल रही है। हमने बोला कि गांधी जी अमर रहे तो इन्होंने साथ दिया, लेकिन गोड़से मुर्दाबाद बोले तो ये लोग शांत हो गए । ये कैसी विचारधारा है।

(सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्री देवेन्द्र यादव :- इस तरह से इनका दोहरा चरित्र सामने आ जाता है।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, केवल एक सेकण्ड चाहूंगा। मैं बोलता हूं कि गांधी जी की विचारधारा, सिद्धांत की बात आ रही है तो इसमें धर्म, मजहब और संस्कृति की बात क्यों समाहित की जा रही है ? अगर ये बातें धर्म, मजहब और कांग्रेस पार्टी, भाजपा की विचारधारा है तो मैं एक बात कहना चाहूंगा कि सत्ता के खातिर मजहब की ढाल बनाने वालों, भूखी, बेबश जनता को ढाल बनाने वालों एक हाथ में खंजर लेकर एक हाथ में गीता वे लोग कितने राम बनाए, कितनी बन पायी सीता ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- सभापति महोदय, बृजमोहन जी सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं और ये लोग बार-बार टोका-टाकी कर रहे हैं, ये उचित नहीं है । आपको निर्देशित करना पड़ेगा ।

सभापति महोदय :- हां, हां । अग्रवाल जी, चलिए बहुत हो गया । माननीय नेता प्रतिपक्ष भी बोल रहे हैं कि अब बहुत टोका टाकी हो गया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आज कांग्रेस पार्टी जो गांधी की किसी जमाने पर, किसी समय पर अनुयायी थी, आज कांग्रेस पार्टी को कि हम गांधी के अनुयायी हैं, अभी कुलदीप जुनेजा जी बोल रहे थे कि शहीद स्मारक में रामलीला करवानी पड़ रही है । क्यों ? (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- रामलीला में क्या तकलीफ है, आप भी आईये भई ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- स्वागत है, अभिनंदन है ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आपका भी स्वागत होगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- गांधी विचारधारा को वापस अपनाना पड़ रहा है । अभी तक हमने खाली गांधी के नाम वालों की पूजा की है । वास्तविक गांधी के विचारों को नहीं अपनाया है, क्योंकि इनको समझ में आ गया, अभी तक हमने खाली गांधी के नाम वालों की पूजा की है । वास्तविक गांधी के विचारों को नहीं अपनाया है । छद्म गांधियों का नाम लेने से जनता नकार देती है, वास्तविक गांधी के नजदीक जाओगे, तब जनता अपनायेगी । अब इनको समझ में आ रहा है ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- वास्तविक गांधी के पीछे चले गये थे, दूसरे वाले । 15 साल दूसरे गांधी के पीछे चले गये थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आखिर माननीय चौबे जी, पूरे सदन में आपके समर्थकों की संख्या सबसे ज्यादा है । यह मानना पड़ेगा ।

श्री बृहस्पत सिंह :- उसमें से भी ज्यादा आप समर्थन में दिख रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्यों कुलदीप जी, दत्तात्रेय पुत्रों में यह गांधी असली है कि यह गांधी असली है, यह बता दो ?

श्री कुलदीप सिंह जुनेजा :- आप लोग 15 साल कौन से गांधी के चक्कर में थे, यह बताईये ? हमारे गांधी तो राष्ट्र के महात्मा गांधी शुरू से हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राजनैतिक कार्यशैली के रूप में धर्म से प्रेरित बताने से कभी परहेज नहीं किया । नवजीवन में उन्होंने लिखा था कि मेरी दृष्टि में धर्महीन राजनीति कूड़ा और कचरा है । जब हम लोग धर्म की बात करते हैं तो ये लोग साम्प्रदायिक बोलते हैं । गांधी जी ने कभी धर्म को साम्प्रदायिक नहीं बोला । गांधी जी की समाधि पर आज भी राम-राम लिखा है । जब आंदोलन होते थे, प्रदर्शन होते थे, वह सीताराम-सीताराम बोलते थे, राम-राम बोलते थे, भागवत का प्रवचन करते थे, भागवत के श्लोक बोलते थे, रामायण की चौपाईयां बोलते थे, उनसे उनको शांति मिलती थी । आज जब रामायण की चौपाईयां बोली जाती है, गीता की ऋचायें बोली जाती है, गांधी को मानने वाले छदम लोग कहते हैं कि साम्प्रदायिक हैं । अगर आप गांधी के अनुयायी है तो शिक्षा मंत्री जी घोषणा करिये कि गीता की ऋचायें अब स्कूलों में पढ़ाई जायेंगी । यह गांधी जी का सम्मान होगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- गांधी जी का वह सबसे प्रिय ग्रंथ था । बोल दीजिए, छत्तीसगढ़ के कोर्स में लागू करेंगे ।

श्री बृहस्पत सिंह :- अचानक गांधी जी का प्रेम कहां से जगा ? गांधी जी केफोटो से आप लोगों को लग रहा है क्या ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, माननीय चन्द्राकर जी ने सारे विषय पर तर्क-वितर्क दे दिये, लेकिन हमने सवाल पहले पूछा कि वे कौन से विचारधारा को मानते हैं ? उसके बारे में नहीं बताया है । मैं आपके माध्यम से यह जानना चाहूंगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- गांधी जी बोलते थे कि धर्म की राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है । वे जानते हैं कि धर्म क्या है ? मैं उन्हें धार्मिक कहता हूँ जो दुख-दर्द को समझता है । सरकारों का पहला काम है, गरीब के दुख-दर्द को समझना, आम जनता के दुख-दर्द को समझना, उसका निराकरण करना । जनता के दुख दर्द को समझने के बजाय, हम जब दो दिनों का विधान सभा का सत्र बुला रहे हैं, ते हमने क्या किया ? आज मुख्यमंत्री जी ने पांच योजनाओं की घोषणा की, उन योजनाओं का नाम, महात्मा गांधी सुपोषण योजना क्यों नहीं हो सकता था? जब गांधी जी के जन्म दिवस पर उन योजनाओं की घोषणा हो रही है, उन योजनाओं का नाम हमने महात्मा गांधी के नाम पर क्यों नहीं रखा ? सिर्फ महात्मा गांधी के नाम पर आप राजनीति करना चाहते हो, महात्मा गांधी को याद नहीं करना चाहते । आप उनके नाम पर योजनाओं का नाम रखते ?

श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय :- सभापति जी, महात्मा गांधी रोजगार गारण्टी अधिनियम का नाम परिवर्तन किसने किया ? आज महात्मा गांधी को अमलीजामा पहनाकर दस्तावेजों में समायोजित कर दिया । चश्मा लगा दिया गया है । यह लोग ऐसे विचारधारा के लोग है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- चश्मा लगाये नहीं बल्कि उसका चश्मा उतारकर फेंक दिये हैं। खाली चश्मा।

श्री धर्मजीत सिंह :-सभापति महोदय, मैं बहुत देर से देख रहा हूं कि इधर से तो लोग खड़े होकर जवाब सवाल कर रहे हैं, लेकिन आप मंत्र मुग्ध होकर बृजमोहन जी को सुन रहे हैं। सही गांधीवादी आप दिख रहे हैं।

सभापति महोदय :- सबको सुन रहा हूं, हंस भी रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- धर्मजीत भैय्या, मैं तो कई बार थोड़ा सा डरता हूं कि कहीं ये अपने असली रूप में न आ जाएं। (हंसी)

श्री कवासी लखमा :- सही तो बोल रहे हैं इनको पार्टी पूछती नहीं है। ये वरिष्ठ मंत्री को छोड़कर श्री शिवरतन शर्मा को प्रभारी बनाते हैं। वरिष्ठ नेता बृजमोहन जी को छोड़कर दंतेवाड़ा का प्रभारी कौन बनता है?

श्री अजय चनद्राकर :- वेरी गुड।

श्री कवासी लखमा :- आप तो भाई एकदम राजा टाईप दंतेवाड़ा गये थे। जूता-मोजा पहनाने वाला अलग, टोपी लगाने वाला अलग, कुर्ता साफ करने वाला अलग, दाढ़ी बनाने वाला अलग, चश्मा पहनाने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

वाला अलग। (हंसी) यह पहली बार देखे भाई। गीदम वाले अभी घर की पोताई किए, आगे जाकर क्या होगा। मैं प्रभारी मंत्री हूं मुझे मालूम है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- संसदीय कार्य मंत्री जी, एक बार चेक करवा लीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- बाजू में फारेस्ट मंत्री जी चेक कर लेंगे ना।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- गांधी जी राजनीति में शासक को राम राज्य से भी जोड़ते थे। श्री राम गांधी जी के कण-कण में थे। श्री राम को वे राजनीति एवं समाज के आदर्श के रूप में देखते थे। उनकी प्रार्थना में राम होते थे। उनके भजन में राम होते थे, उनकी जीवन शैली में राम होते थे और जब गांधी जी ने प्राण त्यागे तब उनके मुख से भी अंतिम शब्द राम निकला था। वे लोकतंत्र के अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति को जोड़कर देखते थे। क्योंकि श्री राम ने जिस प्रकार से सबरी के जूठे बेर खाये, प्रभू राम ने जिस प्रकार से केवट को गले लगाया वही रामराज्य था कि गरीब से गरीब, अंतिम व्यक्ति, अंतिम आदमी को गले लगाना, उसकी चिंता करना ये गांधी जी की सोच थी। आज इस सरकार की इस पार्टी की सोच कहां गई जिन्होंन गांधी जी के नाम पर इस देश में इतने सालों तक राज किया? आज वह क्या कर रहे हैं? अगर गांधी के विचारों पर ये पार्टी चलती, इनकी सरकारें चलती तो हिंदुस्तान में कोई गरीब नहीं होता, कोई बेघर और बेरोजगार नहीं होता और कोई गायों की हत्या नहीं होती।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैय्या, आप जिस निषाद की बात कर रहे हैं, कि गले लगाया तो इस छत्तीसगढ़ राज्य में भी भूपेश बघेल जी ने निषाद को गले लगाया और विधायक बनाया। इसकी ओर आपका ध्यान ही नहीं जाता है। बताईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसके लिए एक अलग सत्र बुला लो। गांधी जी को छोड़ दो उसके लिए एक अलग सत्र बुला लो।

श्री विकास उपाध्याय :- माननीय सभापति महोदय, 15 साल वालों ने यह काम किया कि इस देश में महिला और बच्चों के कुपोषण के मामले में हमारा प्रदेश दूसरे नंबर पर है। (शेम-शेम की आवाज)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आजाद भारत में गांधी जी का सपना था गांव, गरीब और गाय का उत्थान। वह गांव को इतना स्वावलंबी बनाना चाहते थे कि नमक को छोड़कर गांव में किसी दूसरे चीज की आवश्यकता न पड़े। आपके समय में गांव की क्या हालत बना दी? पहले गांव में लोहार भी होते थे, बढ़ई भी होते थे, धोबी भी होते थे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 15 साल में सारे विलुप्त हो गये, उसको हम लोग अब ठीक कर रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अरे, मैं देश की बात कर रहा हूं भैय्या। मैं पूरे हिन्दुस्तान की बात कर रहा हूं। गांधी जी सिर्फ छत्तीसगढ़ के नहीं थे, बल्कि पूरे देश के पूरे विश्व के थे। गांधी जी की विचारधारा को पूरा देश अपना रहा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- देश तो ठीक है, देश को दूसरा बिगाड़ रहा है यहां प्रदेश को 15 साल में क्या बिगाड़ दिये कि सारे ऐसे लोग गायब हो गये।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, बृजमोहन जी, गांधी जी ने यहां कुछ लोगों को क्षमा कर दिया है, आप कुछ भी बोल सकते हैं, गांधी जी उसको ध्यान नहीं देंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आज पूरे देश की अर्थव्यवस्था शहरों पर केन्द्रित हो गयी। हम गांवों की विकास की बात करते हैं, हम गांधीयन विचारधारा की बात करते हैं, ऐसा है, मैं आज उस विषय पर नहीं जाना चाहता। अगर आप 15 साल की बात करोगे न तो आज गांव में कितनी खुशहाली आयी है, आज गांव में कितना धान बिक रहा है, आज गांव में कितने पक्के मकान बने हैं, आज गांवों में कितनी कारें आयी हैं, आज गांवों में कितने ट्रैक्टर आये हैं, आज गांवों में कितनी जीपें आयी हैं, आप उसकी कल्पना करिये।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- सभापति महोदय, भाई भूपेश बघेल जी को बधाई दीजिए, 2500 रूपये धान का समर्थन मूल्य दे रहे हैं। भाई भूपेश बघेल जी को इसके लिए बधाई दीजिए। आज छत्तीसगढ़ में मंदी का दौर खत्म हो गया।

श्री रामकुमार यादव :- चंद्राकर जी, स्मार्ट सीटी की बात मोदी जी ने की है, गांधी जी ने नहीं की है मेरे भाई, स्मार्ट सीटी शार्क बात करते हैं, हम गांधीवादी गांव की बात करते हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- वा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भूपेश बघेल जी को बधाई देते हुए फिर शुरू करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आज क्या हो रहा है ? क्यों करना पड़ रहा है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट, आप में से रतनपुर गये हैं, अभी-अभी तत्काल दो चार दिन में, थोड़ा एक बार रतनपुर हो करके तो आ जाओ, कितनी दुर्दशा है जरा देख लो, अगर रतनपुर गये होंगे तो बता दो और नई गये होंगे तो अभी दो दिन बाद चले जाना।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- वह रास्ता तो आपके लिए ही सुरक्षित है। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- वह आज का विषय नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति महोदय, मैं आज विकास की योजनाओं पर बात नहीं कर रहा हूं। सरकारों की उपलब्धियों पर बात नहीं कर रहा हूं, मैं आज गांधीयन पर बात कर रहा हूं। गांधी जी के विचारों पर बात कर रहा हूं, गांधी जी के सिद्धांतों पर बात कर रहा हूं। गांधी जी की सोच पर बात कर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रहा हूं, गांधी जी के द्वारा विभिन्न विषयों में बताये गये विचारों पर मैं बात कर रहा हूं और उसी पर, मंत्री जी अगर आप इस बात को सुनकर इम्प्लीमेंट करेंगे तो निश्चित रूप से फायदा होगा। कुछ नहीं आप सिर्फ जो आप नगर-निगमों में आपने गांव जोड़े हैं न चाहे हमारी सरकार ने या आपकी सरकार ने सिर्फ उन गांवों का विकास कर दो। उनको शहरों जैसा बना दो, मेरे विधानसभा में भी ऐसे बहुत सारे गांव हैं, जो आज शहर नहीं बन पाये। हमने उनको जोड़ दिया है तो आज हमको यह बात सोचनी पड़ेगी कि आखिर गांव क्यों खाली हो रहे हैं ? गांव की आबादी क्यों शहरों में आ रही है और इसलिए गांधी जी का सोचना था कि गांव सेल्फ सफिसियेंट होना चाहिए। गांव आत्मनिर्भर होना चाहिए, गांव में नमक के अलावा बाकी कोई दूसरी चीजें बाहर से आने की जरूरत नहीं होना चाहिए। आज गांवों की क्या हालत हो गयी और इसके ऊपर में हमको विचार करना पड़ेगा ? जब हम दो दिन की चर्चा विशेष सत्र बुलाकर कर रहे हैं, मैं तो सरकार को बधाई दूंगा कि आपने दो दिन का सत्र बुलाया। निश्चित रूप से आपकी आंखें खुलेंगी, गांधीयन विचार आपको मालूम पड़ेंगे। आप उसके अनुसार अगर दस प्रतिशत भी चल लेंगे तो छत्तीसगढ़ का कुछ भला हो जायेगा।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- हो जायेगा, हो जायेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कैसे होगा ? जरा बना दो गांव, जरा बना दो, गांव के विकास के लिए एक एस.आई.टी. बना दो।

श्री कवासी लखमा :- गौठान बना रहे हैं, नाला को बांधने का काम कर रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं-नहीं, जरा गांव के विकास के लिए एक एस.आई.टी बना दो। (व्यवधान) एक एस.आई.टी. बना दो।

श्री कवासी लखमा :- एस.आई.टी. नहीं बनायेंगे। अग्रवाल साहब, नाला बांध रहे हैं, आप नाला छोड़ दिये थे। यह ऊपर-ऊपर क्या ब्रिज बना रहे थे, वह रोड में कोई जाने वाला नहीं है, वहां कोई कुत्ता भी नहीं जाता है, ऊपर-ऊपर क्यों बना रहे थे, वह राज्य में क्यों बना रहे थे बताओ ?

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, करनी करईया कर चलिस, अऊ फेंकव गुरईहा के नाव 15 साल ला ये मन करिस अऊ आज हमन के बद्दी दे थे।

सभापति महोदय :- एक मिनट, सभा के समय में 6 बजे तक वृद्धि की जाये। मैं समझता हूं सदन सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति जी, आप जो कहें उससे हम सहमत हैं।

सभापति महोदय :- आदरणीय चलिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, गांधी जी ने आफ्रीका में बैरिस्टर की पढ़ाई

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

की।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- बृजमोहन जी, माननीय पहले वक्ता नेता प्रतिपक्ष आदरणीय श्री धरमलाल कौशिक जी ने अपनी बात कही, विद्वान सदस्य, आपके भाषण में विद्वता थी।

समय :
05:29 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अजय जी ने अपनी बात कही। बृजमोहन जी, आप भी कह रहे हैं, गांधी के रास्ते पर चलने का सुझाव दे रहे हैं, विकास की संभावनाओं पर अपनी बात कह रहे हैं तो छत्तीसगढ़ के परिप्रेक्ष्य में कुछ अच्छे सुझाव दीजिए न ये आलोचना और सरकारों की .....।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, आलोचना कर ही नहीं रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- तो कुछ अच्छे सुझाव आ जाये न। अभी आप शुरूआत कर दीजिए, शुरूआत कर दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आलोचना तो की ही नहीं है। मैं सुझाव ही दे रहा हूँ। मैंने कोई राजनीतिक चर्चा, बातचीत की ही नहीं। गांधी जी ने बैरिस्टर की पढ़ाई की, वे अंग्रेजी अच्छी जानते थे, सूटबूट पहन सकते थे, उनकी मातृभाषा गुजराती थी, परंतु उन्होंने हिन्दी को अपनाया। उन्होंने हिन्दी को क्यों अपनाया? उनका कहना था, वह हमेशा कहा करते थे कि

"कोई भी देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता,
जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।"

आज हमको इसकी जरूरत है कि हम अपनी एक भाषा में सब लोगों को कैसे जोड़ सकते हैं, इसके बारे में विचार करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि उन्होंने अपने धर्म के बारे में कहा कि अहिंसा के अपने संदेश के साथ, हिन्दू धर्म मेरे लिए दुनिया का सबसे गौरवशाली धर्म है, जैसा कि मेरी पत्नी मेरे लिए दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला है, लेकिन दूसरों को अपने धर्म के बारे में ऐसा ही महसूस हो सकता है। इतना स्पष्ट बोलने वाला दूसरा कोई व्यक्ति शायद पूरे विश्व में पैदा नहीं हुआ। यहां बहुत से लोग गोड़से, आर.एस.एस. के बारे में कहा। डॉ. हेडगेवार ने कहा कि पुन्य पुरूष गांधी जी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। कभी आर.एस.एस. ने गांधी जी की बुराई नहीं की। आज देश के प्रतिष्ठित समाचारपत्र ने लिखा कि पूज्य गांधी जी सामाजिक समता और समरसता के आदर्श पक्षधर थे, हम सबको उन्हें अपने आचरण में उतारना चाहिए। वर्ष 1963 में संघ की जो प्रतिदिन प्रार्थना होती थी, उस प्रार्थना में जिन महापुरूषों का नाम लिया जाता है, वर्ष 1963 के बाद से गांधी जी का

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नाम लिया जाता है और गांधीवादी समाजवाद, भारतीय जनता पार्टी, जनसंघ के जमाने में हमने अपनाया है। आज पूरा देश और विश्व क्यों मान रहा है?

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मोदी जी यू.एन.ओ. में गये थे। उन्होंने वहां पर बताया कि हम गांधी जी की 150 वीं जयंती पूरे धूमधाम के साथ मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने विश्व को युद्ध नहीं, हमने बुद्ध दिया है। इस बात को लोग मानते हैं। जब अफ्रीका से गांधी जी लौटे तो रविन्द्र नाथ टैगोर ने गांधी जी के बारे में कहा कि भिखारी के लिबाज़ में एक महान आत्मा लौट आयी है। ऐसे गांधी जी, जिन्होंने सादा, उच्च जीवन जिया। जिन्होंने आदर्श मूल्यों की रक्षा की। जिन्होंने गांव, गरीब, किसान, मजदूर, नवजवान, शिक्षा, गाय, सबके बारे में चिंता की। यहां पर गाय की बात हो रही थी। आज हमको गरवा की बात क्यों करनी पड़ रही है? अगर इतने सालों में हम गांधीवाद को मानते हैं तो हमने इतने सालों में गरवा की बात की होती तो गाय के नाम पर यह मौब्लिचिंग नहीं होती। अगर हमने इतने सालों में चिंता की होती तो आज सड़कों के ऊपर में हमको इतने जानवर नहीं दिखायी देते। कई बार तो मन में ग्लानि होती है...।

नगरीय प्रशासन मत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 सालों पहले ये स्थिति नहीं थी, सड़कों पर गाय नहीं दिखती थी? 15 सालों में आप लोगों ने हमारी जितनी गायें हैं, उनको सड़कों में भेज दिया। 15 सालों में आप लोगों ने जो अव्यवस्था फैलायी है, हम उसको ठीक करेंगे। उन गायों को ले जाकर गौठान में रखेंगे, सरकार उसकी व्यवस्था कर रही है।

दूसरा, हमारे आदरणीय मोदी जी ट्रम के प्रचार में अमेरिका गये थे। वहां पर उन्होंने कहा कि ट्रम जी अच्छे हैं, इनको दोबार जीताईये तो उसके बाद ट्रम जी ने क्या कहा? कि मोदी जी नये फादर ऑफ नेशन है, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं। हमारे देश के एक समाजवादी नेता ने कहा कि भईया, वह ट्रम्प के फादर हो सकते हैं देश के फादर नहीं हो सकते।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय मंत्री जी, आपके पास ही पशुपालन विभाग था, आप पशुपालन विभाग के मंत्री थे, आपने क्या किया था?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है मैं राजनीतिक बात नहीं करना चाहता। ये गायें क्यों मर रही हैं?

अध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल जी, आप बहुत अच्छा बोल रहे हैं, समाप्त कर दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मुझे कष्ट होता है विधानसभा की बिलासपुर जाने वाली सड़क पर आप निकल जायें, रोज एक गाय मरी हुई मिलेगी और उसको कुत्ते नोचते हुए मिलेंगे, आपके राज्य में ये हो रहा है। गौशालाओं को 6-6 महीनों से अनुदान नहीं मिला है, ये बी.जे.पी. की गौशाला है, ये कांग्रेस की गौशाला है, क्या आपने इसको भी बांट दिया है ? जो बदमाशी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

करते हैं, उनको करिये। आप गांधी की विचारधारा को मानते हैं तो गायों की, गांवों की रक्षा होनी चाहिए, धर्म, सत्य की रक्षा होनी चाहिए। गरीबों का विकास होना चाहिए। घर-घर तक पीने का पानी पहुंचना चाहिए। अगर इतने सालों तक हम गांधीयन को मानते तो आज ये स्थिति नहीं होती। हम आज जो चर्चा कर रहे हैं, ये चर्चा हम नहीं करते।

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वह राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रेरक थे। उन्होंने भारत में जन्म लिया, परन्तु उनकी ख्याति अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंची। शायद देश के एकमात्र ऐसे नेता, ऐसे व्यक्ति, ऐसे विचारक होंगे, जिनकी विश्व के कई देशों में प्रतिमायें लगी हैं। ऐसे प्रखर राष्ट्रवादी, प्रखर चिंतक, प्रखर विचारक, ऐसे महात्मा गांधी जी को, " जय जवान-जय किसान" का नारा देने वाले लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रति हम अपना नतमस्तक करते हैं और इस बात की कामना करते हैं कि हम गांधीयन पर चलकर इस देश को फिर से विश्व गुरू बना सकते हैं, हम फिर से सोने की चिड़िया बना सकते हैं, हम फिर से यहां पर दूध और घी की नदियां बहने वाला देश बना सकते हैं, हम फिर से गाय और गावों की रक्षा कर सकते हैं। आपने जो सत्र का आयोजन किया, इसके लिए आपको और सभी सोचने वालों को बहुत-बहुत बधाई, धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री देवव्रत सिंह (खैरागढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज आपने महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर जो विधानसभा का दो दिवसीय विशेष सत्र बुलाया और एक नया इतिहास कायम किया। आपके बारे में जो हम लोग सुनते थे, कहते थे कि महात्मा गांधी के आदर्शों को समझना और उसका पालन करना, दोनों में बड़ा अंतर होता है। लेकिन आज आपने इस सत्र के आयोजन के बाद पूरे देश में इस बात को बताया है कि छत्तीसगढ़ के विधायक, छत्तीसगढ़ की विधानसभा और स्वयं अध्यक्ष महोदय, आपको इस बात के लिए बधाई दिया जाना चाहिए कि पूरे देश में आज इस बात की जरूरत है कि जिस महात्मा गांधी को हम राष्ट्रपिता कहते हैं, जिसको महात्मा का दर्जा दिया गया है, जिन बातों को लेकर पूरे विश्व में उनकी चर्चा होती है, वह आज यथार्थ में महात्मा गांधी की बातों का कितना पालन हो रहा है। निश्चित रूप से आज इस चर्चा के माध्यम से मैं एक बार आपको पुन: बधाई देना चाहूंगा और कहना चाहूंगा कि आज जो ये चर्चा छत्तीसगढ़ की विधानसभा में आपके माध्यम से, सदस्यों के माध्यम से हो रही है, वह आवश्यक थी। आवश्यक इसलिए थी कि जब राष्ट्र के एक बड़े वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने महात्मा गांधी के बारे में एक बात कही थी कि हाड़-मॉस का एक पुतला कैसे एक विचारधारा के आधार पर एक देश को, एक पीढ़ी को आजादी दिला सकता है। ये आगे आने वाली पीढ़ियों को समझना पड़ेगा कि हाड़-मांस का एक पुतला कैसे एक इतनी बड़ी विचारधारा के माध्यम से कैसे इस देश को आजादी दिला सकता है। अल्बर्ट आइंस्टीन की इस बात को जब अफ्रीका की आजादी हुई तो नेल्सन मंडेला ने इस बात को कहा कि मैं ये नहीं जानता था कि महात्मा गांधी कौन है। लेकिन जब

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अल्बर्ट आइंस्टीन की किताब को पढ़ा जिसमें उन्होंने इस बात को लिखा था कि एक व्यक्ति जो बिना वस्त्र के, एक डंडा लेकर, एक ऐसा साम्राज्य जिसका कभी सूर्यास्त नहीं होता था, उसको झुका दिया। ऐसी कौन सी बात उस व्यक्ति के अंदर में है और उसकी बात को पकड़कर आगे चले और अफ्रीका को आजादी दिलाया। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ये मानता हूं कि गांधी जी की हत्या गोडसे की गोली से नहीं हुई थी, एक विचारधारा से हुई थी । यह वह विचारधारा थी जो सोचती थी कि गांधी जी गलत रास्ते पर देश को ले जा रहे हैं लेकिन कालांतर में सब लोगों ने इस बात का एहसास किया कि गांधी जी की जो विचारधारा थी वही लोकतंत्र की सबसे मजबूत विचारधारा थी जिसमें समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति से लेकर बड़े से बड़ा व्यक्ति अपने देश में एक आजादी का जीवन जी सकता है । आज अगर हम गांधी जी पर चर्चा करें तो गांधी जी का जो सबसे बड़ा शस्त्र था कि मैं समझता हूं कि आज हमारे देश में जो आवश्यकता है, उनका सबसे बड़ा शस्त्र था जिसके बारे में स्वयं रविन्द्र नाथ टैगोर जी ने जब महात्मा का दर्जा दिया तब कहा था कि सबसे बड़ा शस्त्र महात्मा गांधी जी के पास है कि वह सहिष्णुता का पालन करते थे । बड़ी से बड़ी चीजों को टॉलरेंस के रास्ते पर चलकर सहन करते थे और अपनी बात को कहते रहते थे लेकिन आज हमारे देश में हम लोग देखते हैं कि सहिष्णु होना बड़ा मुश्किल हो गया है । कोई अपनी बात कहना चाहता है तो कहने में डरता है तो कहीं न कहीं महात्मा गांधी जी की विचारधारा कमजोर हो रही है और टॉलरेंस जो हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति थी उसको अब मजबूत करने की जरूरत है, लोगों को अपने मन की बात कहने का अधिकार देश में खत्म होते जा रहा है उसे दोबारा मजबूती प्रदान करना चाहिए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी ने जो बड़े से बड़े आंदोलन किये उसका एक कारक होता था और वे कहते थे जब अंग्रेज लोगों ने उनसे पूछा कि आज मीटिंग करने आओ, बातचीत करने आओ, अपनी बात रखो तो महात्मा गांधी जी ने कहा कि मैं अपनी कोई भी बात किसी बंद कमरे के अंदर नहीं करूंगा, किसी हाल में, किसी मीटिंग में नहीं करूंगा, मैं एक जलसा करूंगा और जलसा के माध्यम से अपनी बात रखूंगा तब अंग्रेजों ने कहा कि ऐसा क्यों तो महात्मा गांधी जी ने कहा कि मेरा अपना विचार मायने नहीं रखता। लोगों के विचार का जो समागम है इसको आगे चलकर जो कांग्रेस शब्द दिया गया, वह लोगों के विचारों का जो समागम है उन विचारों को मैं अंग्रेजों तक पहुंचाउंगा और रास्ता सविनय अवज्ञा आंदोलन का ही होगा। मैं निवेदन करूंगा पर मेरी बात आपको सुननी पड़ेगी, माननी पड़ेगी । आज जब आप यह चर्चा करवा रहे हैं तो इस दो दिन की चर्चा में इस मंथन से क्या अमृत निकलकर आयेगा ? आज सबसे बड़ी इस बात की जरूरत है कि महात्मा गांधी जी की चर्चा तो हम करते हैं लेकिन किस दिन हम आत्ममंथन करेंगे कि महात्मा गांधी जी जो चाहते थे, जो कहते थे, जो उनकी सोच थी वह आज धरातल पर कहां है, क्यों हम उसको लागू नहीं कर पा रहे हैं ? मैं समझता

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हूं कि बहुत सारा बड़ा विषय है, महात्मा गांधी जी अपने आप में चूंकि लोग कहते थे कि वे नेता थे, महात्मा थे । मैं तो समझता हूं कि महात्मा गांधी अपने आप में एक जीवन था उस जीवन को जिसने समझ लिया, जिसने महात्मा गांधी जी को समझ लिया उसका जीवन तो वैसे ही कृतार्थ हो जाता है । मैंने सार्वजनिक जीवन में काफी समय बिताया लेकिन एक व्यक्ति को देखा जो महात्मा गांधी जी को बहुत करीबी से उनका पालन करने की कोशिश करते थे ।

हमारे मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री दिग्विजय जी के साथ मुझे दो बार वर्धा के पास सेवाग्राम जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जब कभी भी डोंगरगढ़ दर्शन करने आते थे तो उसके बाद सेवाग्राम जाया करते थे, मैं उनके साथ दो बार गया हूं, हम वहां पर दो दिन रूके, सेवाग्राम वर्धा में चरखा चलाते हुए जो लोग हैं उनको जब आप देखेंगे तो आपको लगेगा कि हमारा देश अगर आत्मस्वावलंबन की तरफ जाता है जो महात्मा गांधी की सोच थी, यदि हम बुनकर को मजबूत करते हैं, उस चरखे को मजबूत करते हैं तो कहीं न कहीं हमारे देश में स्वावलंबन की भावना मजबूत होगी लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में बड़ा मुश्किल सा कार्य है, पता नहीं कैसे सरकारें इसको लागू करेंगी ? दूसरा मुद्दा महात्मा गांधी जी की जो ग्राम स्वराज की सोच थी उनका कहना था कि लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब ग्राम पंचायत में रहने वाले लोग, ग्राम सभा के सदस्य अपने विकास के निर्णय, अपनी समस्याओं का निर्णय स्वयं करेंगे और मुझे याद है जब पंचायती राज मध्यप्रदेश में लागू हुआ था तो बहुत सारे नेताओं ने, बहुत सारे बड़े लोगों ने, अधिकारियों ने पंचायती राज का विरोध किया लेकिन दिग्विजय सिंह जी ने उस दिन भी कहा कि आप सेवाग्राम में जाकर ग्राम स्वराज की कल्पना, देखिये कि कैसे ग्राम सभा में निर्णय होते हैं, कैसे बातचीत होती है और मुझे लगता है कि वह उस समय जब लागू हुआ तो कहीं न कहीं राजीव गांधी जी की सोच थी लेकिन मध्यप्रदेश में उसे लागू किया गया, उसके पीछे वह सेवाग्राम की सोच थी कि किस प्रकार से ग्रामीण स्वावलंबन हम ग्राम सभा के माध्यम से करें । आज अगर हम ग्रामसभा को मजबूत करेंगे, गांव के लोग विचार सुनकर आयेंगे तभी जाकर पूरे प्रदेश का विकास हो पायेगा, निश्चित रूप से हर सरकार चाहती है कि महात्मा गांधी के निर्देशों, उनके विचारों का पालन हो । किंतु आज इस बात पर मंथन करने की आवश्यकता है कि महात्मा गांधी की सोच क्या थी और उनकी सोच आज भी कायम है, आज भी मजबूत है । आपने विधान सभा का सत्र बुलाया और मुझे समय दिया, मैं निश्चित रूप से समझता हूं कि शासन अपनी ओर से प्रयास करेगा और महात्मा गांधी की सोच को मजबूत धरातल पर लाने का प्रयास होगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आपका धन्यवाद देवव्रत जी ।

श्री धनेन्द्र साहू (अभनपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का दिन ऐतिहासिक दिन है । मैं आपको और माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं कि आपने गांधी जी की 150वीं जयंती के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अवसर पर 2 दिनों का विशेष सत्र बुलाकर उनके सम्मान में अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया । मैं नमन् करता हूं उस महान् आत्मा को जिसका जन्म दिवस मानाने के लिए हम सब यहां एकत्रित हुए हैं । साथ ही आज ऐतिहासिक दिन इसलिए भी है क्योंकि आज स्व. लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म दिन है । मैं उन्हें भी नमन् करता हूं, वंदन करता हूं । आज हमें इस बात को लेकर बड़ा गर्व होता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी जी के जन्म दिवस को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था और आज पूरा विश्व अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मना रहा है । महात्मा गांधी जी के बारे में सबने पढ़ा है, सबने जाना है, सबने समझा है लेकिन उनकी बहुत सारी विशेषताएं जो बहुत से लोगों के हृदय पटल पर अंकित हो जाती है, उनकी बहुत सारी बातें जिसे हम कभी भुला नहीं पाते । मैं यहां विशेषकर अहिंसा के बारे में उल्लेख करना चाहूंगा । सामान्यत: हम लोग हिंसा का अर्थ इतना ही समझते हैं कि किसी की हत्या करें, किसी को मारें, युद्ध करें । महात्मा गांधी जी ने हिंसा का अर्थ बहुत ही सूक्ष्मता से समझाया । यदि हम किसी को पीड़ा भी देते हैं वह भी हिंसा है । यदि हम किसी की भावना को आहत करते हैं तो वह भी हिंसा है । आज के इस युग में, उस युग में भी जब महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धान्त को मानव जीवन के लिए पूरे विश्व के लिए अनिवार्य माना था । उस समय भी लोगों की मनोवृत्ति थी, हिंसा के ही सहारे सत्ता परिवर्तन की बातें हों, चाहे राज करने की बातें हों या उनके जीवन में व्यवहार की बातें हों, हिंसा सारे लोगों के विचार में समाया हुआ था । आज भी हम सब देखते हैं कि हिंसा का वातावरण बना हुआ है । ऐसे समय में महात्मा गांधी जी की अहिंसा के बारे में यदि पूरे विश्व में शिक्षा दे रहे हैं तो लोगों को अद्भुत बात नजर आती रही कि कैसे हम अहिंसा के बलबूते पर निपट सकेंगे । इतिहास गवाह है आज भारत देश की आजादी उन्होंने अहिंसा के रास्ते पर चलकर हासिल की । यह पूरी दुनिया और इतिहास में एक नयापन आया कि अहिंसा के रास्ते पर चलकर उन्होंने इस देश को आजादी दिलाई । आज से डेढ़ सौ वर्ष ऐसे युगपुरूष का जन्म हुआ था । आज पूरा विश्व राष्ट्रपिता के रूप में, महात्मा के रूप में हमने उन्हें अंगीकार किया । इसी सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर, ऐसे अंग्रेजी साम्राज्य का, उस समय यह माना जाता था कि दुनिया में उनका एकक्षत्र राज होता था । ऐसा कहा जाता था कि उनके अहंकार का सूरज कहीं अस्त नहीं होता था, ऐसे अंग्रेजी साम्राज्य की उन्होंने नींव हिलाई । उनकी एक बात पर देश के करोड़ों लोग मर मिटने को तैयार होते थे । देश की खातिर सेवा के लिए आज करोड़ों लोग उनके साथ रहे । अध्यक्ष महोदय, मैं एक चीज का उल्लेख करना चाहूंगा । भगवान रामचन्द्र जी हम सबकी श्रद्धा, विश्वास एवं भक्ति के केन्द्र बिंदु हैं, भगवान श्री कृष्ण भी हमारे आराध्य के रूप में हैं, जिन्होंने पूरे विश्व को शिक्षा दी है । उनके श्रीमद भागवत गीता के रूप में उनके उपदेश को हम सब अपने जीवन में आत्मसात करते हैं। मैं कहना चाहूंगा कि भगवान श्री रामचन्द्र जी क्षत्रिय ही थे और उन्होंने कितने ही राक्षसों का वध

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किया। कितने ही युद्ध किये। इसी तरह से भगवान श्री कृष्ण ने भी महाभारत युद्ध में यह प्रण किया था कि मैं इस युद्ध में अस्त्र नहीं उठाउंगा। अस्त्र-शस्त्र का उपयोग नहीं करूंगा, लेकिन एक बार ऐसा समय भी आया और विवशत: उन्हें रथ के पहिये के रूप में अस्त्र के रूप में भगवान श्री कृष्ण भी अपनी प्रतिज्ञा पर नहीं टिक सके और उन्हें अस्त्र का उपयोग करना पड़ा था, लेकिन सारी दुनिया में और इतिहास में अकेले महात्मा गांधी जी ऐसे महापुरूष निकले जो अहिंसा के व्रत में कहीं भी एक भी दिन किसी भी घटना में वे नहीं झूके। इस तरह से अहिंसा के पुजारी के रूप में पूरे संसार के इतिहास में वे अमर हुये हैं। आज अंग्रेजी शक्ति को भगाने के लिए उन्होंने माना कि बंदूक की बजाय किसानों का हल सबसे बड़ी ताकत हो सकती है और जब वे दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो लौटने के बाद उन्होंने अपने राजनीतिक गुरू गोपालकृष्ण गोखले जी की सलाह पर पूरा भारत भ्रमण किया। वे किसानों के बीच गये। चाहे वह चम्पारण्य बिहार का नील की खेती करने वाले किसानों के बीच की बातें हों, चाहे नमक सत्याग्रह के रूप में दांडी यात्रा की बातें हों। वे किसान के आंदोलनों के साथ जुड़े और पूरे प्रदेश के करोड़ों किसानों का उन्होंने विश्वास जीता और यही मैं समझता हूं कि आजादी के आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत थी कि चाहे वह कोई भी प्रांत हो और हर वर्ग चाहे किसान हो, गरीब हो, मजदूर हो, व्यवसायी हो, सभी वर्ग के लोगों का उन्होंने विश्वास अर्जित किया तो आज उन्होंने इस आंदोलन को जोकि अहिंसात्मक आंदोलन था, सत्याग्रह का आंदोलन था, उसे उन्हें इस अंजाम तक पहुंचाया कि अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा है। सत्य के बारे में भी उनका सत्य सिर्फ असत्य का आचरण न करें, यह सत्य नहीं था। सत्य भी उनकी दृष्टिकोण से व्यापक सत्य था और उन्होंने यह भी कहा कि सत्य ही ईश्वर है। उन्होंने स्वयं सत्य का पालन किया। उपदेश देना साधारण बातें हो सकती हैं, लेकिन उस पर चलना साधारण बात नहीं है। महात्मा गांधी जी की आत्मकथाओं को यदि हम लोग पढ़ते हैं तो उसमें ऐसे-ऐसे घटनाओं का उल्लेख होता है कि एक साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता। कोई देव पुरूष ही इस तरह से अपने जीवन के सत्यों का उद्धरण कर सकता है। आज हम सब लोगों को गौरव होता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इन बातों का और उल्लेख करना चाहूंगा कि जब उनका छत्तीसगढ़ आगमन हुआ, चाहे नहर सत्याग्रह के रूप में कंडेल की बातें हों या पंडित सुंदरलाल शर्मा जिन्हें हम छत्तीसगढ़ के गांधी के रूप में जानते हैं। छत्तीसगढ़ में भी जिस तरह से उनका आगमन हुआ और उनके संस्कार से संस्कारित हैं। स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में जो हिस्सा या भाग यहां के स्वतंत्रता सेनानियों ने लिया और महात्मा गांधी जी का काफी गहरा असर उन पर स्वतंत्रता आंदोलन में उनके आगमन के कारण पड़ा था। मेरे भी निर्वाचन क्षेत्र के नवापारा में जब वे सुंदरलाल शर्मा जी के यहां गये तो राजिम के नवापारा में भी एक सभा हुई थी और आज भी हम सब लोग उनको स्मरण करके काफी अधिक ऊर्जा उनसे हम लोग प्राप्त करते हैं। आज हम सब लोगों को यह गौरव होता है कि आज वर्तमान में हमारी छत्तीसगढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की सरकार ने जिस दिशा में महात्मा गांधी जी की ग्राम स्वराज की जो कल्पना थी, उसके आधार पर यहां के लोगों की तरक्की और विकास व उन्नति के लिए जिस तरह से आज भी जिन योजनओं को लांच किया है और साथ ही यहां की खेती समृद्ध हो, किसान समृद्ध हो, किसानों को लाभ मिले, उसमें चाहे उचित समर्थन मूल्य 2500 रूपये की बातें हों, चाहे किसानों के कर्जामाफी की बातें हों, चाहे सिंचाई नहर की बातें हों, ये किसानों को और गांव को मजबूत करने की दिशा में आज हमारी सरकार कदम आगे बढ़ायी है और आज भी आवश्यकता है कि महात्मा गांधी जी के विचारों के अनुरूप हम लोग अपने ग्राम स्वराज की दिशा में आगे बढ़े। आज सारी दुनिया उनकी अर्थनीति को मान रहा है। आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक है और सारे लोग इस बात को महसूस कर रहे हैं कि आज यदि हमारी कोई भी आर्थिक नीति सफल हो सकती है तो हमारे महात्मा गांधी जी के द्वारा बताये गये जो ग्राम स्वराज की जो आर्थिक नीति है और उसे आज सारा विश्व अंगीकार कर रहा है और उस दिशा में हमें छत्तीसगढ़ में और भी आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं और अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री केशव चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको सबसे पहले धन्यवाद, माननीय मुख्यमंत्री जी और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी को धन्यवाद। एक ऐसे महापुरूष, जिनके कारण हम आज यहां स्वतन्त्र भारत के नागरिक कहला रहे हैं, उनके 150वीं जयंती के अवसर पर इस विधान सभा में उनको याद करने के लिए, उनके किए गए कार्यों से प्रेरणा लेने के लिए इस दो दिन का विशेष सत्र का आयोजन किया गया है, मैं उसके लिए सबसे पहले धन्यवाद देता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, 150वीं जयंती के इस अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और देश के पूर्व प्रधानमंत्री शास्त्री जी को सत्-सत् नमन भी करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी ऐसा व्यक्ति या समाज चाहते थे, जो मौजूदा शोषण आधारित व्यवस्था को समाप्त कर उसे समानता तथा एक वर्ग पर दूसरे के हावी होने की प्रवृत्ति से मुक्त करायें, यह उनकी सोच थी। सब में समानता हो, सबको अधिकार मिले, सबको न्याय मिले, सबको अवसर मिले और यही सोच इस देश को आजाद कराने के लिए संभवत: उनको प्रेरित किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उनके केवल सत्य और अहिंसा नहीं था, बल्कि मैं तो यह सोचता हूँ कि अगर सत्य और अहिंसा से बढ़कर उनके पास कोई चीज थी, तो वह था विश्वास। अभी तक जितने भी क्रान्ति हुए हैं, अगर पूरे विश्व में नजर डाले तो जितने भी क्रान्ति हुए हैं, वे हिंसक हुए हैं। लेकिन एक ऐसा क्रान्ति था, महात्मा गांधी जी का एक ऐसा आंदोलन था, जो अहिंसा पर आधारित था। आप उनका पूरा इतिहास देख लीजिये। कई क्षण और अवसर आए, जिसमें अगर उनके आंदोलन में कहीं भी हिंसा दिखी तो उन्होंने उस आंदोलन को वहीं समाप्त कर दिया, उसको आगे नहीं बढ़ाया। मतलब पहले

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उनका विचार था कि हम सकारात्मक पहलू पर, अहिंसात्मक ढंग से किसी चीज का विरोध करें या किसी चीज को पाने के लिए प्रयास करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह 2 दिन का समय है। चाहे सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष हों, हम लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण समय है। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि हमको आरोप-प्रत्यारोप लगाने के बजाय अपने आप में आत्मचिंतन करना चाहिए कि हम कहां हैं ? हम जिस विचारधारा की बात कर रहे हैं, जिस व्यक्ति की बात कर रहे हैं, हम उनको कहां तक मान रहे हैं, हम उनके विचारों को कहां तक लेकर जा रहे हैं। केवल एक राजनीतिक सोच नहीं होनी चाहिए कि महात्मा बांधी जी को याद करेंगे तो हो सकता है कि हमको लोग पसंद करके वोट देंगे। बल्कि महात्मा गांधी जीके उस विचार, उस संघर्ष को उन्होंने जीवन भर तमाम सुख-सुविधाएं न्यौछावर कर केवल देश के लोगों के लिए जीया, हम उसको कहां तक लेकर जायें। अगर हम सब लोग यह सोच लेकर 2 दिन तक चिंतन करें, उनके विचार को आत्मसात करें, तो निश्चित रूप से केवल छत्तीसगढ़ नहीं, बल्कि यह भारत वर्ष प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी की सोच ग्राम स्वराज की तरफ थी। जब भारत के संविधान का प्रारूप तैयार हुआ और महात्मा गांधी जी के पास लेकर गये और उन्होंने जब संविधान प्रारूप को देखा तो उन्होंने कहा कि जिस संविधान में गांव का जिक्र नहीं है, वह संविधान संभवत: पूर्ण नहीं है क्योंकि अगर गांवों का विकास नहीं होता है तो देश का विकास अधूरा रहेगा और इसी कारण बाद में धारा 40 के रूप में गांव के विकास या गांव की बात भारत के संविधान में जोड़ी गई थी ।

समय :
6:00 बजे

अध्यक्ष महोदय, अनेक पहलु, अनेक क्षण ऐसे आए, जो दो दिन का विशेष सत्र बुलाया गया था तो हमको यह कहा गया था कि इसमें कोई आलोचना नहीं होगी, कोई आरोप-प्रत्यारोप की बात नहीं होगी, लेकिन मैं आज सुबह से देख रहा हूं कि जहां पहले उद्बोधन की शुरूआत हुई, वहीं से आरोप-प्रत्यारोप की शुरूआत हो गई और आरोप किसके ऊपर ? आप इधर आरोप लगा रहे हैं, आप इधर आरोप लगा रहे हैं और बोल भी रहे हैं कि मैं गांधी वादी हूं, गांधी वादी के सत्य के मार्ग पर चल रहा हूं, अहिंसा के रास्ते को अपना रहा हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर गांधी जी का जो त्याग था, इस देश को चाहे आजाद कराने में, चाहे देश की सामाजिक समरसता को विकसित करने में, देश की गरीबी को मिटाने में हम उनसे प्रेरणा लेकर काम करें तो निश्चित रूप से हमारा छत्तीसगढ़ और यह देश बहुत आगे जाएगा। इस अवसर पर मैं भी माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा, मुख्यमंत्री जी तो सदन में नहीं हैं । अगर वास्तव में गांधी जी के विचार को आत्मसात कर रहे हैं तो अभी कुछ साथियों ने कहा कि आपने 15 साल क्या किया, आपने 15 साल क्या किया ? इन प्रश्नों पर जाएंगे तो आप तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कुछ नहीं कर पाएंगे । माननीय मंत्री जी, आपने स्टेटमेंट दिया है कि ज्यादा में बिक रहा है । ये बड़े दुर्भाग्य की बात है कि शराब बेच भी रहे हो, उसमें भी ज्यादा पैसे में बेच रहे हो । तो कम से कम इनको हम मान लें, आज गांधी जी पर केवल मैं यह कहूंगा कि आज गांधी जयंती है तो गांधी जी को याद करने के लिए हमने एक दिन शराब दुकान बंद की और कल गांधी जी के आंख को बंद करके पुन: 11 बजे से शराब दुकान खोल देंगे। ये हमारी नैतिकता नहीं होनी चाहिए, बल्कि आज सरकार संकल्प ले कि महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती पर उस महापुरूष को याद करने के लिए जिनके कारण हमको स्वतंत्रता मिली, जिसके बलिदान के कारण हम आज भारत के नागरिक कहला रहे हैं, पूर्ण शराब बंदी की घोषणा इस सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी को करनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद । सभा की कार्यवाही 6:15 बजे तक के लिए बढ़ाई जाती है । मैं समझता हूं कि सदन इससे सहमत होगा।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

अध्यक्ष महोदय :- अंतिम भाषण सत्यनारायण जी शर्मा प्रस्तुत करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपके सभी आदेश से सहमत हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, कल बोलेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय शिवकुमार जी डहरिया ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- नहीं, नहीं । कल ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बोलो न, बीच-बीच में बहुत खड़े हो जाते हो।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी, आप शुरू करिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये बात सिद्ध हो गई कि आपने माननीय सत्यनारायण शर्मा जी को बोलने के लिए आमंत्रित किया, माननीय शिव डहरिया जी को आमंत्रित किया । गांधी दर्शन के बारे में इनको कोई जानकारी नहीं है । खाली बीच में बक-बक करना इनकी आदत है । अगर गांधी जी की विचारधारा को मानते तो आज बोलने के लिए खड़े होते ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- हम लोग गांधी जी को मानने वाले लोग हैं, आप लोग गोड़से को मानने वाले लोग हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, प्रदेश के संस्कृति मंत्री का गांधी दर्शन का भाषण सुनूंगा । प्रदेश के संस्कृति मंत्री का भाषण सुनूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- गागार में सागर की तरह भाषण देंगे ।

खाद्यमंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आपको विशेष रूप से धन्यवाद देते हैं कि आपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती पर दो दिनों का विशेष सत्र रखा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जो किताब देख रहे हो, उसको हम लोगों ने पढ़ लिया है । जब गांधी दर्शन पर जीते हो तो देखकर पढ़ने की क्या जरूरत है, वह किताब तो सबके पास है ।

डा. शिवकुमार डहरिया :- आप सुनने की आदत डालो ।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, अभी सुन तो लीजिए, अभी तो शुरू हुआ है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- जो भी बोलो, दिल से बोलो । किताब को बंद कर दो और दिल से बोलो, बस इतना सा है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, माननीय सदस्य बिना कागज देखे पढ़ रहे थे । हम लोगों ने देखा है ।

अध्यक्ष महोदय :- समय कम है, उनको बोलने दीजिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बात समझ नहीं रहे हैं । मैं निचोड़ बता देता हूँ । यह चाहे रहे है कि 2 अक्टूबर को गांधी जी पैदा हुये यह मत बताईये, आप गांधी से प्रेरणा लेकर कैसा जीवन जीते हो, कितने बजे क्या करते हो, यह सब बताईये, यह बोल रहे हैं ?

श्री कवासी लखमा :- जूता पहनने वाला दंतेवाड़ा में मिल जाता है । दाढ़ी बनाने वाला, कपड़ा धोने वाला ।

श्री बृहस्पत सिंह :- लखमा जी, लगता है कि आपके विभाग का ज्यादा असर हो रहा है ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- गांधी जी के जो तीन आदर्श थे, विचार थे, उसके बारे में डिटेल्स बताईयेगा ? हम लोग सुनेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हर किसी के जो पुत्र होते हैं, दो प्रकार के होते हैं । एक सुपुत्र होता है, दूसरा कुपुत्र होता है । मैं सुपुत्रों के बारे में बात करूंगा ।

श्री केशव चन्द्रा :- किसी के यदि कुपुत्र हो गये या सुपुत्र हो गये तो कैसे करेंगे ?

श्री अमरजीत भगत :- उसके बारे में बताता हूँ ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अपनी बात बोलो ना ?

श्री अमरजीत भगत :- सत्य, अहिंसा और प्रेम, इसको अगर हिन्दुस्तान में किसी ने स्थापित किया तो बापू ने किया । हम लोग उनके 150 वीं जयंती पर चर्चा करने के लिए, श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुये हैं । विशेष रूप से आपको धन्यवाद इसलिए कि दो दिवस का विशेष सत्र आहूत किया । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात की शुरूआत यहां से करूंगा -

कुछ लोंगों की दूरी खुशबू देती है
कुछ लोगों का पास महकता है

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कुछ लोगों की एक जरा सी दस्तक से
सदियों तक इतिहास महकता है

अध्यक्ष जी, गांधी जी केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक संस्कार थे । एक विचार थे, जिन्होंने केवल हिन्दुस्तान ही नहीं, बल्कि विश्व में अपनी ख्याति बढ़ाया और पूरा विश्व इस बात को मानता है । उनके आदर्शों पर, उनके बताये हुये रास्तों पर, यदि हम लोग चलेंगे, निश्चित रूप से, हिन्दुस्तान में जिस प्रकार से अलगाववाद सिर उठाने की कोशिश कर रहा है, उसका हम माकूल जवाब दे पायेंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, आजादी का स्वप्न संजोना सब के बस की बात नहीं है । अपने सब रिश्तों को खोना, सब के बस की बात नहीं है । सत्य, अहिंसा की बातें तो कोई भी कर सकता है, देश के खातिर गांधी होना, सब के बस की बात नहीं । (मेंजों की थपथपाहट)

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बांधी तुम क्या जानोगे, कैसे थे गांधी ?

श्री धर्मजीत सिंह :- ये बांधी है भईया, गांधी थोड़े हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- गांधी जी के संपूर्ण जीवन को तीन भागों में बांटकर चर्चा करें, एक उनका शिक्षा-दीक्षा, शैक्षणिक कार्यकाल, जो यहां से लेकर इंग्लैण्ड तक उन्होंने शिक्षा ग्रहण की । उन्होंने बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की । अच्छे बैरिस्टर के रूप में उनका नाम आने लगा । यहां से जब साऊथ अफ्रीका गये, तो साऊथ अफ्रीका में भी उन्होंने न्यायालयीन कार्य के साथ, अपने पेशे के साथ वहां पर यहां के जो लोग बसे हुए थे उनके अनुयायी के रूप में एक पहचान बनाई और जिनको भी दिक्कत परेशानी रहती थी गांधी जी का दरवाजा हमेशा उनके लिए खुला रहता था और धीरे-धीरे उनकी पहचान एक मसीहा के रूप में बनी। गांधी जी को कहीं भ्रम भी था, दुविधा में थे क्योंकि गांधी जी अंग्रेजों को कई मायने में न्यायप्रिय मानते थे और इस वजह से कई मौकों में ऐसा लगता था कि गांधी जी उनकी तरफदारी कर रहे हैं लेकिन उनका वहम उस दिन टूटा जब वह रेल में यात्रा कर रहे थे, उनका रिजर्वेशन था और आरक्षण होने के बावजूद अंग्रेज उनके सामान को ट्रेन से बाहर फेंक दिये, उनको ट्रेन से निकाल दिये, उतार दिये। उनके साथ बदसलूकी किए। उसी दिन गांधी जी ने ठान लिया था कि तुमने हमको ट्रेन से भगाया है, हम तुमको हिन्दुस्तान से भगाकर दिखायेंगे और गांधी जी ने इसे करके दिखाया। जब भारत वापस आये, स्वाधीनता आंदोलन के लिए मन बनाया तो उनके राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले जी से मिलने, उनसे परामर्श लेने गये कि माननीय गुरू जी हमको इसमें मार्गदर्शन दीजिए कि हम इस गुलाम भारत को आजाद कराना चाहते हैं, स्वाधीनता का आंदोलन चलाना चाहते हैं और इसमें आपके आशीर्वाद और मार्गदर्शन की जरूरत है तो उस समय गोखले जी ने उनको कहा था कि गांधी अगर तुम स्वाधीनता आंदोलन चलाना चाहते हो तो एक बार भारत दर्शन करके आओ, पूरे भारत को घूमकर आओ और भारत घूमकर आने के बाद हमसे बात करना, फिर इस विषय में चर्चा करेंगे। जब वह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

भारत भ्रमण के लिए निकले।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक चीज सुन लो, एक चीज अनुसरण करियेगा कि भारत भ्रमण के लिए जब उन्होने कहा तो उन्होंने कहा कि कान खुली रखना और मुंह बंद रखना।

श्री अमरजीत भगत :- लेकिन आपका व्यवहार तो बिल्कुल उल्टा है।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- उन्होंने कहा था कि बुरा मत देखो, बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो। पर आप लोग सब वैसा ही करते हैं बुरा कहते हैं, बुरा देखते हैं बुरा सुनते हैं।

श्री कुलदीप जुनेजा :- अब देखो, आप कान बंद रखे हो।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी जब भारत भ्रमण के लिए निकले तो इतनी विभिन्नता, इतने सारे प्राब्लम्स, कहीं उँच-नीच की प्राब्लम, कहीं भाषा की प्राब्लम, कहीं क्षेत्रवाद तो कहीं कुछ। गांधी जी का दिमाग चकरा गया, बोले कि इतनी सारी विभिन्नताओं को एक साथ लेकर स्वाधीनता आंदोलन कैसे चलाया जा सकता है। जब गोखले जी से इस विषय में चर्चा हुई तो गोखले जी ने उनको परामर्श दिया कि इन सबको एकता के सूत्र में आपको पिरोना है। जहां ऊंच-नीच, छुआछूत, जहां अस्पृश्यतों को मंदिर में प्रवेश निषेध, इतनी सारी विभिन्नताओं के बीच गांधी जी ने जब काम शुरू किया तो उन्होंने उन सबके बीच जाकर अपनेपन का अहसास जगाया, उनको विश्वास दिलाया कि हम आपके हैं, जिनको नीच कहते थे, जिनके साथ छुआछूत होता था, भेदभाव होता था, उनको गले गलाया, अछूतों को मंदिर में प्रवेश दिलाया और उन जगहों में गये जहां पर मैला उठाने वाले लोगों के साथ, मैला उठाया। गांधी जी ने....।

अध्यक्ष महोदय :- और कितने मिनट लेंगे ?

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष जी, थोड़ा सा लंबा लगेगा। अभी तो शुरू ही किया हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप जल्दी खत्म करिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, इनका भाषण जारी रखा जाये। कल भी बोलेंगे। क्योंकि अजय चंद्राकर जी से थोड़ा ज्यादा ही बोलेंगे।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, ठीक है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, सभा की कार्यवाही समाप्त।

श्री अमरजीत भगत :- ठीक है।

(माननीय मंत्री जी का भाषण जारी रहेगा)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही गुरूवार दिनांक 03 अक्टूबर 2019 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(सायं 06 बजकर 16 मिनट पर विधानसभा की कार्यवाही गुरूवार, दिनांक 03 अक्टूबर, 2019 (आश्विन 10, 1941) के पूर्वाह्न 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित की गई।)

चन्द्रशेखर गंगराड़े

रायपुर (छत्तीसगढ़) **सचिव**

दिनांक : 02 अक्टूबर, 2019 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं